जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है !

शुध्द चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किये जातें है!

(पांडुशिला, सिंघासन , छत्र , चंवर प्रातिहार्य , जापमाला , मंगल कलश, पूजा बर्तन चंदोवा, तोरण, झारी)

नोट :- हमारे यहाँ घरो मे उपयोग हेतु , साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानो मे उपयोग हेतु शुध्द देशी घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है !

Contact:-
Sourabh Sagar Indore
9993602663
7722983010
sourabhjn1989@gmail.com

जैन

जयजिनेन्द्र

गाय का शुद्ध देशी घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानो को ध्यान में
रख कर बनाया गया शुद्ध देशी घी

घी ऐसा के दिल जीत जाये !

अब 1kg की पैकिंग में भी उपलब्ध

संपर्क सूत्र

Contact For Order

Sourabh Sagar Indore

Call & Whatsapp:

9993602663,7722983010

All India Home Delivery

श्री जिनसेनाचार्य विचरित

श्रीमद् भगवद् जिनसहस्त्रनाम विधान

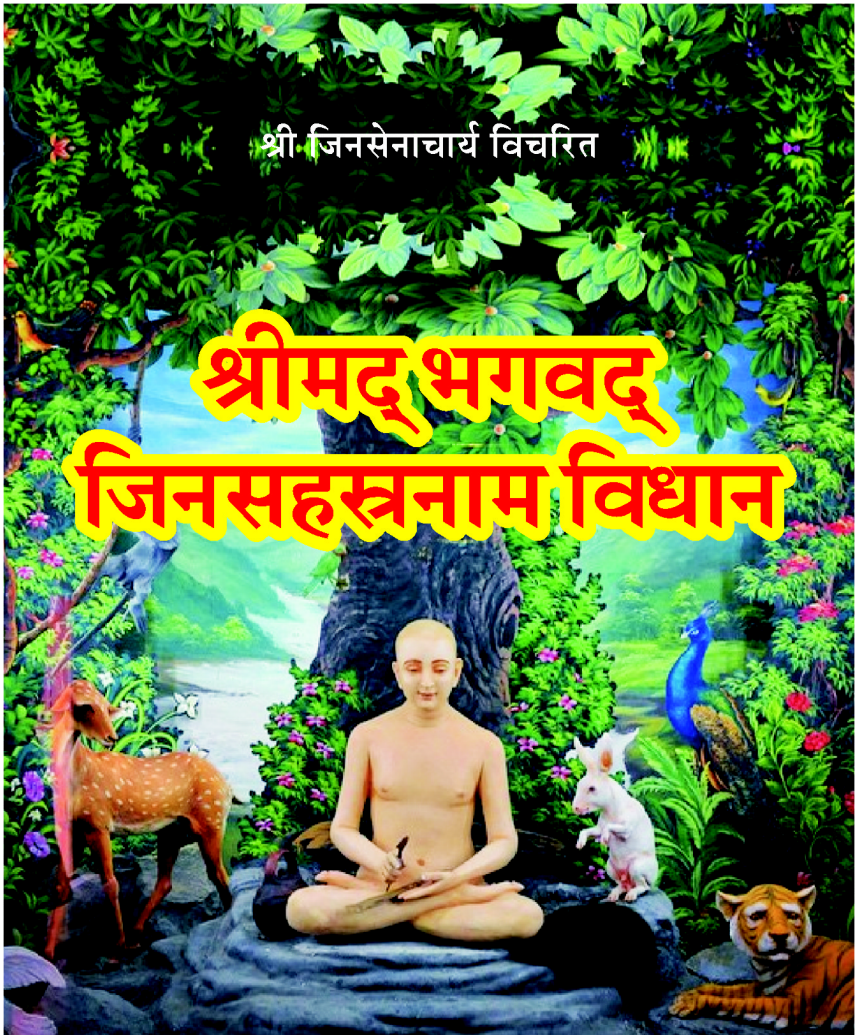

आशीष प्रदाता

परम पूज्य स्थविराचार्य 108 श्री संभव सागरजी गुरुदेव

संकलनकर्त्री

बा० ब्र० चेलना (योग निपूण)

पूजा एवं मंत्र जाप

ज्ञानोदय छंद

अनंत ज्ञान बल दर्श सुखामृत, का प्रतिक्षण रसपान करें,
समवशरण में सुरनर सेवित, ऋषि गणधर भी प्रणाम करें।।
ध्यान अग्नि में कर्मनाश, अरहंत परम पद पाया है,
पंच कल्याण महोत्सव के, वैभव को जिसने पाया है।।
अगम अपार है महिमा उनकी, भक्त भी भगवत्ता पाते,
गणधर इन्द्र भी स्तुति करके, गुण अनंत नहिं गा पाते,
गणधर इन्द्र भी स्तुति करके, गुण अनंत नहिं गा पाते।।
हे प्रभु! बुद्धिहीन हूँ फिर भी, भक्ति का मम भाव प्रबल,
सहस्त्रनाम की पूजा करता, मन में रखता चरण कमल।।

समवशरण में राजते, वीतराग अरिहंत।
मंत्र जाप पूजा करूँ, पाने पद अरिहंत।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादिअष्टोत्तर-सहस्त्रनाम-धराऽर्हत्-परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादि-अष्टोत्तर-सहस्त्रनाम-धराऽर्हत्-परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादि-अष्टोत्तर-सहस्त्रनाम-धराऽर्हत्-परमेष्ठिन्! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक

जनम मरण को हरने की प्रभु पूजा में ही शक्ति हे,
निर्मल जल भेंट चढ़ाता हूँ, चरणों में अर्पित भक्ति है।
एक हजार आठ नामों से जिनवर का गुणगान करूँ,
सकल मनोरथ सिद्धीप्रद' को बारंबार प्रणाम करूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादि-अष्टोत्तर-सहस्त्रनाम-धराऽर्हत्-परमेष्ठिने नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जग संताप नशाने वाली प्रभु चरणों की पूजा हैं,
शीतल चंदन भेंट करूँ प्रभु मेरा कोई न दूजा है।। एक हजार०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादि-अष्टोत्तर-सहस्त्रनाम-धराऽर्हत्-परमेष्ठिने नमः भवाताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् भक्ति भाव से भविजन, अक्षय पद का वरण करें।
अक्षय अक्षत भेंट करें हम, चरण कमल में नमन करें।। एक हजार०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादि-अष्टोत्तर-सहस्त्रनाम-धराऽर्हत्-परमेष्ठिने नमः अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र के पद की पूजा काम वासना नाश करें।
सुमन सुगंधित अर्पण कर हम आत्मगुणों को प्राप्त करें।। एक हजार०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादि-अष्टोत्तर-सहस्त्रनाम-धराऽर्हत्-परमेष्ठिने नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि जनम की भूख मिटाने, में समर्थ प्रभु भक्ति है,
चरणों में नैवेद्य चढ़ाऊँ, क्षुधा से पाना मुक्ति है।। एक हजार०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादि-अष्टोत्तर-सहस्त्रनाम-धराऽर्हत्-परमेष्ठिने नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के मुखमंडल की आभा, मोहतिमिर का नाश करे।
मणिमय दीप से आरति करके, हम सम्यक्त्व प्रकाश वरें।। एक हजार०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादि-अष्टोत्तर-सहस्त्रनाम-धराऽर्हत्-परमेष्ठिने नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि से कर्म नष्ट कर, आत्मगुणों का वरण किया।
धूप अग्नि में अर्पण करता, कर्मनाश को शरण लिया।। एक हजार०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादि-अष्टोत्तर-सहस्त्रनाम-धराऽर्हत्-परमेष्ठिने नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अविनाशी अविकार परमपद सिद्धचक्र को नमन करूँ,
श्रेष्ठफलों की भेंट चढ़ाऊँ, मुक्तिरमा का वरण करूँ।। एक हजार०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादि-अष्टोत्तर-सहस्त्रनाम-धराऽर्हत्-परमेष्ठिने नमः मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलगंधादिक अष्ट द्रव्य से प्रभु चरणों का अर्चन है,
अनर्घपद धारी प्रभुवर को, मम सर्वस्व समर्पण है।। एक हजार०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादि-अष्टोत्तर-सहस्त्रनाम-धराऽर्हत्-परमेष्ठिने नमः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री अर्हंत जगत हितकारी, समवशरण की महिमा न्यारी।
अठदश दोष रहित जगतारी, छियालिस मूलगुणों के धारी।।१।।
राग द्वेष क्षुत तृष भय शोका, चिंता मोह अरति रति स्वेदा।
जन्म जरा मृत्यु न रोग हो, मद विस्मय निद्रा न दोष हों।।२।।
दर्शन ज्ञान वीर्य सुख नंता, घाति नाश प्रकटे भगवंता।
वृक्ष अशोक पुष्प की वर्षा, मंडल दिव्यध्वनि मन हर्षा।।३।।
छत्र चमर दुंदुभि सिंहासन, प्रतिहार्य केवल्य विभासन।
स्वेद मूत्र मल जिनके न हो, सुन्दर रूप सुगंधित तन हो।।४।।
सम चतुरस्र संहनन शुभ हो, क्षीर रूधिर लक्षण अठशत हो।
अमित शक्ति प्रिय हित वच धारीं, जन्म महोत्सव शोभा न्यारी।।५।।
गमनाकाश सुभिक्ष अहिंसा, नहिं उपसर्ग न छाया केशा।
चहुँ मुख राजे अर्हत् स्वामी, थिर नयना आहार विरामी।।६।।
जगहित अर्धमागधी भाषा, मंदवायु निर्मल आकाशा।
जल से शोभे कूप सरोवर, सब ऋतु फल शोभित हैं तरूवर।।७।।
जगमैत्री दर्पण सम सृष्टि, स्वर्ग कमल गंधोदक वृष्टि।
रोग शोक बाधानश जाये, रजकण रहित धरा हो जाये।।८।।
वृक्ष फलों युत जन अनंदा, धर्मचक्र देवों ने वंदा।
शत् इन्द्रों से वंदित देवा, देव सदा करते हैं सेवा।।९।।
जो अरहंत गुणों को जाने पर्यय द्रव्य सदा पहचाने।।
उसमें आतम ज्ञान प्रकट हो, रत्नत्रय से मोक्ष निकट हो।।१०।।

दोहा

क्षणभंगुर जग, जानकर, 'वैराग्य' हुआ भगवंत।
आत्म 'गुणों' को प्राप्त कर, पाया पद अरहंत।
वीतराग अरहंत को, नित प्रति ध्याते सन्त।
श्रद्धा भक्ति नमन करुँ, पाऊँ सौख्य अनन्त।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमदादि अष्टोत्तर सहस्त्रनामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमः अनर्घ पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्त्रनाम विधान

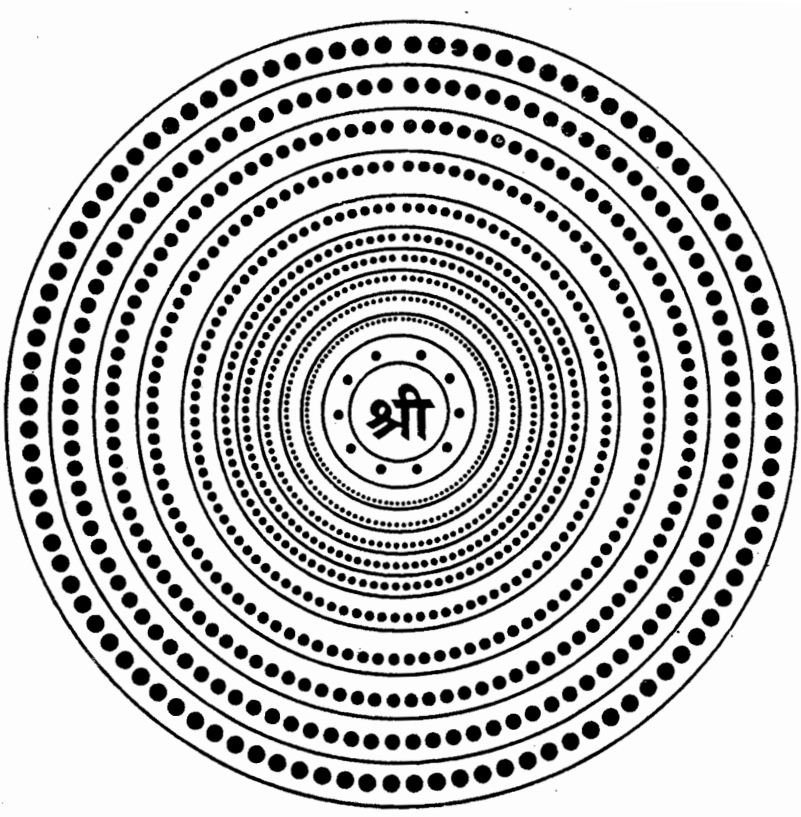

कमल कर्णिका मध्य समुच्चय पूजा

स्थापना (नरेन्द्र छन्द)

जम्बू धातकि पुष्कर अर्द्धा, ढाई द्वीप कहाता ।
तिनमें शत-इक सत्तर क्षेत्रा, तीर्थंकर गुण गाता ।।
सहस आठ उत्तर शुभ नामा, पूजें इन्द्र सुहाना ।
आह्वानन करता हूँ तिष्ठो, उर आओ भगवाना ।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्टोत्तर नामांकित सर्व जिनेन्द्र समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं सहस्राष्टोत्तर नामांकित सर्व जिनेन्द्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सहस्राष्टोत्तर नामांकित सर्व जिनेन्द्र समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (नराच—जरजर जगु १६मात्रा)

सुनीर क्षीर सागरा, सु लाय रत्न झारि में ।
जिनिन्द के जु पाद डार, धार तीन वारि के ।।
जिनेश विघ्न नाशका, सु पूजता हूँ चावसौं ।
सहस्र आठ नाम जाप, मुक्तिदायका अहो ।।१।।

ॐ ह्रीं सहस्र-अष्टोत्तर नामांकित सर्वजिनेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

वना सु चन्दना कु जाय, लाय शुद्ध चन्दना ।
कपूर केशरा मिलाय, घीस घीस मोठिया ।।
जिनेन्द्र पादपद्म में, चढाव भक्ति भावसौं ।
सहस्र आठ नाम जाप, मुक्तिदायका अहो ।।२।।

ॐ ह्रीं सहस्र-अष्टोत्तर नामांकित सर्वजिनेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनेन्द्र ज्ञान पूर्णता, न खंडिता न मंडिता।
अखण्ड तन्दुला सु धोय, उत्तमा सुगन्धिता।।
जिनेन्द्र पाद अग्र में, चढाव भक्ति भावसौं।
सहस्त्र आठ नाम जाप, मुक्तिदायका अहो।।३।।

ॐ ह्रीं सहस्त्र-अष्टोत्तर नामांकित सर्वजिनेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुशील के अगार हो जु, कामबाण नाश हो।
जिनेश पाद अर्चते, विनाश वासना अहो।।
सुसुन्दरा गुलाब लाय, मोगरा चढ़ाय हो।
सहस्त्र आठ नाम जाप, मुक्तिदायका अहो।।४।।

ॐ ह्रीं सहस्त्र-अष्टोत्तर नामांकित सर्वजिनेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण थाल में सजाय, मिष्ट घेवरा बना।
जिनेन्द्र पाद में चढ़ाव, नाश हो क्षुधा महा।।
क्षुधाकु वेदनी नशे, न भूख हो न प्यास हो।
सहस्त्र आठ नाम जाप, मुक्तिदायका अहो।।५।।

ॐ ह्रीं सहस्त्र-अष्टोत्तर नामांकित सर्वजिनेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरत्नदीप लायके, कपूर वातिका करूं।
महाजु मोह अन्ध नाश, जोति केवला वरूं।।
जिनिन्द बोधि दान दो, सुबोधि का प्रकाश हो।
सहस्त्र आठ नाम जाप, मुक्तिदायका अहो।।६।।

ॐ ह्रीं सहस्त्र-अष्टोत्तर नामांकित सर्वजिनेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांग धूप गन्धिता, मनोहरा सुवासिता।
सु अग्नि मांहि खेवता, उड़े सु कर्म धूम्रसा।।
दु अष्ट कर्म नाशने, जिनेश पूज चावसों।
सहस्त्र आठ नाम जाप, मुक्तिदायका अहो।।७।।

ॐ ह्रीं सहस्त्र-अष्टोत्तर नामांकित सर्वजिनेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनार सेव श्रीफला, सु खारका लिया भला।
जिनेश अग्र में चढ़ाय, मुक्ति भावना किया।।
महासुमोक्षदायका, जिनेश अर्चना करो।
सहस्त्र आठ नाम जाप, मुक्तिदायका अहो।।८।।

ॐ ह्रीं सहस्त्र-अष्टोत्तर नामांकित सर्वजिनेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुनीर चन्दनादि पुष्प, अक्षता चढ़ाइये।
अनर्घ प्राप्त हेत देव, वीतराग सेईये।।
जिनेश विघ्न नाशका, पूजता हूँ अर्घ सौ।
सहस्त्र आठ नाम जाप, मुक्तिदायका अहो।।९।।

ॐ ह्रीं सहस्त्र-अष्टोत्तर नामांकित सर्वजिनेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

एक शतक सत्तर जिना, तिहुं जग शान्तीदाय।
शान्तीधारा मैं करूं, मन में अति हरषाय।।

शान्तये शान्तिधारा

सुरभित होय दशों दिशा, चम्पा जुही गुलाब।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करूँ, मन में अतिं हरषाय।।

पुष्पाञ्जलिं

जयमाला

दोहा

तीर्थंकरा तीर्थंकरा, गुण अनन्त के धार।
नमूं नमूं तिरकाल मैं, बसो सदा उर आय।।

(तर्ज : हे दीनबन्धु)

जै तीन लोक में जु मध्य लोक कहाता।
जै मनुज लोक दीप ढ़ाई एक प्रधाना।।
जै प्रथम द्वीप जम्बू में ईरावता भरता।
है क्षेत्र विदेहा सदा है काल चतुर्था।।१।।
जै दोय विदेहा कहे भरता इरावता।
जै धातकी व पुष्करार्द्ध में ये शासता।।
जै कर्मभूमि पन्द्रहों तीर्थंकरा होते।
जै एक शतक साठ विदेहा सुशोभते।।२।।
जै पांच पांच भरत रू इरावता कहे।
जै एक शतक सत्तरा तीर्थंकरा होते।।
जै एक सहस आठ लक्षणा सु धारते।
जै तीन लोक में अनूप रूप भासते।।३।।
जै कमल, शंख स्वस्तिका जु मीन लक्षणा।
जै सर्व हैं शुभा महा जु पुण्य का घना।।
जै तीर्थंकरा तीर्थ की प्रभावना करें।
जै वीतराग धर्म की अराधना करें।।४।।
जै इन्द्र आय भक्ति गाय सहस नाम से।
जै नृत्य आनन्द करें भर उछाह से।।
जै सहस आठ नयन धार दर्शना करें।
न तृप्ति पाय बार-बार मुखावलोक के।।५।।

मैं तीन काल बार-बार वन्दना करूं।
बस वीतराग शुद्ध भाव भावना करूं।।
मम रोम-रोम में बसो, जिनदेव हमारे।
जब लौं न कर्म भस्म हो शिवधाम पधारें।।६।।

धत्ता

जय-जय सु जिनिन्दा, आनन्द कन्दा, पाप विखण्डा सुखकारी।
मम पाप विनाशो, भव दुख नाशो, सौख्य प्रकाशो गुणधारी।।७

ॐ ह्रीं सहस्र-अष्टोत्तर नामांकित सर्वजिनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

●

अथ प्रथम कोष्ठ
श्रीमदादिशतक पूजा

स्थापना

(शंभु छन्द मात्रा ३२)

श्रीमत् आदि नाम शत धारक, सिरी जिनवर पूजूँ तिरकाल ।
आह्वानन संस्थापन करके, उर में धारूँ होऊँ निहाल ।।
आओ नाथ हृदय में मेरे, खुला हुआ है मम उर द्वार ।
तुम बिन मन्दिर सूना मेरा, तुम्हें पुकारूँ मैं त्रयकाल ।।

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामधारक जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर-संवौषट् आह्वाननम् । ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनाम धारक जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनाम धारक जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टकम्

(तर्ज : नन्दीश्वर पूजा)

मुनि मन सम शीतल नीर, कंचन कलश भरो ।
जिन पाद पद्म में तीन, धारा नित्य धरो ।।
''श्रीमत् आदिक शत नाम'', निशदिन पूज करो ।
पूजा फल से शिव पाय, जन्म जरा कु हरो ।।

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामधारक जिनेन्द्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित शुभ गंध मँगाय, जिनवर देह समा ।
जिन चर्ण सरोरुह चर्च, नाशूँ भव विपदा ।।
श्रीमत् आदिक शतनाम, निशदिन पूज करो ।
पूजा फल सम्पति दाय, दुख दारिद्र हरो ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामधारक जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ अक्षत धौत सु लाय, सुन्दर मुक्ता से।
जिन चरण अग्र धर पुंज, अक्षय पद भासे।।
श्रीमत् आदिक शत नाम, निशदिन पूज करो।
पूजा फल सम्पति दाय, दुख दारिद्र हरो।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनाम धारक जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तयेअक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चम्पक पुष्प गुलाब, सुरभित कुन्द लिया।
कामारिजयी जिन-पाद, अर्चूं हर्ष हिया।।
श्रीमत् आदिक शत नाम, निशदिन पूज करो।
पूजा फल सम्पति दाय, दुख दारिद्र हरो।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामधारक जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

वर लाडू मोतीचूर, सुवरण थाल भरूँ।
ज्ञानामृत तुष्ट जिनेश, पूजत भूख हरूँ।।
श्रीमत् आदिक शत नाम, निशदिन पूज करो।
पूजा फल सम्पति दाय, दुख दारिद्र हरो।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामधारक जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुध घृतमय दीपक बाल, जगमग जोति करूँ।
जिनपाद पद्म को पूज, मन अंधियार हरूँ।।
श्रीमत् आदिक शत नाम, निशदिन पूज करो।
पूजा फल सम्पति दाय, दुख दारिद्र हरो।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामधारक जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

काज असंभव संभव होते, संसृति छेद सु भक्ता।
सुख सम्पत्ति वैभव नित भरता, समता भाव सँवरता।।
''संभू'' नाम के धारक जिनवर, मन वच शीश नवाता।
भक्ति भाव से वन्दन करता, चरणों अर्घ चढ़ाता।।५।।
ॐ ह्रीं अर्हं शंभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम में आतम को पाकर, आतम भू कहलाये।
आत्म समा पर आतम माने, ''आत्मभू'' नाम कहाये।।
आत्मभू देवा निश दिन पूजो, मन-वच शीश झुकाओ।
अष्ट द्रव्य का थाल चढ़ाओ, आतम निधि शुध पाओ।।६।।
ॐ ह्रीं अर्हं आत्मभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकी आभा नित्य प्रकाशित, लोकालोक विभासे।
कोटि सूर्य अरु चन्द्र चाँदनी, जिनके सन्मुख लाजे।।
'स्वयंप्रभा' है नाम जिन्हों का, मन-वच शीश नवाऊँ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा नित्य रचाऊँ।।७।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौ इन्द्रों से पूजित जिनवर, तीन जगत के स्वामी।
त्राता हो प्रभु तीन भुवनपति, अखिल विश्व में नामी।।
''प्रभू'' नाम के धारक जिनवर, मन-वच शीश झुकाओ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर,पूजा नित्य रचाओ।।८।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म स्वभाव के भोक्ता जिनवर, पर से छोड़ा नाता।
ज्ञान रु दर्शन नित ही भोगा, भोगा आतम कोरा।।
'भोक्ता' नाम जिनेश्वर पूजो, मन-वच शीश झुकाओ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर,पूजा नित्य रचाओ।।९।।
ॐ ह्रीं अर्हं भोक्ते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम चरणों की भक्ति से प्रभो, भव्य विश्वभू बनते ।
तुम सम निज आतम अवलोकत, विश्व हितंकर होते ।।
नाम विश्वभू धारक जिनवर, मन-वच शीश झुकाओ ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा नित्य रचाओ ।।१०
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचपरावर्तन के नाशक, शाश्वत सुख के भोक्ता ।
अजर अमर अविनाशी शिवपद, तामें अविचल वासा ।।
नाम''अपुनर्भव'' जिनवर कु नित, मन-वच शीश झुकाओ ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर,पूजा नित्य रचाओ ।।११
ॐ ह्रीं अर्हं अपुनर्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

छह द्रव्यों से बना लोक यह, ज्ञान चक्षु में दर्शे ।
''विश्वातम'' है नाम इसीसे, पूजत केवल लहते ।।
अष्ट द्रव्य का थाल चढ़ाओ, मन-वच शीश झुकाओ ।
विश्वातम की पूजा फल से, सिद्ध परम पद पाओ ।।१२
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विश्व विलोकित बोध जिनेशा, वस्तु चराचर जानें ।
युगपत् गुण-परजय अवलोके, केवल भान प्रकाशे ।।
''विश्वलोकेश'' नाम धारक, मन-वच शीश झुकाओ ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर,पूजा नित्य रचाओ ।।१३
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

केवलबोध भान से जिनवर, लोकालोक प्रकाशें ।
शुद्ध बोध के स्वामी वृषभा, केवल लब्धि विभासें ।।
नाम ''विश्वतश्चक्षु'' पूजो, मन-वच शीश झुकाओ ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर,भावन सोलह भाओ ।।१४
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतश्चक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महाविषम संसार जु यामें, अविनाशी ना कोई।
तप बल से जो कर्म कु काटे, सिद्धपरम पद होई।।
''अक्षर'' नाम से भूषित जिनवर, पूजो शीश झुकाओ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर,अठ-दुठ कर्म जलाओ ।।१५
ॐ ह्रीं अर्हं अक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अलोक रु तीन काल की, द्रव्य पर्याय ज्ञाता।
''विश्वविद्'' है नाम इसी से, पूजें जग विख्याता।।
देव त्रिलोकी नाथ जजूँ मैं, मन-वच वन्दन करता।
अष्ट दरब का थाल सजाकर, पूजा निशदिन करता।।१६
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व सुभासित विद्या अधिपति, सर्वलोक को जानें।
पूजें निशदिन भक्ति सुधारें, संशय तिमिर विहानें।।
''विश्व विद्येश'' नाम जिनेश्वर, मन-वचवन्दन मेरा।
स्वर्ण थाल में द्रव्य सजाकर, पूजन करता चेरा।।१७
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्येशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल विश्व के सकल पदारथ, उतपत्ति बतलाया।
विश्वयोनि वे विश्वेश्वर विभु, आन बसो मम आला।।
''विश्वयोनि'' सु नाम प्रधारक, मन-वच नमन हमारा।
मणिमय थाल सु अर्घ चढ़ावें, हमको तू हि सहारा।।१८
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश नहीं जिस पद का स्वामी, सिद्धालय तव वासा।
तिनकी आराधन नित करके, स्वयं सिद्ध भवि पाता।।
'अविनश्वर' शुभ नाम जु धारक, भक्ति भाव शिरनाता।
मणिमय अर्घ चढ़ाकर जिनवर!, आतम निधि शुध पाता।।१९
ॐ ह्रीं अर्हं अविनश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरज, विरज हैं त्रिभुवनपति जो, सकल विश्व विख्याता ।
लोकालोक दरशता युगपत, पूजे वांछित पाता ।।
''विश्वदृश्वने'' नाम सु धारक मन-वच वन्दन तेरा ।
थाल रत्नमय अर्घ्य चढ़ाऊँ, मेटो भ्रम अब मेरा ।।२०
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानानन्द निरञ्जन वापक, नाम विभू गुण थापक ।
''नाथ विश्व भू'' श्री जिन ध्याओ, गुण अनन्त के धारक ।।
श्री जिनेश की पूजा करता, मन-वच शीश झुकाता ।
अष्ट द्रव्य का थाल चढ़ाकर, अष्टम वसुधा पाता ।।२१
ॐ ह्रीं अर्हं विभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नत्रयमय मोक्षमार्ग शुभ, विधि के प्रभू विधाता ।
आराधक आराधन करके, मुक्तिधाम को पाता ।।
नाम ''धातृ'' के धारक जिनवर, मन-वच शीश झुकाता ।
मणिमय थाल सजाकर गुरुवर, पूजा नित्य रचाता ।।२२
ॐ ह्रीं अर्हं धात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विश्व पूज्य हो, विश्व प्रणेता, सकल कर्म के नाशा ।
विश्व विधायक विश्व ईश हो, विश्वमूर्ति सुख दाता ।।
जिन ''विश्वेश'' पूज्य नाम है, मन-वच शीश झुकाता ।
स्वर्ण थाल मे अष्ट द्रव्य ले, पूजा नित्य रचाता ।।२३
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोक अलोक सु युगपत् ज्ञाता, ज्ञान चक्षु सुख धामा ।
वीर्य अनन्त सु शक्तीधारी, ज्ञाता दृष्टा रामा ।।
नाम ''विश्वलोचन'' जिनवर को, भक्ति भाव शिर नाता ।
रत्न थाल में अष्ट द्रव्य ले, पूजा नित्य रचाता ।।२४
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोकपूर्ण जब समुद्घात हो, लोक सु वापि जिनेशा ।
सकल चराचर ज्ञान विभासे, ज्ञान सुभानु विशेषा ।।
''विश्वव्याप'' शुभ नाम विधारि, मन-वच शीश झुकाता ।
रत्नथाल में अर्घ्य सजाकर, निशदिन पूज रचाता ।।२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वव्यापिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भुजंगप्रयात

न दोषा सुहाया, सुमार्गा सुझाया,
जिनेशा इसी से, निदोषा कहाया ।
नमूँ मैं नमूँ मैं, विदोषा जिनिन्दा,
विधाना बताया इसी से ''विधिन्दा''।।२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं विधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जनों को सदा मोक्ष साक्षात् प्रदाता,
नमें आपके चर्ण सौख्यं विधाता ।
विधाना सु मोक्षा प्रभो तू बताया,
''सुवेधा'' प्रनामा सुरों ने सुगाया ।।२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनन्ता अमन्दा जिनिन्दा सुशास्ता,
रहें काल नन्ता, सुसौख्या विशाला ।
''सुशाश्वत्त'' नामा नमावें सुभाला,
सुद्रव्या, सुअष्टा सुपूजैं त्रिकाला ।।२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सभी भव्य साक्षात् समक्षा सुपाते,
सु ''विश्वत्त मुक्खा'' सुनामा विचर्चे ।
सुसर्वांग शोभा, सु दिव्यध्वनेशा,
जिनेशा प्रभेशा, लहा ज्ञान ऐसा ।।२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतोमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुकर्माष्ट नाशा, सुषट् कर्मभासा,
प्रजापाल देवा, सुशान्ती विभासा।
''सुविश्वा सु कर्मा'' सु नामा विभाता,
प्रद्रव्या सु अष्टा, सु पूजैं प्रभाता।।३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वकर्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुजेष्ठा, सुश्रेष्ठा, सुवृद्धा महाना,
महेन्द्रा, नरेन्द्रा, प्रपूजैं विधाना।
''जगज्येष्ठ'' नामा, नमूं मैं त्रिकाला,
करूं प्राप्त मोक्षा, सदा सौख्यदाता।।३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरीरा जिनेशा सु विश्वा वियाप्ता,
सुविश्वा विमूर्ती इसीसे कहाता।
विनामा ''सुविश्वा विमूर्ती बखाना,
नमूं मैं नमूं मैं जिनिन्दा महाना।।३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुकर्मा विजीता जु संसार जीता,
जिनेशा इसीसे ''जिनेश्वर'' कहाया।
गणीशा मुनीशा नमें चर्ण आला,
लहें पार संसार जाला किनारा।।३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द-रोला (११-१२मात्रा)

केवलबोध सु चक्षु, आप लहो गुणकारी,
हस्तामलकवत् वस्तु, दिखती जिसमें सारी।
नाम सु ''विश्वदृक्'' सार, यातैं प्रभु ने पायो,
अष्ट दरब ले हाथ, पूजन को मैं आयो।।३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंगप्रयात

विविश्वा सुशोभे सुभूता जनों से,
जिना स्वामि होते, तिनी भूतकों के।
सु "विश्वा भुतेशा", नमूं मैं त्रिकाला,
कटे कर्म बन्धा, करे तू निहाला।।३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुलोका अलोका जिना ज्योति भासे,
सुजोती स्वरूपा सुनेत्रा प्रभासे।
सु "विश्वा सुजोती" सु नामा इसीसे,
नमूं मैं नमूं मैं नमूं मैं उसी से।।३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्ज्योतिषे नमः अनर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुईशा पुनीता समा ते न कोई,
अहर्ता अकर्ता विज्ञाता विसोही।
अनीशा इसीसे बखाना गणीशा,
सुनामा "अनीश्वर" जपूं मैं त्रिकाला।।३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विदोषा विराजा विजीता दुकर्मा,
"जिना" नाम पाया इसी से जिनन्दा।
अनन्ता गुणों से सुशोभें जिनेन्द्रा,
सुपूजैं जिताशा कटैं कर्म फन्दा।।३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बली काम हारे, हरीहार खाये,
विजीता विकामा, जिना जिष्णु गाये।
जिना "जिष्णु" नामा, नमूं मैं त्रिकाला,
हरो पाप सारा सुभावा हमारा।।३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमेया अमाना अमाणा कहा है,
महात्मा सुआत्मा महीमा महा है।
सु उत्पाद ध्रौव्या व्ययात्मा सदा हो,
"अमेयात्मा पूजूँ दुपापा विनाशो।।४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सु विश्वेश देवा, नमें चक्र ईशा,
अनन्ता विबोधा, जिनेशा महीशा।
जिना "विश्वरीशा" नमूँ मैं त्रिकाला,
नमूं मुक्तिदाता, हरो पाप काला।।४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोका सुनाथा जगत् का सुसामी,
नमैं लोक सारा विभो मोक्ष धामी।
सु अष्टा प्रकारा सुपूजैं त्रिकाला,
कटे कर्म सारा मिले मोक्ष आला।।४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रमोहा पिशाचा महापापकारी,
विजीता प्रभु ने महासौख्यकारी।
"अनन्तं जितं" नाम पूजूं विनीता,
कटे कर्म जाला विकाला अमीता।।४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचा मानसा गोचरा ही स्वरूपा,
न छद्मस्थ बोधा अचिन्त्या अतर्का।
"अचिन्त्यात्म" नामा नमूं मैं सदा ही,
वसू कर्म काटूं लहूं मुक्ति को ही।।४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुभव्या जनों के सुबन्धू कहाते,
रटें नाम तेरा विमुक्ति प्रदाते।
"सुभव्या सुबन्धू" रटूं नाम तेरा,
मिले मुक्ति रामा सदा भाव मेरा।।४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं भव्यबन्धवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमोहा रजा ना रहस्सा विनाशा,
विकर्मा विधारा सुनन्ता चतुष्टा।
"अबन्धन" सुनामा नमें स्वामि माथा,
मिले मुक्ति धामा यही है सुकामा।।४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अबन्धनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगादी सुदेवा सुषट्कर्मभासा,
जनों को सुमोक्षा सुमार्गा प्रभासा।
"युगादी पुरुषा" सुनामा जपूं मैं,
कुकर्मा जुअष्टा सदा ही नशूं मैं।।४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगादिपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्ता चतुष्टा सु वृद्धि प्रपाता,
अनन्ता गुणा सौं सुब्रह्मा सुभाता।
सु "ब्रह्मा" जिनेशा जजूं नित्य आके,
तरूं सिन्धु घाटी बसूं मोक्ष जाके।।४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिना सिद्ध सूरी सुबोधा प्रपन्ना,
उपाध्याय साधू गुणा जु महन्ता।
सुबोधा सु पाँचो मया ये जिनिन्दा,
सु "पंच सु ब्रह्ममया" देव वन्द्या।।४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचब्रह्ममयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

परमानन्द सु पद थिरा, परकल्याण सुरूप।
शान्त रु दान्त रु शाश्वता, नमूं नमूं "शिव" भूप ।।५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(रूपचोपाई-छन्द १६मात्रा)

दिव्यध्वनि में शुभ उपदेशा, रक्षक सबके हैं सु जिनेशा ।
नाम जु "पर" जो पूज रचाते, कर्म नाशकर शिवपुर जाते ।।५१

ॐ ह्रीं अर्हं पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रेष्ठ भये जग सिद्ध महन्ता, वसु कर्मन का कीना अन्ता ।
पर उपकार किया अरहन्ता, "परतर" नाम जु कहते सन्ता ।।५२

ॐ ह्रीं अर्हं परतराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(तोमर-छन्द)

ज्ञानियों के गम्य हो, न इन्द्रियों सु गम्य हो,
गोचरा न इन्द्रियों, सदा अगोचरा अहो ।
"सूक्ष्म" हो अतीत हो, सुदेव इन्द्र पूज्य हो,
नाम सूक्ष्म को जजौं, दु अष्ट कर्म क्षीण हो ।।५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्र ओ धरेन्द्र पूज्य पाद आपके सदा,
वन्दनीय हैं परा परा सु चर्ण ये मुदा ।
नाम "पर्मेष्ठि" श्री सुवन्दना त्रिकाल हो,
जाप आपका करें जु पाप ताप नाश हो ।।५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाम है सनातना न बाधता हुई कभी,
शुद्ध आतमा निधी सदा हि एक सी रही ।
अष्ट द्रव्य ले जजूं "सनातना" सु नाम को,
पुत्र पौत्र सम्पदा शिवालया प्रवास हो ।।५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सनातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्योति आप में स्वयं सदा हि भासमान है,
नाम ''स्वयंज्योति'' पूज्य आपका प्रधान है।
स्वर्ण थाल में सजा सु अष्ट द्रव्य पूजता,
नाश कर्म आठ हों सु भावना विभावता।।५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मजाल है निमित्त जन्म मर्ण पावना,
अष्टकर्म नाश हो न जन्म आप धारना।
नाम ''अज'' को जजूं प्रशस्त भक्ति राग से,
अष्ट कर्म नाश हों सु भावनानुराग से।।५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात गर्भ आव ना न घोर दुःख पावना,
जन्म बार-बार ना अजन्म नाम सार्थ हा।
नाम है ''अजन्म'' देव पूजता त्रिकाल मैं,
जन्म फेर ना धरूं भवाब्धि की प्रधार में।।५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजन्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान संयमा तपा सुखों कि खान आप हैं,
मोक्ष तत्त्व लाभ के सु आप ही विधान हैं।
''ब्रह्मयोनि'' सार्थ नाम पूजता उछाह सों,
मुक्ति मांहि वास हो सुचारु भाव चाव सों।।५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमागती सुसिद्ध जन्म आप ले लिया,
हैं नहीं त्रिया वहां भवाब्धि की जु कारणा।
''अयोनिजा'' अतः सु नाम मुक्तिवास से मिला,
मस्तका दु हाथ धार शीश नाउ मैं भला।।६०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अयोनिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह बैरि जीत के सुसिद्ध सार पा लिया,
ज्ञानवान भव्य जीव बोध दान दे दिया।
''मोहारि'' नाम पाय नाथ आप ही विराग हो,
पूजता सु अष्ट द्रव्य कर्म आठ हान हो।।६१।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोहारिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह के विजीत हो विशिष्ट जेतृ आप हो,
हे ''विजयी'' देव आप सन्त हो महन्त हो।
राग के जयी विभो सुशीश नाय पूजता,
वीतरागता चहूं सु भावना अराधता।।६२।।

ॐ ह्रीं अर्हं विजयिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ भाव से विजेतृ आप हो विभो,
काम के विजेतृ नाथ ब्रह्म के अराध्य हो।
''जेता'' नाम को जपो सुशुद्ध भाव धारके,
अष्ट कर्म नाश की सुभावना जगायके।।६३।।

ॐ ह्रीं अर्हं जेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपके विहार की सु सूचना करे सदा,
धर्मचक्र धारते सु ''धर्मचक्रि'' हो मुदा।
कोटि सूर्य कान्ति को तिरस्कृता करे सदा,
धर्म्मचक्र आपका सहस्त्र आर धारता।।६४।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''अडिल्ल छन्द'' २१ मात्रा

दया पताका सदा जगत् फहरा रहे,
जीवों की रक्षा करते समभाव से।
अभयदान को आप दिया उपदेश से,
नाम दयाध्वज पूज्य नमों शिरनायके।।६५।।

ॐ ह्रीं अर्हं दयाध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तोमर

कर्मशत्रु को शमा प्रशान्त शत्रु हो लिये,
शान्त भाव प्राप्त हो प्रशान्त रूप हो लिये।
नाम है "प्रशान्त अरि" पूजता हूँ भाव से,
सिद्ध लोक जा बसूं दु अष्ट कर्म नाश से।।६६।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

नाम "अनन्तात्मा" जपूं, कर्म नशावनहार।
भव समुद्र से पार हो, जाऊं यह अभिलाष।।६७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगी जन के गम्य हो, "योगी" नाम कहाय।
चित्त किया एकाग्र है, नमता शत-शत बार।।६८।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द

यम नीयम आसन अरु, प्राणायाम शुभ,
धारक योगि इनके पूजित हो तुम्हीं।
"योगीश्वरार्चित" नाम इसी से पूज्य है,
बन्दौं आठों याम, कर्म अरि को दहैं।।६९।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगीश्वरार्चिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चामर छन्द

आत्म का सु ब्रह्म नाम, शान्त भाव धारते,
ब्रह्मवित् सु नाम आपका यतीन्द्र गावते।
नाम "ब्रह्मवित्" सदा सु अर्चता सु भाव से,
अष्ट कर्म नाश हो, सु मुक्ति मांहि वास से।।७०।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल

आतम का शुभ ज्ञान, दया का ध्यान है,
इच्छा का सुनिरोध तत्व का भान है।
''ब्रह्मतत्वज्ञ'' सु नाम इसीसे आपका,
वन्दे जो तिरकाल, पाप हों सब बिदा।।७१।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मतत्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

आतम बोध सु दक्ष हो, ब्रह्म स्वरूप का ज्ञान।
''ब्रह्मोद्याावित्'' नाम को, पूजो भवि सुखदाय।।७२।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मोद्याविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चामर

जो सदा रता महा सु रत्न तीन कार्य में,
है यती वही कहा लगा रहे सुबोध में।
ईश हो प्रभो तुम्हीं यती जनों के नाथ हो,
नाम है ''यतीश्वर'' प्रसिद्ध पूज्य आप हो।।७३।।

ॐ ह्रीं अर्हं यतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेश है कषाय का न शुद्ध नाम को धरें,
पाप पुञ्ज नाश के सुसिद्ध आलया बसें।
शुद्ध ''सिद्ध'' नाम की करूं सदा हि अर्चना,
अष्ट कर्म नाश हो यही सदा सुभावना।।७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान केवला लहा विशुद्ध ''बुद्ध'' आप हो,
दर्पणा समा सुसर्व लोक बोध आप में।
अष्ट अंग नायके सु पूजता जिनेन्द्र को,
अष्टमा क्षिति सुपाय संशया न खेद को।।७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द–(रूप चौपाई १६ मात्रा अन्तदीर्घ)

होय प्रबुद्ध जगत सब देख्यो, दे उपदेश जगत सम्बोध्यो ।
नाम ''प्रबुद्धात्मा'', तुम रामा, पूजें नर वांछित हो कामा ।।७६
ॐ ह्रीं अर्हं प्रबुद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्म-अर्थ-मोक्ष अरु कामा, सिद्ध किये ''सिद्धार्थ'' सुनामा ।
सिद्ध अवस्था के प्रभु धारी, अष्ट द्रव्य पूजा गुणकारी ।।७७
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन लोक परसिद्ध शासना, चलायमान जु इन्द्र आसना ।
''सिद्ध-शासन'' नाम प्रजेता, अष्ट कर्म के मूल विजेता ।।७८
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध-शासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वादशांग सुश्रुत सिद्धांता, तिसके वेत्ता श्री भगवन्ता ।
''सिद्ध सिद्धान्तविद्'' नाम गाया, पूजे वो पंचमगति पाया ।।७९
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध सिद्धान्तविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर्णी योगी निशदिन ध्यावें, ऋषि यति मुनि के ध्येय सहारे ।
यातैं ''ध्येय'' नाम प्रभु ध्याऊं, आत्मगुणों का पुंज लहाऊं ।।८०
ॐ ह्रीं अर्हं ध्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्ध जिना तव देव अराधें, सिद्ध साध्य सुकृत जय धारे ।
यातैं ''सिद्ध साध्य'' भगवन्ता, पूज करें संसृति हो अन्ता ।।८१
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्व जगत के प्रभु हितकारी, पूजैं अष्ट दरब ले थाली ।
नाम ''जगद्धित'' जग में प्यारा, जाप जपै होवे भव पारा ।।८२
ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

देव मनुज उपसर्ग तिर्यञ्चा, सहें ''सहिष्णु'' श्री भगवन्ता ।
क्षमा खड्ग शोभा अतिभारी, वन्दत कर्म नशें दुखकारी ।।८३
ॐ ह्रीं अर्हं सहिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

च्युत ना होते गुण गंभीरा, ''अच्युत'' नाम धरें गुणधीरा ।
स्व स्वभाव रत निश्चल वीरा, दूर करो पूजक की पीरा ।।८४
ॐ ह्रीं अर्हं अच्युताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हो अनन्त अनन्त सुखभोगी, गुण अनन्त के स्वामी भोगी ।
नाम ''अनन्त'' जु करता अरचा, अरचा हरती करमन-परचा[१] ।।८५
ॐ ह्रीं अर्हं अनन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

तीन लोक सब काल में, हो प्रभु आप समर्थ ।
सिरि ''प्रभविष्णु'' नाम की, पूजा हरे अनर्थ ।।८६।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभविष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(रूप चौपाई छन्द)

द्रव्य क्षेत्र काल अरु भावा, भव संसार नाश का दावा ।
नाश पंच संसार सु कीना, नाम भवोद्भवं शिव सुख दीना ।।८७
ॐ ह्रीं अर्हं भवोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्र नरेन्द्र चन्द्र नागेन्द्रा, गणधर शीश नमावें चरणा ।
यातैं नाम ''प्रभूष्णु'' सुमरना, जग के स्वामी तेरा शरणा ।।८८
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जरा मृत्यु की बहिन कहाती, जीते जी वो मरण कराती ।
जरा कभी तुम पास न आई, ''अजर'' नाम पूजो सुखदाई ।।८९
ॐ ह्रीं अर्हं अजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूज्य सदा पर पूज न सकता, क्योंकि रूप सदा ही अलक्ष्या ।
यातैं नाम ''अयज्य'' कहाया, जपो नाम सुधरे नरकाया ।।९०
ॐ ह्रीं अर्हं अयज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१. करमन-परचा=कर्म के लेख ।

द्वादश सहस किरण के धारी, अर्क चन्द्र की द्युति भी हारी ।
जिनवर की छबि दीप्तिमान है, ''भ्राजिष्णु'' यह नाम प्राप्त हैं ।।९१
ॐ ह्रीं अर्हं भ्राजिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धी अनन्त की जिनवर ईशा, यातैं धीश्वर कहें गणेशा ।
अष्ट दरब ले पूज रचाओ, ''धीश्वर'' पद को तुम पा जाओ ।।९२
ॐ ह्रीं अर्हं धीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाश रहित अव्यय अविनाशा, सिद्ध अवस्था में गुण भासा ।
हीनाधिकता नाहि न अन्ता, ''अव्यय'' नाम भजो जयवन्ता ।।९३
ॐ ह्रीं अर्हं अव्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विभा-तेज जो टपक रहा है, तीन रत्न से दमक रहा है ।
यातैं नाम ''विभावस्'' पाया, पूजैं भक्ति दु पाप नशाया ।।९४
ॐ ह्रीं अर्हं विभावसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीती कर्मगती जिनदेवा, अजर अमर पद रहें सदीवा ।
जन्म मरण अब भटकन नाही, नाम ''असंभूष्णु'' जप लो भाई ।।९५
ॐ ह्रीं अर्हं असंभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वयं कर्म का नाश किया है, ध्यान अग्नि में होम किया है ।
शुद्ध सरूप निजात्म लिया है ''स्वयम्भूष्णु'' हम नमन किया है ।।९६
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

युग के प्रभुवर आदि विधाता, धर्म प्रवर्त्तक युग निर्माता ।
यातैं नाम ''पुरातन'' गाया, अष्ट दरब ले पूज रचाया ।।९७
ॐ ह्रीं अर्हं पुरातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

''परमात्मा'' को नित भजूं, मुक्ति मिलन के काज ।
परमातम पद कब लहूं, लगी यही है आस ।।९८।।
ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान अबाधित केवल बोधा, हस्तरेखवत् सब जग देखा ।
यातैं ''परंज्योति'' शुभ नामा, आठ अंगधर नाऊं भाला ।।९९
ॐ ह्रीं अर्हं परंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन जगत लछमी के स्वामी, तीन जगत ईश्वर भु नामी ।
हे 'त्रिजगत् परमेश्वर' नामा, पूजा है तव गुण की धामा ।।१००
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत् परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्रिभंगी

शत श्रीमद् ध्याओ जिन गुण गाओ, पाप मिटाओ दुखद्वन्दा ।
शत नाम को पूजो, महिमा बूझो, जिनगुण पूजो, सुखसंगा ।।
हे नन्त चतुष्टा, गुण से मण्डा, पाप विहंडा, भव हण्डा ।
शुभ कीरति गाऊं, निजगुण पाऊं, कर्मजलाऊं, हित चंगा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमदादिशतनामधारक वृषभ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप—ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमदादिशतनामधारक श्री वृषभ जिनेन्द्राय नमः ।

(लवंग से १०८ बार जाप करें)

दोहा

श्रीमत् आदिक गुण सदा, तिहुं जग शान्ति करेय ।
निज आतम में शान्ति हो, धारा शान्ति करेय ।।

शान्तये शान्तिधारा

सुरभित लेऊं मोगरा, चम्पा जुही गुलाब ।
श्रीमत् नाम सु जिनवरा, पुष्पाञ्जली चढ़ाव ।।

पुष्पाञ्जलि

जयमाला

दोहा

श्रीमत् आदिक नाम की, गाऊं अब गुणमाल ।
भाव भक्ति से पूजकर, नाऊं मैं नित भाल ।।

नरेन्द्र छन्द

जिनवर ढाई द्वीप में होते, सत्तर शत गुण खाना ।
पंचकल्याणक धारक देवा, पूज करें बुधवाना ।।
गर्भ मांहि आने के पूर्वा, रतनवृष्टि छह मासा ।
करी कुबेर ने नगरी रचना, मणिमय कोट सुहाना ।।१।।
चतुः बार चौदह कोटी नित, बरसे रतन अपारा ।
मधुर गान में कोटि ढाई दस, बजे वादित्र लुभाना ।।
सुर किन्नरियां गीत नृत्य से, हाव भाव नित रचतीं ।
सुकुमारी छप्पन माता की भक्ती सेवा करतीं ।।२।।
रात्रि पिछले पहर में देखे, माता सपने सोला ।
सुन्दर श्वेत जु हाथी देखे, बैल दिखे शुभ डोला ।।
सिंह रु लक्ष्मी दाम दु सुन्दर, रवि शशि मीन सु युगला ।
पूर्ण जु कलश सरोवर देखे, सागर पीठ न उपमा ।।३।।
अमर विमान रु धरणेन्द्रा का, धूम रहित शुभ अगनी ।
रत्नन की राशि शुभ देखे, मुख प्रवेशता हाथी ।।
हो प्रमोद उठती तब माता, मन में धीर सु लाके ।
पतीदेव से पूछे उत्तर, चित में अति हुलसाके ।।४।।
पुण्यवान हो बड़भागी हो, स्वप्न सभी शुभ थारे ।
तीन लोक का स्वामी सुत हो, तीर्थंकर पद धारे ।।
धीर वीर गंभीर सुनेता, कर्मविभेदक ज्ञानी ।
चरणों में आकर झुक जायें, बड़े-बड़े अभिमानी ।।५।।

द्वीप रुचकवर से श्री आदिक, देवी आया करतीं।
गर्भ शोधना माता की कर, मन को वे बहलातीं।।
मात गरभ में जिनवर ऐसे, ज्यों मूरत मंजूषा।
मात रंच ना पीड़ित होवे, म्लान न होय शरीरा।।६।।
हों जो पुरुष महान गर्भ से, गर्भ कल्याणक पाते।
जन्म रु कर्म महाना हों वे, मुक्ति महल में जाते।।
ऐसे जिनवर ढाई द्वीप में, काल चतुर्थे होते।
पूजैं जो भवि नित्य चावसौं, कर्म कालिमा धोते।।७।।
गर्भ कल्याणक अनुपम महिमा, देव मनुज सब गाते।
गणधर मुनिवर उन जिनवर, के, चरणों शीश झुकाते।।
पुण्यहीन हम पंचम काले, कल्याणक ना पाते।
पूजा गर्भ कल्याणक करके, तोष सुधा सरसाते।।८।।

दोहा

भरत ऐरावत के कहे जिनवर शत सौ बीस।
श्रीमत् आदिक नाम शत, पूजूं मैं जगदीश।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमदादिशतनामधारक वृषभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन सहसनाम की पूजा, श्रद्धाधर जो करते हैं।
यश वैभव कीरत बढ़ती है, ज्ञान महानिधि लहते हैं।।
नवनिधि चौदह रत्न प्राप्त कर, मुक्ति रमा वे वरते हैं।
शाश्वत आत्मानन्द बरसता, ज्ञान सुधारस पीते हैं।।

पुष्पाञ्जलिं

●

अथ द्वितीय कोष्ठ
दिव्यादिशतक नाम पूजा

स्थापना

नरेन्द्र छन्द

दिव्यादिशत नाम के धारक, जिनवर आओ उर में।
तव भक्ती वाचाल कर रही, तिष्ठो मम मन्दिर में।।
आव्हानन संस्थापन करता, भाव अंजुली धारा।
निज आतम के शुद्ध करण को, मैने तुमें पुकारा।।

ॐ ह्रीं दिव्यादिशतनामधारक वृषभ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं दिव्यादिशतनामधारक वृषभ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं दिव्यादिशतनामधारक वृषभ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

निश्चयनय से सिद्ध समा है, निर्मल शुद्ध निजातम।
पड़ा अनादि विभाव कलुषता, मिला न निज परमातम।।
आतम शुद्धि करने को मैं, श्री जिन चरणों आया।
सुर गंगा का जल सु चढ़ाकर, दिव्य शतादिक ध्याया।।१।।

ॐ ह्रीं दिव्यादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

राग आग से पीड़ित होकर, पर पदार्थ अपनाया।
अशुभ राग में फँसा रहा नित, जिन गुण को ना गाया।।
सुरभित चन्दन चन्दन वन का, पाद सु पद्म चढाऊं।
दिव्यादिकशतनाम उचारूं, आत्म सुगन्धी पाऊं।।२।।

ॐ ह्रीं दिव्यादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणिक परजायों में हि उलझा, शाश्वत पद ना पाया ।
देव मनु पशु परजायों रत, आतम रूप न ध्याया ।।
खण्ड न अक्षत बासमती का, चरणे अग्र चढ़ाऊं ।
दिव्यादिक शतनाम उचारूं, पद अक्षय शुध पाऊं ।।३।।

ॐ ह्रीं दिव्यादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

काम वासना में रत होकर, भोगे भोग घनेरे ।
तृप्ति नहीं फिर भी हो पाई, आतम रस ना घोले ।।
पुष्प मालती सेवंती ले, जिनवर चर्ण चढ़ाओ ।
दिव्यादिक शतनाम उचारो, मदनारि कु हराओ ।।४।।

ॐ ह्रीं दिव्यादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

रसना इन्द्रिय लम्पटता से बहु पकवान बनाये ।
रात दिना भक्षण हम कीने, ज्ञानामृत ना पाये ।।
शुद्ध जलेबी पेड़ा बरफी, जिनवर अग्र चढ़ाओ ।
दिव्यादिक शतनाम उचारो, रोग क्षुधा कु नशाओ ।।५।।

ॐ ह्रीं दिव्यादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाश-नाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोह महातम घोर जु छाया, लागा लोभ घनेरा ।
काया को हम नित ही पोषा, आतम बोध अन्धेरा ।।
दीप स्वर्णमय घृत से पूरा, आरती नित्य उतारो ।
दिव्यादिक शतनाम उचारो, केवलजोति जलाओ ।।६।।

ॐ ह्रीं दिव्यादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दूध में घृत रु पत्थर सोना, त्यों देहा में आतम।
कर्मधूल से आवृत ऐसा, दीखत नाहि निजातम।।
धूप दशांगी, गन्ध सुगन्धी, धूपायन में खेओ।
दिव्यादिक शतनाम उचारो, कर्मन धूलि उड़ाओ।।७।।

ॐ ह्रीं दिव्यादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य फला से धन-धान्यादिक, पाकर मोह किया है।
मोक्ष महाफल शुद्ध सुभाव कु, उद्यम नाहि किया है।।
श्रीफल लोंग बदाम रु पिस्ता, भर-भर थाल चढ़ाओ।
दिव्यादिक शतनाम उचारो, मोक्ष महाफल पाओ।।८।।

ॐ ह्रीं दिव्यादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

राजा मन्त्री सन्त्री पद में, आकांक्षा की सारी।
पद अनर्घ का भाव न चीना, भूल हुई यह भारी।।
जल गन्धाक्षत पुष्प चरु ले, दीप सु धूप चढ़ाओ।
दिव्यादिक शतनाम उचारो, पद अनर्घ तुम पाओ।।९।।

ॐ ह्रीं दिव्यादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

दिव्यादिक शत गुण सदा, तिहुं जग शान्ति करेय।
निज आतम में शान्ति हो, धारा शान्ति करेय।।

शान्तये शान्तिधारा

सुरभित लेओ चम्पकली, हरसिंगार प्रसून।
दिव्यादिक शत जिनवरा, पुष्पाञ्जली अर्पूं।।

पुष्पाञ्जलिं

अथ प्रत्येक अर्घ

शंभु-छन्द (३२ मात्रा)

हे 'दिव्यभाषापति' मम जिनवर,
वन्दन तव करने आई हूँ।
वन्दन से जीवन चन्दन हो,
सब अर्पण करने आई हूँ।।
ठारह महं भाषामय वाणी,
हैं सात शतक खुल्लक भाषा।
सुन दिव्यध्वनि समकित उपजे,
रत्नत्रय पाने आई हूँ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यभाषापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग के जो आदि विधाता हैं,
सर्वार्थसिद्धि से आये हैं।
सब देवों में अहमिन्द्र रहे,
अब नाभिराय घर जाये हैं।।
यातैं है नाम सु "दिव्य" महा,
देवों के पूज्य कहाये हैं।
हम अष्ट द्रव्य का थाल सजा,
अब पूजा करने आये हैं।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्दोष पूत वाणी जिनवर,
शुभसार्थ सु प्रिय है कर्णमधु।
पूर्वापर न विरोधी यामै,
सप्त सुरस भंग झरता विभू।।
आओ भव्यों अष्ट दरब ले,
सिरि जिनवर पूजा नित्य करो।
'पूतवाक्' है नाम प्रभू का,
पूजा शुभ फल से मुक्ति वरो।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है दिव्यधुनि अर्हंत देव की,
सन्मार्ग सरस सरसाती है।
उपदेश महा उपकारी है,
जो स्यादादमय पूज्य अहो।।
अनेकान्त का पथ दिखलाती,
तव 'पूत जु शासन' नाम विभो।
अष्ट कर्म का नाश करें हम,
दे दो यह शक्ति आज प्रभो।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पू का अर्थ है सिद्ध आतमा,
ताका नन्त चतुष्टय हो।
पावन नाम जु "पूत आतमा",
श्री जिनवर आप अलंकृत हो।।
अष्ट दरब से पूजा कर लो,
सिद्ध सु आलय राज करो।
भाव सहित अर्चन वन्दन से,
तुम कर्म घातिया नाश करो।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे परमज्योति परमातम जिन,
तव चरण-कमल मम शरणा है।
केवलज्ञान ज्योति पाने अब,
परंज्योति को जपना है।।
अष्ट दरब ले पूजा कर लो,
सिद्ध सु आलय राज करो।
भाव सहित अर्चन वन्दन से,
तुम कर्म घातिया नाश करो।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं परंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित धर्म कहा जिनवाणी,
अध्यक्ष नियुक्त ही तुम उसके।
तत्पर हो आतमराम सदा,
हो "धर्माध्यक्ष" ही तुम इससे।।
अष्ट दरब ले पूजा कर लो,
सिद्ध सु आलय राज करो।
भाव सहित अर्चन वन्दन से,
तुम कर्म घातिया नाश करो।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों का दमन किया,
आतम का ध्यान सुहाया है।
तव नाम "दमीश्वर" पूज्य महा,
इन्द्रिय को दास बनाया है।।
अष्ट दरब ले पूजा कर लो,
सिद्ध सु आलय राज करो।
भाव सहित अर्चन वन्दन से,
तुम कर्म घातिया नाश करो।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं दमीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म विभव के स्वामी जिनवर,
सुख अभ्युदय तुम प्राप्त किया।
समवसरण की बाह्य लच्छमी,
"श्रीपति" शुभ नाम जु प्राप्त किया।।
शुध नन्त चतुष्टय अन्तरंग,
तुम उसका भोग सदा करते।
अष्ट दरब से पूजा कर लो,
ये भुक्ति मुक्ति का वर देते।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानवान चारित्रवान अरु,
शुक्लध्यान प्रभु स्वामी हो।
यथाख्यातचारित्र सुशासक,
हो इसीलिये "भगवान" विभो।।
अष्ट दरब ले पूजा कर लो,
सिद्ध सु आलय राज करो।
भाव सहित अर्चन वन्दन से,
तुम कर्म घातिया नाश करो।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं भगवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरि मोहनीय रज ज्ञानवर्ण,
अरु दर्शनावर्णि नाश किया।
अन्तराय जो रहस कहाता,
उसका क्षय भी तुम साथ किया।।
सौ इन्द्रों से पूज्य जिनेशा,
नित अष्ट दरब का थाल सजो।
"अर्हन्" नाम महासुखकारी,
इनकी तुम पूजा नित्य करो।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ज्ञानावरणी ज्ञान ढके,
अरु दर्शनावर्णि दर्श हने।
क्षय दोनों का जिन कर डाला,
उनके हम पूजें नित चरणें।।
"अरजा" नाम सुपूज्य जिनेश्वर,
निशदिन हम उनका जाप करें।
रज उड़-उड़ नाश हुई जिनकी,
हम उनके चरणों शीश धरें।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण रूप से नष्ट हुई रज,
ज्ञानावरणी अरु दर्शन की।
केवलज्ञान रु दर्श लहा,
अब शरण मुझे तव चरणन की।।
"विरजा" नाम सु पूज्य जिनेश्वर,
निशदिन हम उनका जाप करें।
रज उड़-उड़ नाश हुई जिनकी,
हम उनके चरणों शीश धरें।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं विरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य कर्ममल भाव कर्ममल,
तुम नो करमों को धो डाला।
पावन शुचिता की गंगा में,
रस अमृत तुमने भर डाला।।
यातैं शुभ नाम जु "शुचि" तेरा,
गणधर मुनिवर सबने गाया।
अब अष्ट द्रव्य का थाल सजा,
तव पूजा करने मैं आया।।१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुचये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार समन्दर पार करे,
नौका प्यारी वो जिनवाणी।
द्वादशांग मय सप्तभंग युत,
मां सबकी है वो कल्याणी।।
तीर्थ वही है तारक सबकी,
इसके कर्ता जिनराज कहे।
नाम "तीर्थकृत" सार्थ इसीसे,
नित अष्ट द्रव्य से पूज करें।।१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणस्थान तुम दसम प्राप्त कर,
कर्म मोहनीय विनाश किया।
गुणस्थान द्वादशं प्राप्त कर,
रज द्वय रहस का हान किया।।
लोकालोक प्रकाशक तब ही,
केवलज्ञान को आप लिया।
यातै "केवली" नाम की पूजा,
इन्द्रदेव धरणेन्द्र किया।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव अनुदिश अनुत्तर के नित,
अर्चन वन्दन तव करते हैं।
भाव सहित अर्चन फल से ही,
वो निकट भव्यता लहते हैं।।
"ईशान" नाम भविजीव जपो,
सब इन्द्र देव महिमा गाते।
अष्ट दरब का थाल चढ़ा हम,
समकित दरशन को पा जाते।।१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईशानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग सरवज्ञ हितैषी,
इसीलिये प्रभो पूजा योग्य।
इन्द्र नरेन्द्र चक्रवर्ती भी,
पूजा करते तव तजकर शोक।।
अष्ट द्रव्य से पूजा लायक,
जिनवर की पूजा है सुखदाय।
गुणधर गणधर पूजैं तुमको,
है "पूजार्ह" नाम है गुणखान।।१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूजार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नासाग्र दृष्टि आपकी न देखना कहीं।
निश्चल जमें हैं ध्यान में चलना कहीं नहीं।।
त्रैलोक्य हो चलायमान आप चल नहीं।
जिनदेव का "स्थाणु" नाम पूज लो सभी।।३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्ष इन्द्रियां नहीं अक्षय हो इसी से।
निज आतमा में रत सदा अक्षय हो इसी से।।
अमरा भये अजरा भये हो नाथ "अक्षया"।
जो पूजता है अष्टद्रव्य हो न सुखक्षया।।३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र देव वीतराग रागहीन हैं।
तथापि भक्त तारने को यान आप हैं।।
तुम भक्त अनुगामि को लोकाग्र में धरे।
शुभ "अग्रणी" तुम नाम प्रभो पूज सुख मिले।।३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपका निवास सिद्ध ग्राम शुद्ध है।
आराधना का फल महाये केन्द्र बिन्दु है।।
आराधकों को आप ही शिवग्राम में धरते।
है "ग्रामणी" सु नाम नाथ मुक्ति बता दे।।४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेता कहे जिनेश्वरा उपदेश प्रदाते।
रत्नत्रया सु मार्ग में भवि जीव लगाते।।
हे नाथ "नेतृ" नाम देव आप अर्चना।
कर रहा हूँ मैं त्रिकाल कर्म क्रन्दना।।४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं नेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगादि में सृष्टा हुए पालक प्रजा तुम्हीं।
षट् कर्म का उपदेश दे रक्षा करी तुम्हीं।।
जीवन प्रदाता नाथ का प्रणेतृ नाम है।
जो अष्ट द्रव्य पूजता कर्मों का नाश है।।४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राज्य-काल में ही आप शास्त्र रच दिये।
राजनीति न्याय छन्द सिद्धान्त गढ़ दिये।।
चक्री भरत अरु बाहुबलि सबको पढ़ाया।
"न्यायशास्त्रकृत" सु नाम पूज रचाया।।४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म ही है मोक्षमार्ग जीव हितंकर।
है अधर्म महापाप मार्ग दुखंकर।।
क्षेमंकरा हे नाथ आपकी सुदेशना।
अभयंकरा है नाम "शास्त्री सुपूजना।।४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं शास्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे धर्मपति हे जिनेश आपको नमूं।
तीन रत्न स्वामि की मैं वन्दना करूं।।
कारुण्य निधि स्वात्मलीन अर्चना सदा।
भाव भक्ति पूजता, हों कर्म सब बिदा।।४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चामर छन्द

धर्म में प्रवृत्त देव धर्म में सुरक्त हैं।
धर्म में नुरक्त देव धर्म में प्रशस्त हैं।।
धर्म की प्रभावना हि आपका सुध्येय हैं।
ध्येय से ही "धर्म्य" नाम आप उपादेय हैं।।४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म का हि वास है अधर्म का विनाश है ।
पुण्य पाप से प्रहीन धर्म के सुसाथ है ।।
क्षमादि धर्म धारका ''धर्मात्मा'' सु नाम है ।
अष्ट कर्म नाश हों, जु भावना सु साथ है ।।४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है चरित्र राधना हि धर्म की उपासना ।
तीर्थ है वही महा जिनेन्द्र देव भासना ।।
धर्मतीर्थ को किया, सु धर्म तीर्थकृत् जिना ।
पूजता हूँ अष्ट द्रव्य धर्म भाव हों सदा ।।४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बैल को जु वृष कहा, बैल चिह्न धार हैं ।
ध्वजा है वृष चिह्न में, वृषध्वज सु नाम है ।।
नाम ''वृषध्वज'' सदा पूजते जो चावसे ।
अष्ट कर्म का हो नाश, पार हों भवाब्धि से ।।४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्म को जु वृष कहा, धर्म के सुईश हो ।
भाव हिंसा न हो करुण्यता अधीश हो ।।
नाम ''वृषाधीश'' जो, पूज्यता को प्राप्त है ।
पूजता ले अष्ट द्रव्य अक्षता को प्राप्त हो ।।५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषाधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नरेन्द्र छन्द

पुण्य महा अर्हत पद दाता समकित धारी सेवें ।
पुण्यवान तीर्थंकर पद धर धर्मध्वज को बैवें ।।
'वृषकेतु' तुव नाम इसीसे, ध्वजा धर्म फहराई ।
आदि जिनेश्वर चरण की पूजा, चउगति दुःख नशाई ।।५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अस्त्र शस्त्र सब आयुध जग के, बाह्य शत्रु को हारे ।
पांच पच्चीस कषाय के झगड़े, धर्म सु शस्त्र नशावे ।।
नाम ''वृषायुध'' धारक जिनवर, जग में मंगलदायी ।
आठ द्रव्य से पूजो जिनजी, पूज्य बनावें भाई ।।५२।।
ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान रु दर्शन वाणी में तव, धर्म कि बिरखा बहती ।
धर्म अहिंसा सत्य अस्तेय, वर्षा निशदिन होती ।।
धर्म की वृष्टि काल सु सृष्टि, वीतराग शुध दृष्टि ।
नाम सु ''वृष'' शुभ बुधजन गाते, करें कषाय की कृष्टि ।।५३।।
ॐ ह्रीं अर्हं वृषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्म अहिंसा महा धर्म है, उसके स्वामी देवा ।
प्राणिमात्र में दया भाव है, हो देवों के देवा ।।
''वृषपति'' धर्मपति शुभनामा, पूजै निशदिन देवा ।
तव चरणन की पूजा से ही, होवे संसृति छेवा ।।५४।।
ॐ ह्रीं अर्हं वृषपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भविक जनों के कष्ट विहर्ता, उत्तम मार्ग सुधर्ता ।
भव्यों के पोषक जिनवर तुम, अष्ट कर्म के हर्ता ।।
''भर्ता'' नाम से पूज्य जिनेश्वर, शिवमारग के नेता ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करता, होऊं कर्म विजेता ।।५५।।
ॐ ह्रीं अर्हं भर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रजापती युगसृष्टा जिनवर, वृषभ अंक शुभचिह्ना ।
कहते हैं ''वृषभांक'' इसीसे, गणधर ऋषिवर ब्रह्मा ।।
आदि जिनेश्वर आदि विधाता, कर्म हनन्ता माने ।
पूजैं अष्ट द्रव्य लेकर में, अष्ट कर्म रिपु हाने ।।५६।।
ॐ ह्रीं अर्हं वृषभांकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुण्य हुआ है प्राप्त उदयमें, नाम वृषोद्भव कहते ।
पुण्य धर्म से जीव जगत में, अतिशय पद को लभते ।।
अथवा जिन जननी सपने में, बैल सु सुन्दर देखे ।
नाम ''वृषोद्भव'' जपो इसीसे, पूजै वो सुख पैखे ।।५७।।
ॐ ह्रीं अर्हं वृषोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चम-चम चमक रही है नाभि, हिरण्य समा शुभ भारी ।
विशुद्धि आत्म की प्रतीक यह, शोभा है अति न्यारी ।।
''हिरण्य नाभि'' जु नाम इसीसे, पूजो मंगलकारी ।
आठ द्रव्य से पूजा इनकी, कर्म हरे दुखकारी ।।५८।।
ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्य नाभये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञाता सत्यारथ के पूरण, लोक अलोक सु व्यापी ।
सप्त तत्व स्वरूप को जाने, आतम ज्ञान प्रकाशी ।।
यातैं नाम है ''भूतात्मा'' शुभ, अष्टम क्षिति के स्वामी ।
ध्याओ गाओ पूज रचाओ, सत्य स्वरूप प्रभासी ।।५९।।
ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भूत प्राणि को कहा जिनागम, तुम उनके प्रतिपाला ।
भूत जाति के देव विशेषा, उनके स्वामी आला ।।
''भूतभृत'' यह नाम जिनेशा, जग में देव निराला ।
पूजैं अष्ट दरब से निशदिन, जीवन हो मतवाला ।।६०।।
ॐ ह्रीं अर्हं ''भूतभृते'' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सत्य स्वरूप सतत है चिन्तन, जिनका जीवन सारा ।
दर्शन आदिक षोड़श भाकर, तीर्थंकर पद धारा ।।
नाम ''भूतभावन'' सु जिनेशा, पूजो अष्ट प्रकारा ।
चार गती के दुख से टारें, गुण अनन्त भंडारा ।।६१।।
ॐ ह्रीं अर्हं भूतभावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वंशों की उत्पत्ती जिनसे, वे प्रभु "प्रभव" कहाते ।
वृषभदेव इक्ष्वाकुवंश के, श्री सिरमौर सुहाते ।।
कुरु हरि नाथ यदू वंशों के, संस्थापक तुम देवा ।
पूजै जो भवि अष्ट दरब से, पावे सुख वो टेवा ।।६२।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवाम नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव का अन्त किया जिनवर तुम, नाम विभव सब गाते ।
अथवा तीर्थंकर पद धारक, जन्म विशिष्ट कहाते ।।
नाम "विभव" की पूजा रच लो, अष्ट द्रव्य सुखकारी ।
भाव भक्ति से पूजा प्रभु की, भव-भय संकटहारी ।।६३।।
ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

केवलज्ञान की दीप्ति सुराजै, तीन लोक सिरताजै ।
लोकालोक भासता जिनके, ज्ञान सु केवल छाजै ।।
"भास्वान्" नाम से पूजा जिन कि, सौ इन्द्रों ने गाई ।
सारभूत जिनवर की पूजा, गणधर ने थुतिगाई ।।६४।।
ॐ ह्रीं अर्हं भास्वते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव्य जीव तव चरण-कमल को हिरदै मांहि विराजैं ।
भक्त सु मन में सदा आपकी, वीतराग छवि साजै ।।
"भव" है यातैं नाम आपका, भव-अन्तक हो स्वामी ।
सुन्दर अर्घ चढ़ाकर पूजूं, बनने को निष्कामी ।।६५।।
ॐ ह्रीं अर्हं भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन है नाम किसी का भाई नाम जिना तुम जानो ।
मूरत जो जिनराज कि शोभे, जिन स्थापना मानो ।।
क्षीणमोह जिन द्रव्य जिनेशा, उनकी पूजा ठानो ।
समवसरण में "भाव" जिनेशा, नमो नमो दुख हानो ।।६६।।
ॐ ह्रीं अर्हं भावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाथ आप तो वीतराग हैं, राग-द्वेष ना धारा।
फिर भी पूजक ने भक्ती से, अपना दुख सब टारा।।
नाम ''भवान्तक'' पूज्य आपका, भव का अन्त महन्ता।
पूजै अष्ट दरब से जो भी, पूज्य होय भगवन्ता।।६७।।
ॐ ह्रीं अर्हं भवान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ गरभ में आने के ही, मास सु छ के पूर्वा।
माता आंगन पन्द्रह मासा, बरसे रत्न अपूर्वा।।
काल चतुर्थे चौदह कोटी, बरसे रत्ना ऐसे।
''हिरण्यगर्भा'' नाम इसीसे, नर-नारी सब हरषे।।६८।।
ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात गरभ की सेवा करती श्री ह्री आदिक देवी।
धृति कीर्ती अरू बुद्धि लक्ष्मी, शान्ति पुष्टि शुभ देवी।।
गर्भ की सेवा करने से ही, नाम ''श्री गर्भ'' पाया।
पूजो भविजन अष्ट दरब से, मिलता सुख मन चाहा।।६९।।
ॐ ह्रीं अर्हं ''श्रीगर्भाय'' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक का राज्य जिनेसुर, तुमने ही शुभ पाया।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र सभी ने, चरणों शीश झुकाया।।
'प्रभूत विभव' यह नाम इसीसे, गणधर मुनिवर गाया।
पूजो भविजन मन-वच तन से, पिओ सुखामृत प्याला।।७०।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतविभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

नहीं जनम अब आपका, ''अभव'' नाम सुखदाय।
अष्ट दरब तैं पूजते, अष्टम क्षिति शुभ पाय।।७१।।
ॐ ह्रीं अर्हं अभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

नहीं देखना चाह, स्वयं योग्यता आप में।
होवें मंगलकार, नाम ''स्वयंप्रभ'' को जपो।।७२।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''प्रभूत आत्मा'' नाम, सत्ता लक्षण युक्त हैं।
होवे मुक्ति सु धाम, सिद्ध सरूप जजौं सदा।।७३।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छन्द (२६मात्रा)

भूत कहते प्राणियों को, स्वामि उनके आप हो।
भूत जातिक देवता से, पूज्य जिनवर आप हो।।
'भूतनाथ' सु नाम सार्थक इसलिये गणधर कहा।
पूजता हूँ भक्ति से मैं, धारकर शुभ हर्ष हो।।७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक चौदह राजु गाया, ज्ञान केवल में महा।
नारकी हैं अधोलोका, देव ऊरध में रहा।।
मध्य में मनु पशु रहते, स्वामि सबके आप हो।
जगतप्रभु यह नाम सार्थक, पूजता नित चाव सो।।७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगतप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनधर्म अनादि नन्ता, है सनातन ये महा।
धर्म सृष्टि के सुकर्ता, युगपुरूष जिननाथ हा।।
सर्वजग की आदि सृष्टि, के विधाता आप हो।
नाम ''सर्वादि'' को पूजो कर्म सारे नाश हों।।७६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श केवल के सु स्वामि, वीतरागी सन्त हो।
सर्व जग हि सब प्रमाणों, से लखो सुमहन्त हो।।
'सर्वदृक शुभ नाम तेरा, कर्म घाती चूर हो।
पूजता हूँ भाव से मैं, अष्टगुण भरपूर हो।।७७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि कू[1] या दृष्टि सू[2] हो, जीव शत्रु मित्र हो ।
एक इन्द्रिय जीव हो या, जीव पंचेन्द्रिय रहो ।।
दे दिया उपदेश हित का, दया गुणधारी अहो ।
पूजता हूँ ''सार्व'' को मैं लोक में ना भ्रमण हो ।।७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सार्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीव पुद्गल चर कहे हैं, द्रव्य धर्मादि अचर ।
चर अचर इनको विशेषा, जानते जो युगपत् ।।
द्रव्य गुण पर्याय सबको, सर्वथा युगपत् लखें ।
आराध्य हैं ''सर्वज्ञ'' वे, कर्म मेरे सब हरें ।।७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षायिका जो शुद्ध दर्शन, गाढ़ परमा पूर्ण हैं ।
आत्म दर्शन ज्ञान वृत्ति, में सदा जो दक्ष हैं ।।
सांख्य बौद्ध रु जैनदर्शन नायका जो पूज्य हैं ।
''सर्वदर्शन'' नाम जिनका, वंदना मम नित्य है ।।८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निजरूप में वो लीन हैं, बस एक हैं परमातमा ।
ज्ञान में जिनके चराचर, बस रहा जीवातमा ।।
''सर्वात्मा'' तव नाम शुभ जु, वन्दना तिरकाल है ।
ज्ञानी बनूं ध्यानी बनूं, भावना बस साथ है ।।८१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चार गति के प्राणियों के, नाथ स्वामी आप हो ।
लोक के सु अधीश जिनवर, अधिपती भी आप हो ।।
नाम '' सर्वलोकेश'' देवा, वन्दना शत बार है ।
पूजता हूँ भाव से मैं, भक्ति ही बस सार है ।।८२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१. दृष्टि कू-मिथ्यादृष्टि, २. दृष्टि सू-सम्यग्दृष्टि ।

दोहा

ज्ञाता हैं सब लोक के, वन्दन शत-शत बार।
नाम ''सर्ववित्'' को जजूं, मिले न फिर संसार।।८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१६ मात्रा रूप चौपाई

पंच परावर्तन संसारा, जीत लियो तुम सर्व प्रकारा।
यातै नाम सु 'सर्वलोकजित्' पूजै वो हो जाय आत्मवित्।।८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्धड़ी छन्द

कही सुन्दर है गति प्रशस्त,
हंसा गज सम शुभ चाल शस्त।
जिन देव गती शोभन महान,
सुन्दर जिनराज ''सुगति'' सुनाम।।
पूजूं मैं दरब सु अष्ट हाथ,
मेरी भव बाधा मेटि नाथ।
संसार समन्दर को सु तार,
विनती है मेरी बार-बार।।८५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है द्वादशांग सुश्रुत जिनेश,
उत्तम अबाध है अर्थशेष।
तव नाम है ''सुश्रुत'' हे गणेश,
पूजैं भक्ती धर श्री महेश।।
पूजूं मैं दरब सु अष्ट हाथ,
मेरी भव बाधा मेटि नाथ।
संसार समन्दर को सु तार,
विनती है मेरी बार-बार।।८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुनते विनती भक्तों कि नाथ,
अरजी प्रभु कर्ण पुटों सु जाय।
सुन-सुन करते सब दुःख दूर,
यातैं तव "सुश्रुत" नाम शुद्ध।।
पूजूं मैं दरब सु अष्ट हाथ,
मेरी भव बाधा मेटि नाथ।
संसार समन्दर को सु तार,
विनती है मेरी बार-बार।।८७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिननाथ कहें उत्तम सु बैन,
जो सप्तभंगमय जड़े रत्न।
ना पूर्वापर है कहीं विरोध,
है नाम "सुवाक्" ही एक पूज्य।।
पूजूं मैं दरब सु अष्ट हाथ,
मेरी भव बाधा मेटि नाथ।
संसार समन्दर को सु तार,
विनती है मेरी बार-बार।।८८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जीव शरण में आप आय,
जीवादि तत्त्व शुध को सुध्याय।
शुधि तत्वज्ञान निज में लहाय,
यातैं सु "सूरि" शुभनाम गाय।।
पूजूं मैं दरब सु अष्ट हाथ,
मेरी भव बाधा मेटि नाथ।
संसार समन्दर को सु तार,
विनती है मेरी बार-बार।।८९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूरये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्धड़ी

बारह इक सौ है कोटि जान,
हैं लाख तिरासी सहस अठान।
पद पांच नमूं मैं द्वादशांग,
तिनके ज्ञाता अरहंत जान।।
सम्पूरण श्रुत धारक जिनेश,
है नाम "बहुश्रुत" जो विशेष।
पूजैं जो भविजन तीनकाल,
जीवन में होवे वो निहाल।।९०।।

ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रख्यात जगत में तुम जिनेश,
धरणेन्द्र इन्द्र में तुम विशेष।
"विश्रुत" है नाम तुअ सौख्यदाय,
पूजै भवि कर्मों को नशाय।।
पूजूं मैं दरब सु अष्ट हाथ,
मेरी भव बाधा मेटि नाथ।
संसार समन्दर से सुतार,
विनती है मेरी बार-बार।।९१।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव चरण पादाब्ज दोय,
फैले सब लोकाकाश माय।
केवल दिनकर की प्रखर रश्मि,
संपूर्ण लोक में करे प्रकाश।।
यातैं सु "विश्वतः पाद" नाम,
पूजो मन-वच-तन कर प्रणाम।
पूजत त्रिकाल सब हो निहाल,
यह है जिनभक्ती का कमाल।।९२।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्रुतःपादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु वात-वलय है विश्वशीर्ष,
है श्री जिनेश का मुक्ति शीश।
है "विश्वशीर्ष" यातैं जु नाम,
तिनको मेरा नित हो प्रणाम।।
पूजूं मैं दरब सु अष्ट हाथ,
मेरी भव बाधा मेटि नाथ।
संसार समन्दर को सु तार,
विनती है मेरी बार-बार।।९३।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्री ने भेदे हैं शुचिश्रव,
शुभ करणों शोभते हैं कुण्डल।
यातैं है "शुचिश्रव" नाम आप,
पूजूं सु भक्ति धर हने काम।।
पूजूं मैं दरब सु अष्ट हाथ,
मेरी भव बाधा मेटि नाथ।
संसार समन्दर को सु तार,
विनती है मेरी बार-बार।।९४।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुचिश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव धनी जु अनन्त ज्ञान,
शुभ धारत हैं मुख सहस जान।
है सहस शीर्ष शुभ नाम आप,
पूजा कर लो नित करो जाप।।
पूजूं मैं दरब सु अष्ट हाथ,
मेरी भव बाधा मेटि नाथ।
संसार समन्दर को सु तार,
विनती है मेरी बार-बार।।९५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

ढाई द्वीप में एक सौ सत्तर हैं साकेत।
तीर्थंकर उपजैं तहां, यह जिन वचन सुलेख।।

(पुष्पाञ्जलिं)

शंभु छन्द

मति-श्रुत अवधि के धारी ने,
जब नगर अयोध्या जन्म लिया।
तिहुं लोक हुआ क्षोभित भारी,
सुरगण अचरज में भ्रमित हुआ।।
कल्पवासि घर घंट अनाहद,
ज्योतिष घर में हरिनाद हुआ।
भवनवासि के शंख धुनि अरु,
व्यन्तर के घरमें पटह बजा।।१।।
आसन कम्पा सौधर्म इन्द्र,
तिन अवधिज्ञान में जन्म लखा।
धनपति कुबेर ने मायामयि,
सुन्दर हाथी निरमाण किया।।
गजराज के बत्तिस मुख शोभे,
मुख एक-एक पे दन्त आठ।
दांतों पर सरवर जल लहरें,
सरवर पर कमलिनि कमल ठाठ।।२।।
कमलों पर नर्तकी नृत्य करें,
नवरस मय हाव जु भाव धरें।
मणिमय किंकणियां धुन बाजे,
घण्टा घन चंवर धुजा फहरें।।

गजराज इरावत महसुन्दर,
सुरराज शची सह शोभ रहे।
मधिलोक अकाश में देव नचे,
देवों के मन सब हरषाये।।३।।
परिवार सुरों का आय अयोध्या,
नगरी की परिक्रम तीन करे।
सौधर्म शची जननी सन्मुख,
तब गुप्त रूप में जाय खड़े।।
जिन माता सुख निद्रा सुलाय,
मायामयि बालक रख देती।
जिन बाल प्रथम दर्शन पाकर,
शचि समकित धारी हो लेती।।४।।
जिन भक्ति भावना में भीगी,
वह एका भवतारी होती।
तब इन्द्र सहस लोचन करके,
देखें प्रभु को निज हाथ गहे।।
ईशान इन्द्र सिर छत्र धरे,
अरु सनत महेन्दर चंवर ढुरे।
सहस निनानव योजन लांघे,
क्षण भर में मेरु शिखर पहुंचे।।५।।
चन्द्राकार सु पांडुक शिल पर,
थापै जु बाल जिनेश्वर लाय।
क्षीर सु सागर जल भर लावै,
देव जु हाथ ही हाथ पठाय।।
इन्द्र सौधर्म रु शची सभी मिल,
करें अभिषेक जु मंगल गाय।
सहस एक अरु आठ कलश से,
जिनवर का अभिषेक रचाय।।६।।

जय-जयकार गगन में होवे,
नाचे रु गाय सुरासुर आय।
साढ़े बारह कोटी बाजे,
बजने लगे सु वहां ततकाल।।
देव, बाल जिनवर अंगुष्ठ में,
दुग्धामृत रख मन प्रमुदाय।
इन्द्राणी शृंगार करे प्रभु,
देव पुनीत भूषा पहराय।।७।।
जनमत दश अतिशय के धारी,
मेरु शिखर अभिषेक रच्यो।
फिर इन्द्र लाय साकेत पुरी,
जिन मात कु बालक सौप दियो।
जन्म कल्याणक जिनवर महिमा,
सब गणधर मुनिवर गुण गावें।।
जो जन्म कल्याणक पूज करे,
वह मेरु शिखर पे पुजवाये।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यादिशतनाम धारक श्री वृषभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन सहसनाम की पूजा, श्रद्धा धर जो करते हैं।
यश वैभव कीरत बढ़ती है, ज्ञान महानिधि लहते हैं।।
नवनिधि चौदह रत्न प्राप्त कर, मुक्तिरमा को वरते हैं।
शाश्वत आत्मानन्द बरसता, ज्ञान सुधारस पीते हैं।।

(पुष्पाञ्जलिं)

●

अथ तृतीय कोष्ठ
स्थविष्ठादि शतक नामपूजा

स्थापना

(चौबोला-छन्द ३० मात्रा)

हे स्थविष्ठ शत नाम सु धारक, सिरि जिनवर मम उर आओ ।
पाप ताप से पीड़ित मुझ को, सुखद शान्ति का बोध करो ।।
आव्हानन संस्थापन करके, मन मन्दिर में थापूंगा ।
आत्मशोधना करके जिनवर, पंच परम पद पाऊंगा ।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनामधारक वृषभ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनामधारक वृषभ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनामधारक वृषभ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक

(चाल—सोलह कारण पूजा)

सुवरण झारी शीतल नीर, वीतराग को पूजो धीर ।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय ।।
स्थविष्ठ आदिक शतनाम, पूजो श्री जिनवर गुण खान ।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय ।।१।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

केशर मलयागिरि का घीस, जिन चरणाम्बुज पूजो नित्य ।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय ।।
स्थविष्ठ आदिक शतनाम, पूजो श्री जिनवर गुण खान ।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय ।।२।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुक्ताफल सम तन्दुल लाय, जिनवर आगे पुञ्ज चढ़ाय ।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय ।।
स्थविष्ठ आदिक शतनाम, पूजो श्री जिनवर गुण खान ।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय ।।३।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित मनहर पुष्प गुलाब, पादसरोरुह जिन सु चढ़ाय ।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय ।।
स्थविष्ठ आदिक शतनाम, पूजो श्री जिनवर गुण खान ।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय ।।४।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ताजा खाजा सरस सु क्षीर, कनक कटोरि चढ़ाओ भूर ।
सकल सुख होय, दुख-दारिद्र कभी ना होयं ।।
स्थविष्ठ आदिक शतनाम, पूजो श्री जिनवर गुण खान ।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय ।।५।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वाति कपूरा तम क्षयकार, पूजूं जिनवर केवलधार ।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय ।।
स्थविष्ठ आदिक शतनाम, पूजो श्री जिनवर गुण खान ।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय ।।६।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

खेऊं धूपायन में धूप, अष्टकर्म की उड़े जु धूल।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय।।
स्थविष्ठ आदिक शतनाम, पूजो श्री जिनवर गुण खान।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय।।७।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव सन्तरा नीबू आम, थाल रत्न का लाव-चढ़ाय।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय।।
स्थविष्ठ आदिक शतनाम, पूजो श्री जिनवर गुण खान।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय।।८।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट दरब का अर्घ बनाय, थाल भरा जिनदेव चढ़ाय।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय।।
स्थविष्ठ आदिक शतनाम, पूजो श्री जिनवर गुण खान।
सकल सुख होय, दुख दारिद्र कभी ना होय।।९।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थविष्ठ शतनाम जिन, तिहुं जग शान्ति करेय।
आतम शान्ती हो सदा, शान्ती धारा श्रेय।।

(शान्तये शान्ति धारा)

हरसिंगार सु पुष्प, सुरभित कमल जु मोगरा।
श्री स्थविष्ठ शुभ देव, पुष्पाञ्जलि करता सदा।।

(पुष्पाञ्जलिं)

अथ प्रत्येक अर्घ

सखी छन्द

(तर्ज आलोचना पाठ)

चक्री गणधरादि थूला, पद परमेष्ठी है स्थूला।
तुम वास किया है उसमें, नाम स्थविष्ठ जपा मैंने।।
'स्थविष्ठ' सु नाम के धारी, पूजा जिनराज तिहारी।
पूजै तैं पाप नशावे, हमको भव पार लगावें।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयमधर श्रेणी माडे, थिरता निज आतम ठाड़े।
ज्ञानादिक गुणकर वृद्धा, मुक्ति थान रहें बन सिद्धा।।
''स्थविर'' शुभ नाम के धारी, पूजा तिरकाल तिहारी।
पूजैं भवि पाप नशावें, अविचल पद को तब पावें।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गुण अनन्त से ज्येष्ठ, अतिशय हैं तुम में प्रशस्त।
तुम यातैं लोक प्रधाना, पूजत पावैं शिव धामा।।
जिन ''ज्येष्ठ'' सु नाम के धारी, पूजा जिनराज तिहारी।
पूजैं तैं पाप नशावें, हमको भव पार लगावें।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार सु तारक देवा, तुमसे नहीं अग्रज अन्या।
तुम गुण सु अनन्त स्पष्टा, पाया शुभ नाम है पृष्ठा।।
जिन ''पृष्ठ'' सु नाम के धारी, वन्दन है नाथ तिहारी।
पूजैं तैं पाप नशावें, संसार उदधि तर जावें।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं पृष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर चक्री खेचर वल्लभ, गुण गाते गणधर गुणधर ।
पद श्रेष्ठ धरें गुण ईशा, नाम प्रेष्ठ मह जगदीशा ।।
'प्रेष्ठ' नाम कहा गुणकारी, हर लो प्रभो विपद हमारी ।
चरणों में मस्तक नावें, संसार उदधि तिर जावें ।।५।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानों में केवलज्ञान, है यही वरिष्ठ प्रधान ।
जिन केवल बुद्धि विस्तीर्ण, वरिष्ठ धी गाया मुनीन्द्र ।।
''वरिष्ठ धी'' नाम के धारी, हरो कुमति हमारी सारी ।
चरणों में अरज हमारी, मिले केवल बोधि प्यारी ।।६।।
ॐ ह्रीं अर्हं वरिष्ठधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ध्यान शुकला थिरता पाई, अंग आठ हलचल नाई ।
ज्येष्ठ मुकति पद के ताईं, नाम स्थेष्ठ भाओ भाई ।।
नाम 'स्थेष्ठ' धीरज धारी, ध्यान धारें भवि सुखकारि ।
नित पूजूं मन-वच काई, मन चंचलता मिट जाई ।।७।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्थेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इक अन्तर मुहूरत माई, द्वादशांग वान पढ़ जाई ।
श्रुत केवलि गणधर देवा, उनके गुरु आप गरिष्ठा ।।
'गरिष्ठ' जु नाम के धारी, मेटो भव संतति म्हारी ।
मैं पूजूं मन-वच-तन से, तारो संसार उदधि से ।।८।।
ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विद्याकरि लोक में पुष्ट, तत्वज्ञान ज्योति जुष्ट ।
तुम गुण अनन्त बंहिष्ठा, जग जीव सभी हैं लघिष्ठा ।।
'बंहिष्ठ' जु नाम के धारी, मेटो ममता जग भारी ।
तत्त्व ज्ञान निधि कब पाऊं, चरणों में शीश झुकाऊं ।।९।।
ॐ ह्रीं अर्हं बंहिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम नन्त चतुष्ट प्रधारा, दर्श ज्ञान शकत सुख आला ।
तुम सा गुण अन्य न पाया, यातै तुअ श्रेष्ठ सु गाया ।।
नेष्ठा जग प्रभो श्रेष्ठा, ज्येष्ठा में भी तुम श्रेष्ठा ।
'श्रेष्ठा' तव नाम जपूंगा, संसार उदधि तर लूंगा ।।१०।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तिरकाल अवस्था जाने, त्रैलोक्य चराचर भानें ।
हे रूप अर्हंत सुहाना, गुण एक न कोय पिछाना ।।
नाम 'अणिष्ठ' गुण के धारी, अनुपम सूक्षम हो भारी ।
नाथ पूजा करता थारी, पूजा भवताप मिटाती ।।११।।
ॐ ह्रीं अर्हं अणिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वाणी जिनवर हितकारी, संसार समन्दर तारी ।
सुन समवसरण उपदेशा, संयम धरते भव्येशा ।।
खाली ना जाती वाणी, तिरते सुन लाखों प्राणी ।
'गरिष्ठगी' नाम है यातै, पूजै तै पाप नशाते ।।१२।।
ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

संसार चतुर्गति माना, उसको ही विश्व बखाना ।
तुम विश्व विनाश किया है, विश्वमुट् शुभ नाम लिया है ।।
'विश्वमुट्'' शुभ नाम के धारी, विनती प्रभो आज हमारी ।
तुम सम की पदवी पाऊं, यातैं शुध अर्घ चढ़ाऊं ।।१३।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वमुटे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्मतीर्थ आदी सृष्टा, अभ्युदय सुख के प्रवर्ता ।
युग आरम्भ जीव अनाथा, हुए नाथ अनाथ सुनाथा ।।
विश्वसृष्टि आद्य विधाता, यातैं तुम विश्व सु सृष्टा ।
'विश्व सृष्ट' सुनाम धारी, पूजूं वसु दरब ले थाली ।।१४।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वसृजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अधोलोक स्वामि धरणेन्द्र, स्वामी मध्यलोक नरेन्द्र ।
सुरलोक सु ईश सुरेन्द्र, जिन तीनों लोक महेन्द्र ।।
'विश्वेट्' नाम गुणकारा, वन्दन हो देव स्वीकारा ।
पूजूं मैं अष्ट प्रकारा, प्रभो पाप हरो दुखकारा ।।१५।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेटाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो शरण तिहारी आया, संसार असार बताया ।
कैसे हो विश्व विरक्ति, बतलाकर कीनी भुनक्ति ।।
'विश्वभुक्' शुभ नाम धारी, वन्दन शत बार हमारी ।
पूजा का थाल चढ़ाऊं, चरणों में शीश झुकाऊं ।।१६।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विश्व के तुम नायक देवा, दिखलाया सु मारग छेवा ।
शुभ कर्म में जीव लगाये, श्रावक का धरम सिखाये ।।
'विश्वनायक' यातैं नामा, पूजै ते हो कल्याणा ।
जिन अष्ट दरब की पूजा, इस सम नहि फल है दूजा ।।१७।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आतम विशवास प्रगाढ, अरहत पद उसका निशान ।
अथवा तुम केवलज्ञानी, यातै हो विश्वनिवासी ।।
'विश्वासी' नाम प्रचारा, हर लो भ्रम भाव हमारा ।
वसुविध वसु दरब चढ़ाऊं, परमानंद पद पा जाऊं ।।१८।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वासिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षय घाति करम जब कीना, अरहत पद तुमने लीना ।
लोक पूरण हो समुद्घात, विश्वरूप जिनेश्वर आप ।।
विश्वरूपात्मा जिनदेवा, विश्व में व्यापी तुम येवा ।
मैं पूजूं अष्ट प्रकारा, मेटो भव भ्रमण हमारा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूपात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जेता हैं विश्वविजेता, संसार महावन भेत्ता।
विश्वजित् शुभ नाम प्यारा, पूजो भव से सु किनारा।।
विश्वजित् शुभ नाम पूजा, हरती सब पाप का कूड़ा।
वसुविध वसु दरब चढ़ाऊं, परमानन्द पद पा जाऊं।।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

मूल उखाड़ा वृक्ष, अन्तक जीता आपने।
'विजितान्तक' शुभनाम, मोक्ष परम पद पाइया।।२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं विजितान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद पाया शिरताज, भव विशिष्ट तीर्थंकरा।
संसृति कीना छेद, नाम 'विभव' पूजो सदा।।२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव दवाग्नि को नीर, भवभय हीन महाजिना।
तीर्थ प्रवर्तक वीर, 'विभय' नाम अर्चा करूं।।२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं विभयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द हरिगीति

लछमी विशिष्ट सु सामी जिनवर, मुक्त लछमी सेवते।
जिन भक्त को तुम जिन बनाकर, मुक्ति नारी देवते।।
ऐसे जिनेसुर ''वीर'' नामा, भक्ति धर हम पूजते।
वसु कर्म विनशे सुख सु विलसे, भाव हम संद्योतते।।२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहि राग द्वेष दवाग्नि जलती, शोक हो कैसे वहां।
वीतशोक विशोक जिनवर, पूजते गणधर महा।।
''विशोक'' नाम जिनेन्द्र पूजूं, दरब आठ संजोयके।
वन्दना का फल यही बस, शोक ना जीवन बसे।।२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं विशोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीरज अतुल है वीतरागी, वृद्धता है ज्ञान की।
किंचित् जरा का लेश भी ना, निर्जरा दासी बनी।।
प्रनाम "विजर" सुसार्थ यातैं, अर्चना गुणधार की।
पूजा करो नित चाव धर उर, है कला जिनमार्ग की।।२६।।
ॐ ह्रीं अर्हं विजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राचीन हो अतिशय सु वृद्धा, जीर्ण ना होओ कभी।
परम आनन्द में जो केली, कर रहे सब काल ही।।
तुअ नाम"अजरन्" है इसीसे, वन्दना शतबार है।
यह अजर पद मम प्राप्त होवे, भावना बस साथ है।।२७।।
ॐ ह्रीं अर्हं अजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्द सहज विराग लहरें, कर रहीं कल्लोल हैं।
आत्मा सुरस आस्वादियों में, भर रहीं रस घोल है।।
ओ विरागी ! प्रकृष्ट रागी, राग कणिका हीन हो।
जिनदेव नाम विराग पूजो, वीतरागी एक हो।।२८।।
ॐ ह्रीं अर्हं विरागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल ज्ञान की सुरभि कलिका, कर रही क्रीडा जहां।
सुरत क्रीडा ना रुचै तहँ, आत्म विरती[1] है सदा।।
तुम "विरत" नामा देव की, नित अर्चना शत बार है।
शुध "विरत" की सुध बोधि होवे, भावना बस साथ है।।२९।।
ॐ ह्रीं अर्हं विरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है बाह्य लछमी समवसृत की, लौटती चरणों तथा।
लछमी चतुष्टय अन्तरंगा, शोभती आतम रंगा।।
परिग्रह महाधारो तथापी, मूरछा ना आपके।
जिनवर "असंग" सु नाम यातैं, अर्चना दिन रात है।।३०।।
ॐ ह्रीं अर्हं असंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकैक इन्द्रिय लोलुपी भी, करी[२] आदिक दुख सहें ।
पंचेन्द्रियों आसक्त मानव, घोर नरकों दुख लहे ।।
तुम विषय को विष सम लखा अरु, वासना सब त्याग दी ।
यातैं 'विविक्त' सु नाम जिनवर, अर्चना दिन रात ही ।।३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं विविक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग पुण्यपाप कि कर्मलीला, तत्व को जाना नहीं ।
पुण्यातमा के पुण्य से नित, पाप ईर्ष्या बढ़ रही ।।
तुम राग द्वेष विहीन जिनवर, साम्यरस की हो मही ।
शुभ ''वीतमत्सर'' नाम जिनवर, पूजता सुख की छवी ।।३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीतमत्सराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो विनय आदिक गुण सु मण्डित, गुरु चरण के दास हैं ।
उनका समूह जु शिर झुकाता, पादपद्मों आपके ।।
तुम विनेय[३]-जनता-पंकजों के, हेतु सूर्य समा प्रभो ।
तुम ''विनेय जनता बन्धु'' नाम, पूजता शत बार हो ।।३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं विनेय जनता बन्धवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो ज्ञान दर्शन आवरण अरु, रहस अरि से हीन हैं ।
कल्मष हैं घाति कर्म चारों, क्षय किया श्री वीर ने ।।
कल्मष विनाशा मूल से जिनदेव की नित अर्चना ।
नाम 'विलीनाशेष'' कल्मष, वन्दना से बन्ध ना ।।३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं विलीनाशेषकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विशिष्ट योग जु मिला जिनवर, काम नाहि वियोग का ।
मुक्ति वधू शुध योग सुन्दर, है अनन्तों काल का ।।
वस्तू अनिष्ट वियोग कीया, इष्ट का संयोग पा ।
''वियोग'' नाम है परम मनहर, अर्चना से बन्ध ना ।।३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं वियोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१ विरती–विशेष रति । २. करी--हाथी । ३ विनेय --शिष्य

ध्यान शुभ अरु शुद्ध हैं जो, मुक्ति के कारण महा ।
यम नियम आसन धारणादिक, योग के अठ अंग हा ।।
ध्यान के ज्ञाता जिनों को, ''योगविद्'' गणधर कहा ।
मैं पूजता शुभ अष्ट द्रव्यों, अर्चना से बन्धना ।।३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोक त्रय में जु नन्त वस्तू, द्रव्य गुण पर्ययमयी ।
युगपत् चराचर जान लीनी, ज्ञान की महिमा यही ।।
निज आतमा का ज्ञान दर्शन,रूप गोचर आपके ।
'विद्वान्' नाम प्रसिद्ध पूजूं, अर्चना कल्मष हरे ।।३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं विदुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध नय से सकल जीवा, सिद्ध सम हैं जानिये ।
व्यवहार नय से कर्म लागे, सत्य को पहिचानिये ।।
जग जीव पाप अधर्म डूबे, मोक्षमार्ग सुझावते ।
जिनवर विधाता नाम इससे, अर्चते पातक भजें ।।३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं विधात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चारित्र निधि अक्षुण्ण जिनवर, दोष किंचित् ना लगें ।
षट् जीवनि रक्षा कि सुविध में, आप ही जिनवर पगें ।।
घाती अघाति सकल क्षय विधि, श्री जिनेश बखानिया ।
तव 'सुविधि' नाम सुपूज्य यातैं, कर्म सब हि विनाशिया ।।३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुविधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द—जोगीरासा

शुक्लध्यान चिन्तक जिनवर ने, कर्म घातिया हाने ।
ज्ञान दिवाकर जोत जलाकर, सर्व पदारथ जाने ।।
'सुधी' नाम से पूज्य जिनेशा, अर्चन करने आया ।
सुधी प्राप्त हो मम आतम में, यही भावना लाया ।।४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

निज सरूप स्नान किया, गोता निज में लाग।
'सुत्वा' नाम सु पाइया, पूजत कर्म नशाय।।५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुत्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शचिपति कहते इन्द्र को, तिनसे पूजित आप।
सूत्रामपूजित नाम है, पूजूं शीश झुकाय।।५२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूत्रामपूजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानयज्ञ में हो कुशल, शुद्ध आत्म लवलीन।
यातै ऋत्विग् नाम है, पूजत हो भव क्षीण।।५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋत्विजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान यज्ञ स्वामी विभो, तुम सम गुणी न कोय।
'यज्ञपती' की अर्चना, करो भविक मद खोय।।५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिगीति

भवन सु इन्द्र चालीस जानो, व्यन्तरा के तीस दो।
हैं कल्पवासी बीस चार जु, ज्योति देवा दोय हों।।
जो मनुज तिर्यक् चक्री सिंह, इन्द्र शत से वन्द्य है।
शुभ ''यज्य'' यातै नाम जिनवर, पूजते जगवश्य है।।५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मुख्य अंग तुम पूज्य में, तुम बिन पूजा नाहि।
'यज्ञांगम्' शुभ नाम को, पूजूं आठों याम।।५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरण कहा है विष समा, अमर भये जिन आप।
यातै 'अमृत' नाम है, पूजों आठों याम।।५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान यज्ञ में होम की, अशुद्ध परिणति आप।
यातैं 'हवि' शुभ नाम है, पूजो आठ याम।।५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं हविषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबोला ३० मात्रा (१६-१४)

गगन समा निरलेप सुच्छ अरु, विशाल मूरति है जिनकी ।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, मुद्रा है तीर्थंकर की ।।
''व्योममूर्ति'' यह नाम मनोहर, गणधर मुनिवर ने गाया ।
अष्ट दरब का थाल सजाकर, पूजा करने मैं आया ।।५९

ॐ ह्रीं अर्हं व्योममूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है वरण गन्ध स्पर्श हीन जु, रस विहीन महासुखदाय ।
मूरत हीन अमूरत जिनवर, नाम जपूं जो है दुखहार ।।
'अमूर्त आत्मा' नाम मनोहर, मुनि गणधरा नित गाईया ।
शुध द्रव्य अष्ट सु थाल लेकर, तुअ पूजने हम आइया ।।६०

ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन पाप पंक कलंक नाशा, अरि मोह विजयी हो गये ।
वसु लेप नहीं किंचित् रहा जिन, वसु गुणों शुभ मंडित भये ।।
'निर्लेप' है शुभ नाम मनहर, मुनि गणधरा नित गाईया ।
शुभ अष्ट द्रव्य सु थाल लेकर, तुअ पूजने हम आईया ।।६१

ॐ ह्रीं अर्हं निर्लेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन देह है अति परम पावन, ज्योतिमय प्रभो निरमला ।
आहार ले नीहार ना हो, यह बात इक अचरज मया ।।
है मूत्र भी ना विष्ठा जिनके, कफ नहीं नहीं स्वेद भी ।
निर्मल सु आतम विमल अतिशय, तुम नाम 'निर्मल' गुणमयी ।।६२

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भूधर समा तुम अडिग जिनवर, व्रत साधना की शान हो ।
परीषह सहे उपसर्ग चारों, नित ध्यान शुध में दिढ़ रहो ।।
तुम नाम 'अचल' जु महा मनहर, मुनि गणधरा नित गाईया ।
शुध द्रव्य अष्ट सु थाल लेकर, तुअ पूजने हम आइया ।।६३

ॐ ह्रीं अर्हं अचलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हैं चन्द्र की ज्योति समा जो, शुभ शान्त अनुपम लस रहें ।
चन्द्र मूरत शुभ चन्द्रकान्ती, चन्द्र छवि सम तुम दिप रहे ।।
है 'सोममूर्ति' जु नाम मनहर, मुनि गणधरा नित गाईया ।
शुभ अष्ट द्रव्य सु थाल लेकर, तुअ पूजने हम आइया ।।६४

ॐ ह्रीं अर्हं सोममूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्वांग से जिनके सदा ही, बह रही करुणा नदी ।
प्रिय सौम्यता अमृत झरे है, दुठ क्रूरता नश ही गई ।।
'सु सौम्य-आत्मा' जु नाम मनहर, मुनि गणधरा नित गाईया ।
शुभ अष्ट द्रव्य सु थाल लेकर, तुअ पाद कमल चढ़ाइया ।।६५

ॐ ह्रीं अर्हं सुसौम्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम भव्य कमलों को विकासा, शुभ सूर्य सम हो उज्ज्वला ।
तुम हो प्रतापी हम प्रचण्डा, प्रज्ञान किरण से तमहरा ।।
तव 'सूर्यमूर्ति' जु नाम मनहर, मुनि गणधरा नित गाईया ।
शुभ अष्ट द्रव्य सु थाल लेकर, तुअ पाद-कमल चढ़ाइया ।।६६

ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनदेह कान्ति सु अमित ऐसी, जो सूर्य किरणें लाजती ।
विज्ञान केवल अमितप्रभ से, त्रैलोक्य नित्य प्रकाशती ।।
तव 'महाप्रभ' शुभ नाम मनहर, मुनि गणधरा नित गाईया ।
शुभ अष्ट द्रव्य सु थाल भरके, जिन पाद कमल चढ़ाइया ।।६७

ॐ ह्रीं अर्हं "महाप्रभाय" नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कषाय सर्प से दंष्ट्र विश्व कु, मन्त्र राज से दूर करा ।
दे उपदेश मन्त्रवत् जिनवर, विष अमृत सम तुम ही किया ।।
मंत्रमुग्ध करती तव वाणी, सुभग "मन्त्रवित" नाम धरा ।
शुभ अष्ट दरब का थाल सजाकर, पाद सु पद्म में जिन कु चढा ।।६८

ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान जगाने कर्म भगाने, वाणी है जिन मंत्रमयी ।
प्रथम जु करण चरण अनुयोगो, द्रव्य गूंथी सु सुखदमयी ।।
मन्त्रकृत्' शुभ नाम है मनहर, मुनिवर गणधर ने गाया ।
अष्ट द्रव्यका थाल सजाकर, पूजा करने मैं आया ।।६९

ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन है राजा पुण्य पाप का, नित रक्षण ''त्र'' से होता है ।
मन को वश में किया जिनेश्वर, याही से तव शोभा है ।।
'मन्त्री' नाम सु मनहर जिनवर, गणधर मुनिवर ने गाया ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा करने मैं आया ।।७०

ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

देवन्द्रों के मुकुट सु मणि की, किरणों से हि शोभा प्राप्त ।
लाल लाल सु कमल दल सम है, तब पादाब्ज की शोभा नाथ ।।
आत्म हितैषी महा-ऋषियों ने, मन्त्र स्तुति कर किया नमन ।
''मन्त्रमूर्ति'' उन वीतराग को, शत-शत बार जु मम वन्दन ।।७१

ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है आकाश अनन्त जिनेश्वर, गुण अनन्त तुम में हैं व्याप ।
गुण अनन्त का पुञ्ज मोक्ष है, नाथ किया है तुमही प्राप ।।
''अनन्तगः'' शुभ नाम है मनहर, गणधर मुनिवर ने गाया ।
अष्ट द्रव्यका थाल सजाकर, पूजा करने मैं आया ।।७२

ॐ ह्रीं अर्हं ''अनन्तगाय'' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

संसारी जग के सब प्राणी, हैं शरीर के दास विभो ।
संयमरस से पूरित जिनवर, देह तुम्हारा दास अहो ।।
है ''स्वतन्त्र'' तव नाम मनोहर, वन्दन मम स्वीकार करो ।
स्वर्ण थाल ले पूज रचाऊं, कोटि भवों के पाप हरो ।।७३

ॐ ह्रीं अर्हं स्वतन्त्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्त्र कहा आगम ग्रन्थो को, उनके आप सुकर्ता हो।
पठन जु पाठन करता जो भी, पाप सभी के हर्ता हो।।
नाम "तन्त्रकृत" महामनोहर, वन्दन मम स्वीकार करो।
स्वर्ण थाल ले पूज रचाता, कोटि भवों के पाप हरो।।७४

ॐ ह्रीं अर्हं तन्त्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिनेश तेरी समीपता, शोभन पद को देती है।
पापी को भी चरण धूलि से, पावन वो कर देती है।।
'स्वान्तः'[१] नाम है महा-मनोहर, वन्दन मम स्वीकार करो।
स्वर्ण थाल में पूज रचाता, कोटि भवों के पाप हरो।।७५

ॐ ह्रीं अर्हं स्वान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतान्त कहा सिद्धान्त कु गणधर, तिसके तह को पाया है।
स्याद्वाद अरु अनेकान्त का, ध्वज तूमने फहराया है।।
'कृतान्तान्त' शुभ नाम मनोहर, वन्दन मम स्वीकार करो।
रत्न दीप से पूज रचाऊं, कोटि भवों के पाप हरो।।७६

ॐ ह्रीं अर्हं कृतान्तान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेमकार्य कृतान्त कहाता, तिसके तुम ही हो कर्ता।
पाप मार्ग में डुबे जीव के, तुम ही हो तारण भर्ता।।
'कृतान्तकृत्' शुभ नाम जिनेशा, वन्दन मम स्वीकार करो।
स्वर्ण थाल ले पूज रचाता, कोटि भवों के पाप हरो।।७७

ॐ ह्रीं अर्हं कृतान्तकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है पुण्य फल अरहंत का पद, शुभ प्राप्त तिसको तुम किया।
कर्म घातिया चूर-चूर कर, तीन लोक का राज लिया।।
"कृती" नाम से पूज्य जिनेशा, वन्दन मम स्वीकार करो।
स्वर्ण थाल में पूजन करता, कोटि भवों के पाप हरो।।७८

ॐ ह्रीं अर्हं कृतिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. "स्वान्तः=सामीप्य"।

धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष ये, चतु पुरुषारथ हैं गाये ।
तीन वर्ग अपवर्ग एक है, सच्चा मार्ग दिखाये हैं ।।
यातै नाम ''कृतार्थ'' मनोहर,निशदिन पूज रचाये हैं ।
अष्ट कर्म का नाश करे हम, यही भावना लाये हैं ।।७९

ॐ ह्रीं अर्हं कृतार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रजा पालने हेतू जिनवर, असि मसि कर्म बताये हैं ।
अल्पारंभ सु जीवन यापन, जीवन कला सिखाये हैं ।।
प्रसिद्ध नाम ''सत्कृत्य'' इसीसे, निशदिन पूज रचाये हैं ।
अष्ट कर्म का नाश करें हम, यही भावना लाये हैं ।।८०

ॐ ह्रीं अर्हं सत्कृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

करने योग्य सु कार्य बताये, दान रु पूजा व्रत उपवास ।
आप चुके कर नाथ सभी को, कर-कर के हि हुए निहाल ।।
नाम ''कृतकृत्य'' महामनोहर, वन्दन, मम स्वीकार करो ।
स्वर्ण थाल ले पूज रचाता, अष्ट कर्म मम क्षार करो ।।८१

ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

देवों ने की पूजा जिनकी, पंचकल्याणक काल में ।
जिनपूजा से पूज्य बनाया, भक्तों को प्रभो आपने ।।
जिन पूजा निष्फल नहि प्रभु की, स्वर्गमोक्ष सुख देती है ।
नाम जपो ''कृतक्रतु'' शुभ मनहर, पूजा सब दुख हरती है ।।८२

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तोटकछन्द

नित शुद्ध सरूप लखो प्रभुजी,
नित शुद्ध सरूप बसो प्रभुजी ।
तुम नाम सु ''नित्य'' महाजिनजी,
नित पूजत पाप नशैं सबहीं ।।८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं नित्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यम को तुम जीत लिया सुजिना,
यम को तुम धार लिया सु मुना।
तुम "मृत्यंजय" गुण धार लिया,
भवि जीवन को सुख सार दिया।।८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युंजयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अन्तक को जु पछाड़ दिया,
मन धर्म धुरा सु लगाय दिया।
नहि मृत्यु कभी अब नाथ कहीं,
तव नाम "अमृत्यु" कहा सुगुणी।।८५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमृत्यवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम नाथ मरो न कभी हि कहीं,
तुम नाथ यमेश्वर हो सच ही।
तव नाम सिद्ध "अमृतात्मा" धरा,
भवि पूजत ही सब पाप हरा।।८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरणा न जहां जनमा न तहां,
वह मोक्ष सु अमृत नाथ अहा।
तुम जीत लिया सबको सु जिना,
तव नाम "अमृतोद्भव" है सुखदा।।८७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

तुम ब्रह्म सु केवल बोध निभा,
तुम ब्रह्म सु आतम निष्ठ महा।
तुम रत्न जु तीन विशिष्ट धरा,
तुम नाम "ब्रह्मनिष्ठ" पाप हरा।।८८।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

परब्रह्म जु केवल बोधलहा,
तव रूप विभो उसमें निखरा।
सत रूप सरूप जु राजत हो,
"परब्रह्म" जिनेश जु पाप हरो।।८९।।

ॐ ह्रीं अर्हं परब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

बढ़ते गुण आप महानिधि के,
शुध केवल बोध सुवीर्य लहे।
तव नाम सु "ब्रह्मात्मा" सु जिना,
चरणों तव नाउ शुभा सुखदा।।९०।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

तुम पाप जु वृष्टि विनाश किया,
अरु धर्म सुसृष्टि विकाश किया।
"ब्रह्मसंभव" नाम सुसार्थ लहा,
रत्नत्रय का उत्पाद किया।।९१।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मसंभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबोला छन्द

मतिश्रुत सावधि शुभ बोध कहे, सु मनः परजाय जु ब्रह्म कहे।
इक केवल ही परब्रह्म लहे, तुम केवल बोध सुसामि भये।।
तव नाम "महाशुभ ब्रह्मपती", गुण कीर्तन से नशती दुगती[1]।
नित पूजन वन्दन सार कहा, तव भक्ति अराधन मोक्ष पथा।।९२

ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तोटक

शुध बोध जु चारित मोक्षमहा,
इनको शुध ब्रह्म गणीश कहा।
तुम नायक हो इनके सुजिना,
तुअ नाम "ब्रह्मेट" जु पाप हरा।।९३।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मेटे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

---

१. दुगती=अशुभ गति।

चौबोला

प्राप्त किया जिन महाब्रह्मपद, तिसके स्वामी आप हि हो।
समवसरण है महाब्रह्मपद, स्वामी तिसके आप हि हो।।
'महाब्रह्मपदेश्वर' सिरी जिन, चरणों शीश झुकाता हूँ।
स्वर्ण थाल ले पूज रचाकर, मन-मन्दिर में ध्याता हूँ।।९४

ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तोटक छन्द

प्रहसीत मुखा शुभ हास युता,
सुविराग महाक्षम भाव सखा।
'सुप्रसन्न' सदा गुणगावत हैं,
भवि पूजत पाप विडारत है।।९५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रसन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

सुजिनेश जु आतम निर्मल है,
निज आतम में सु प्रसन्न रहें।
प्रसन्नात्मा गुण को नमन करें,
हम पूजक पाप विनाश करें।।९६।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रसन्नात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

तुम केवल बोध सु सामि विभो,
तुम धर्म दया दम ईश सु हो।
तुम ''ज्ञान धर्मदम प्रभु'' अहो,
हम पूजक पाप विनाश करो।।९७।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान धर्मदमप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

तुम क्रोध कषाय जु शाम दिया,
प्रविभाव कुभाव जु दाह दिया।
शम भाव सु आतम भाव लहा,
''प्रशमात्मा'' नाम सु पूज्य महा।।९८।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

तुम घाति चतुः दुठ नाश किया,
परमा शुभ आतम शान्ति लिया।
प्रशान्तात्मा सुगुण के धारक हो,
हम पूजक पाप विडारत हो।।९९।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

हरीगीति

अतिशय पुरा तिरसठ शलाका, गणधरा शुभ भासिया।
तिनमें प्रसिद्ध जु तीर्थंकर हैं, मोक्षमार्ग विकासिया।।
जो परम औदारिक सु राजैं, सकल हैं परमातमा।
'पुराण पुरुषोत्तम' वही हैं, मुक्त जीवन आतमा।।१००।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

स्थविष्ठादि शत नाम को, जो पूजे तिरकाल।
रिद्धि सिद्धि ता घर बसे, जीवन होय निहाल।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठादि शतनाम धारक श्री वृषभजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप—ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय नमः।

(लवंग से १०८ बार जपें)

जयमाला

आओ भव्यों तुम्हें सुनावें, गाथा जिनराज सिरी की।
उनके चरणों मस्तक धर दो, आतम शुद्धि काज की।।टेक।।
वन्दे जिनवरं, वन्दे जिनवरं।

युग के नेता, प्रथम जिनेशा, आदि प्रभु अवतार हुए।
लक्ष तेरासी पूरब आयु, राज-काज में बीत गए।।

अंक रु अक्षर शिल्प कलाएं, प्रगटाई जिनराज की ।
उनके चरणों मस्तक धर दो, आतम शुद्धि काज की ।।वन्दे०।।१
देखा नीलाञ्जन का मरणा, राग विराग में लीन हुआ ।
भरत-बाहुबलि राज-तिलक कर, दीक्षा वन को गमन हुआ ।।
लौकान्तिक तब देव जु आये, अनुमोदन के काज की ।
उनके चरणों मस्तक धर दो, आतम हितके काज की ।।वन्दे०।।२
बैठ पालकी देखे जिनवर, सुरनर में तब युद्ध हुआ ।
प्रथम पालकी हम ही उठायें, चारों ओर से शोर हुआ ।।
जिनवर सम चारित्र जो पाले, वही उठावे पालकी ।
उनके चरंणों मस्तक धर दो, आतम हितके काज की ।।वन्दे०।।३
वन सिद्धारथ जाकर जिनवर, पंचमुट्ठी कचलोच किया ।
वस्त्राभूषण सभी उतारे, भेष दिगम्बर धार लिया ।।
प्राप्त किया मनपरजय तब ही, जय हो जय मुनिराज की ।
उनके चरणों मस्तक धर दो, आतम शुद्धि काज की ।।वन्दे०।।४
योगधरा छह मास वृषभ ने, अनशन तप को साध लिया ।
मास छहों तक भ्रमण किया था, नहीं अहार का योग मिला ।।
अक्षय तृतीया प्रथम अहारा, आदिनाथ जिनराज की ।
उनके चरणों मस्तक धर दो, आतम शुद्धि काज की ।।वन्दे०।।५
जय-जयकार हुई तब नभमें, मन्द सुगन्धित पवन चले ।
पंचाश्चर्य की वृष्टि करके, देव सभी तब झूम उठे ।।
दान तीर्थ श्रेयांसराज से, धर्मतीर्थ वृषभेश की ।
उनके चरणों मस्तक धर दो, आतम शुद्धि काज की ।।वन्दे०।।६
तप की महिमा अगम अगोचर, देव इन्द्र सब गाते हैं ।
मानव ही यह तप आराधे, देव नहीं आराध सकें ।।
बारह तप तुम धर लो मानव, कर्म दहन के काज की ।
उनके चरणों मस्तक धर दो, आतम शुद्धि काज की ।।वन्दे०।।७

यथा दुग्ध को तपने हेतू, बरतन को तपना होता।
तथा हि आतम शुद्ध करन को, सुनो देह तपना होगा।।
सूरज तपता धरती तपती, जय बोलो तपवान की।
उनके चरणों मस्तक धर दो, आतम शुद्धि काज की।।वन्दे०।।८
बारह तप को तपकर जिनवर, कर्म कि राख बनाऊंगा।
निज शुद्धातम रमण करूं मैं, ऐसा दिन कब पाऊंगा।।
तप करते यह जीवन बीते, मिले शिवालय राज की।
उनके चरणों मस्तक धर दो, आतम शुद्धि काज की।।वन्दे०।।९

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतक नाम धारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन सहसनाम की पूजा श्रद्धा धर जो करते हैं।
यश वैभव कीरत बढ़ती है ज्ञान महानिधि लहते हैं।।
नवनिधि चौदहरतन प्राप्तकर मुक्तिरमा वे वरते हैं।
शाश्वत आत्मानन्द बरसता, ज्ञान सुधारस पीते हैं।।

(पुष्पाञ्जलिं)

●

अथ चतुर्थ कोष्ठ

महाशोक आदिक शतनाम पूजा

स्थापना

महाशोक आदिक शत नामा, जिनवर मम उर में आओ।
तीन ताप से पीड़ित मुझको, अचल शान्तिवर बोध करो।।
आओ आओ जिनवर मेरे, मन मन्दिर में वास करो।
सागर है संसार महादव, इससे रक्षा आन करो।।

ॐ ह्रीं महाशोकादि शतनामधारक श्री वृषभ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं महाशोकादि शतनामधारक श्री वृषभ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं महाशोकादि शतनामधारक श्री वृषभ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

शुभ कुम्भ मणिमय नीर निरमल, क्षीर उदधि सु लाइये।
वर धार त्रय जिन चर्ण देकर, जनम मृत्यु नशाइये।।
महशोक शत जिननाम पूजो, पाप छेदक मूल से।
सब पाप नाशों नाथ मेरे, मैं दुखी हूँ भूल से।।१।।

ॐ ह्रीं महाशोक ध्वजादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय जन्म-जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीर चन्दन भर कटोरी, घीसकर वर लाइये।
जिन चर्ण चर्चों भाव धरकर, भव कु ताप नशाइये।।
महशोक शत जिननाम पूजो, पाप छेदक मूल से।
सब पाप नाशो नाथ मेरे, मैं दुखी हूँ भूल से।।२।।

ॐ ह्रीं महाशोक ध्वजादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चन्द्र सम ले शुभ्र सुन्दर, शालि थाल भराइये ।
जिन चर्ण आगे पुञ्ज धर के, पद सु अक्षय पाइये ।।
महशोक शत जिननाम पूजो, पाप छेदक मूल से ।
सब पाप नाशो नाथ मेरे, मैं दुखी हूँ भूल से ।।३।।

ॐ ह्रीं महाशोक ध्वजादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुर कल्पतरु के सुमन सुरभित, स्वर्णथाल भराइये ।
पादारविन्द जिनेश के धर, कामबाण नशाइये ।।
महशोक शत जिननाम पूजो, पाप छेदक मूल से ।
सब पाप नाशो नाथ मेरे, मैं दुखी हूँ भूल से ।।४।।

ॐ ह्रीं महाशोक ध्वजादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

फैनी सरस ओ चन्द्रिकामृत, मोदका भर लाइये ।
जिनपाद पद्म चढ़ाय भर-भर, क्षुधा रोग नशाइये ।।
महशोक शत जिननाम पूजो, पाप छेदक मूल से ।
सब पाप नाशो नाथ मेरे, मैं दुखी हूँ भूल से ।।५।।

ॐ ह्रीं महाशोक ध्वजादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर दीप मणिमय घृत भरा हो, धूम्र वर्जित सोहना ।
मंगल सु ज्योतिर्मय सनाहो, मोहतम नित खोवना ।।
महशोक शत जिननाम पूजो, पाप छेदक मूल से ।
सब पाप नाशो नाथ मेरे, मैं दुखी हूँ भूल से ।।६।।

ॐ ह्रीं महाशोक ध्वजादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन अगर शुध केलिनन्दन्, अंग दश सु मिलाइया ।
वर धूप धूपायन जु खेवत, अष्ट करम जराइया ।।
महशोक शत जिननाम पूजो, पाप छेदक मूल से ।
सब पाप नाशो नाथ मेरे, मैं दुखी हूँ भूल से ।।७।।

ॐ ह्रीं महाशोक ध्वजादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्राक्षा सु पुंगी आम्र मनहर, जाम भर थाली करो ।
जिनपाद अग्र चढ़ाव भविजन, जाय शिवरमणी वरो ।।
महशोक शत जिननाम पूजो, पाप छेदक मूल से ।
सब पाप नाशो नाथ मेरे, मैं दुखी हूँ भूल से ।।८।।

ॐ ह्रीं महाशोक ध्वजादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय मोक्षफल- प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुध नीर चन्दन पुष्प अक्षत, दीप नेवज धूप की ।
थाली मनोज्ञ जु फल भरी लो, देव अर्घ चहोड़ की ।।
महशोक शत जिननाम पूजो, पाप छेदक मूल से ।
सब पाप नाशो नाथ मेरे, मैं दुखी हूँ भूल से ।।९।।

ॐ ह्रीं महाशोक ध्वजादि शतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महाशोक शत नाम ही, तिहुं जग शान्ति करेय ।
निज आतम में शान्ति हो, धारा शान्ति करेय ।।१।।

शान्तये शान्तिधारा

सुरभित पुष्प जु मोगरा, चम्पा और गुलाब ।
पुष्पाञ्जलिं अर्पण करो, होवे बोधि सु लाभ ।।२।।

पुष्पाञ्जलिं

अथ प्रत्येक अर्घ

छन्द सुन्दरी (१२ अक्षरी)

तरु अशोक सु है ध्वज आपका,
जगत का सब ताप नशावता।
''महाशोक ध्वज'' तव नाम महा,
भविक पाप करे जु पलायना।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशोक ध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवरा नहि शोक धरा कभी,
सुत तिया रहते अनुकूल ही।
धन जना नहि शोक हुआ कभी,
शुभ 'अशोक' जु नाम गुणोमयी।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सु पुण्य महा वरणें करी,
नहि जु शक्य हुआ सुर इन्द्र भी।
''क'' तव नाम कहा सु गणीश ने,
जजत पुण्य बढ़े अखिलेश में।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सु जिनदेव करे जु अराधना,
पहुँचता वह देव सुरांगना।
कर रहा जिनदेव विराधना,
दुख सहे नरकों वह पाप का।।
रह रहा मधि भाव जु धारके,
बन रहा वह मानव मार्ग का।
कर रहे नित ध्यान जु आपका,
पहुचते सब मुक्ति सु अंगना।।

तव जु नाम सु 'सृष्टा' गुणोमयी ,
जगत ताप विनाशत है सभी ।
मन लगा कर ले सु अराधना ,
कटत है सब दुःख विभावका ।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सृष्टे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कमल आसन है इक योजना ,
सहस है दल युक्त सुशोभना ।
'पदम-विष्टर नाम सु वन्दना ,
जजत हौं तव जीवन पावना ।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं पदम विष्टराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नव निधी रहती तव पास में ,
पदम है निधि आप सु साथ में ।
'पदम-ईश' पुकारूं गुणोमयी ,
जजत नाशत भागत कर्म ही ।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पद तले स्वर की कमलार्चना ,
द्वयशता पचवीस शुभ सु राचना ।
मधि अग्रे रहते शुभ पाछजी ,
''पदम संभूति'' है शुभ नामजी ।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मसंभूतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कमल आकर है प्रभु नाभि का ,
कमल पुष्प समा सुसुगन्धता ।
''पदम-नाभि'' सु पूज्य जु नाम है ,
जजत भागत हैं अरि दूर ह्वै ।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनाभये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन समा जग में नहि अन्य हैं,
फंस रहा यह लोक हि द्वन्द में।
तव "अनुत्तर" नाम सु अर्चना,
भजत हो फिर जीवन बन्धन ना।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध भांति सु लक्ष्मि जु प्राप्त हो,
भजत जो प्रभु को नित भाव हो।
"पदमयोनि" जु लच्छमीनाथ हो,
भगत का सब दारिद नाश हो।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत रक्षण आप किया जिना,
असि मसी कृषि को सिखला दिया।
जगत उत्पत्ति के तुम हेतु हो,
"जगद्योनि" जिनेश कृपा करो।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्योनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवरा नित ज्ञान सु मग्न हैं,
तव सरूप हि ज्ञान सुगम्य है।
तव समीप चलें हम ज्ञान से,
"इत्य" सु नाम जपो सुखकार है।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं इत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगुण खान सु अर्हन् पूज्य हो,
गणधरादिक वन्द्य सुस्तुत्य हो।
तुम जिनेश थुती शुभ योग हो,
शुभ जु "स्तुत्य" जपो नहि बंध हो।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तुत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव थुती करते शत इन्द्र ओ,
नहि समर्थ हि कोय जु अन्य हो।
कर "स्तुतीश्वर" नाम अराधना,
भजत जो भवि हो न विराधना।।१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत मोह कि आगिन में दहा,
रुषरु राग करें अन देवता।
जिन जिनेश विराग प्रवीर हो,
"स्तवनार्ह" जजैं भव क्षार हो।।१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तवनार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम जिनेश जितेन्द्रिय ईश्वरा,
तव सुचर्ण नमें झुक केशवा।
जिनवरा "हृषिकेश" अराधना,
करत जो भवि हो न विराधना।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं हृषिकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम जु जीत लिया अनंगादि को,
कुप कषाय रु लोभ विषादि को।
"अजितजेय" सु नाम अराधना,
जजत हो भवि हो न विराधना।।१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितजेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करन योग क्रिया तुमने करी,
करम नाश किया शिवपुरी वरी।
"कृतक्रिया" शुभ नाम अराधना,
जजत जो भवि हो न विराधना।।१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी आर्यिका देवियां, मनुज देव तिरयंच।
समवसरण में राजते, ''गणाधिप'' हो भगवन्त ।।१९।।
ॐ ह्रीं अर्हं गणाधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह सभा सुशोभती, समवसरण के मध्य।
गण में श्रेष्ठ जिनेश हो, यातै हो ''गणज्येष्ठ'' ।।२०।।
ॐ ह्रीं अर्हं गणज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दरी छन्द

सुगुणवर्धक आप जिनेश हो,
लख सु चौ असि से गुण पूर्ण हो।
गुण्य सु पूर्ण जिनेश सु 'गुण्य' हो,
भजत पातक भी सब चूर्ण हो।।२१।।
ॐ ह्रीं अर्हं गुण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवरा गुण से नित शोभता,
तव सु देह शुभंकर मोहता।
गुण तथा तुम देह सु सुन्दरा,
नमन है तव नाम सु ''पुण्य'' हा।।२२।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

बारह सभा समोसरण, गण के अग्रणी आप।
''गणाग्रणी'' शुभ नाम है, पूजो आठों याम।।२३।।
ॐ ह्रीं अर्हं गणाग्रण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दरी

गुण छियालिस के प्रभु आकरा,
महत केवल बोध सु मंडिता।
गुण चुरासि लखा शुभ पंडिता,
जज ''गुणाकर'' पाप विखंडिता।।२४।।
ॐ ह्रीं अर्हं गुणाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लख चुरासि गुणा शुभ धाम हो ,
भव समुद्दर तारण यान हो।
सु ''गुण अम्भोधि'' नाम जप सदा ,
सकल पातक होंय सदा विदा ।।२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणाम्भोधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुण परा जिन दृष्टि मनोहरा ,
तव ''गुणज्ञ'' सु नाम शुभंकरा।
समकिता सुगुणा सत लब्धि को ,
करण भाव कहा समदृष्टि को ।।२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अतित संख्य गुणों कर मंडिता ,
गुणसु नायक हो गुणपंडिता।
सु ''गुणनायक'' नाम जु अर्चना ,
कर रही सब पंक वितर्जना ।।२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुख सु सत्त प्रचेतन बोध ये ,
गुण लगे प्रिय आतम शोधने।
निजगुणातम आदर को करें ,
शुभ 'गुणा अनुराग विमोहने।
सुगुण अष्ट धरूं तव नीति है ,
सुगुण सिद्धन में तव प्रीति है।
सुगुण में तव आदर सिद्ध के ,
तव 'गुणादरी' नाम सु पूज्य है ।।२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणादरिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुण विभाव कहा क्रुध आदि को,
तिन उछेद कियो शुध भाव सौं।
''गुणोच्छेदी'' शुभ यह नाम है,
अख[1] गजादिक चूरक वन्द्य हैं।।२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणोच्छेदिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव घना गहरा जु विभाव से,
गुण अशुद्ध जु विभ्रम भाव से।
जिन विभाव गुणों सु विहीन हैं,
तुअ सु ''निर्गुण'' नाम विपूज्य है।।३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मीधरा छन्द (४ रगण १२ अक्षरी)

पुण्यगी शुद्धगी, आपकी श्रेष्ठगी,
शान्तगी दान्तगी पापनाशी सुगी।
''पुण्यगी'' नाम की जाप को ही जपो,
आत्मशान्ती भजो कर्म कीचा हरो।।३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं गुणों में प्रधाना विशिष्टा जिना,
केवली हैं गणीन्द्रा सभी ज्ञान से।
नाम है सू ''गुणा'' आपकी अर्चना,
अर्चना से कभी होत ना बन्ध हा।।३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शारणा तारणा हारणा आप ही,
भक्त की लाज है आपका हाथ ही।
भक्ति की नाव है तारका नाथ हो,
डूबती नाव को हो 'शरण्य' साथ हो।।३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं शरण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. अख = इन्द्रियां।

पुण्य का रूप है वाणि सिद्धेश की,
पाप की हानि है वाणि बुद्धेश की।
'पुण्यवाक्'' आत्मरूपा प्रसिद्धेश की,
जैन वाणी सुनो हार कर्मेश की।।३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति कर्माजला आप हो भास्करा,
रोहिणीकान्त हो ज्योत्सना से सदा।
नाम ''पूतः'' जजूं श्री जिना भाव सौं,
पार होऊं परा भक्ति की नाव सौं।।३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मजोती जगी काम के नाश से,
मुक्तिनारी वरी साम्यता पान से।
श्री ''वरेण्य'' प्रसिद्धा जजूं भाव सों,
पार होऊं परा भक्ति की नाव सों।।३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरेण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य की अर्चना, पुण्य की वन्दना,
आप पाई सदा पुण्य की चर्चना।
''पुण्य के नायका'' अर्चता भाव सों,
पार होऊं परा भक्ति की नाव सों।।३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्ष के गम्य ना आपका रूप है,
इन्द्र सौ चर्ण में नाय टेक मस्त[१] हैं।
नाम ''अगण्य'' देव पूजता भाव सौं,
पार होऊं परा भक्ति की नाव सों।।३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. मस्त=मस्तक।

पुण्य धी, बोध धी, बुद्धि पुनीत है,
पाप पंका नशे पुण्य में प्रीत है।
''पुण्यधी'' नाम की अर्चना भाव सौं,
पार होऊं परा भक्ति की नाव सौं।।३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशा हैं गणा आपके काल के,
भक्त आ आ जपें नाम नित्यापके।
ओ हितंकार ''गण्य'' पूजता भाव से,
पार होऊं परा भक्ति की नाव से।।४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं गण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थकारी महाप्रकृती कर्म की,
पूर्व जन्मे जिना आप ही बांध ली।
''पुण्यकृत्'' नाम है पुण्य कर्मा जपें,
पार होवें प्रभो भक्ति की नाव है।।४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शासना है किया चंचला[1] दुष्ट पै,
निर्मला स्वच्छता वीमला है मना।
पुण्य निष्पाप से सर्व अंगा सजा,
''पुण्यशासना'' जिना चर्ण अर्चूं मुदा।।४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म आराम हो, पापियों तारका,
धर्म उद्यान में मैल के हारका।
हे प्रभो ! पुण्य के आप उद्यान हो,
''धर्माराम'' नाम से आप ही पूज्य हो।।४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मारामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. मन

मूल बीसा जु आठ ग्राम हैं साधु के,
चौ असीउत्तरा लक्ष हैं आपके।
सर्वग्रामा गुणा धारका आप हो,
"गुणग्राम" जाप से शुद्धता प्राप्त हो।।४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु तीना सु उच्चाकहा गोत है,
नाम कर्मा महा पुण्य अन्यान हैं।
संवरा है किया पुण्य पापा हना,
"निरोधका पुण्यापुण्य" पूजता मैं घना।।४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यापुण्यनिरोधकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप से दूर हो कर्म का कीच ना,
हिस्य हिंसादिका भाव भी ना वहां।
"पापापेत" नाम को अर्चता भाव से,
पार होऊं परा भक्ति की नाव से।।४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं पापापेताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति कर्मा महा पाप का लेश ना,
पाप हीना प्रभो झूकता शीश हा।
पाप हीनातमा पूजता भावसौं,
नाम विपापातमा जाप हो भाव सौं।।४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपापात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापमूला नशा आपके आत्म से,
आत्म आनन्द विख्यात है आप में।
नित्य आनन्द की आप में धार है,
नाम जो "विपाप्मा" जाप ही सार है।।४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपाप्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोप ना मोह ना काम का लेश ना,
मान ना माय ना लोभ का भेष ना।
कल्मषा भाव को धारते ना कभी,
"वीतकल्मष" जजो भक्त आओ सभी ।।४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीतकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक ही भाव है, आत्म का देखना,
द्वन्द का काम ना द्वेतता ना तहां।
भाव "निर्द्वन्द" की अर्चना भाव सौं,
पार होऊं परा भक्ति की नाव सौं ।।५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मोहराज का पुत्र है, अहंकार दुखदाय।
जीत लिया जिन आपने, "निर्मद" नाम कहाय ।।५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागादिक रिपु नाशकर, परमशान्त रसधार।
नाम "शान्त" यातै हुआ, पूजो दिन अरु रात ।।५२।।

ॐ ह्रीं अर्हं शान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महापति कर्म का, तिसका क्षय तुम कीन।
सहजानन्दी हो जिना, पद "निर्मोह" सु लीन ।।५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न रहित शुध साधना, ध्यान शुक्ल शिरमौर।
"निरुपद्रव" शुभनाम है, नमो-नमो कर जोर ।।५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपद्रवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबोला

हे अनिमेष विलोकनीय प्रभु, तुझे निहारे हम प्रतिपल ।
इच्छा रहित विहार रु वाणी, समवसरण शोभा अधिकृत ।।
'निर्निमेष' शुभ नाम मनोहर, ज्ञान सु केवल का अतिशय ।
भक्ति धार मैं पूजूं ध्याऊं, समकित जागे अब मनहर ।।५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नरेन्द्र

अन्न पान आहार न जिनका, ज्ञानसुधारस पीवें ।
खान पान अरु लेह्य पेय तज, कोटि पूरब तक जीवें ।।
''निराहार'' यातैं शुभ नामा, लोक मूढ ना जानें ।
अरहत को आहार जो माने, पाप सिन्धु को पावे ।।५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं निराहाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आलोचन अरु प्रतिक्रमण की किरिया नाही करते ।
नहीं प्रमाद किंचित् भी उनके, आतम ज्ञान विचरते ।।
शुद्धातम में सावधान हैं, प्रीत उसीमें धरते ।
''निष्क्रिय'' नाम सु सार्थक यातैं, समकित धारी भजते ।।५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्क्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अन्तराय है कर्म घातिया, सोई तुमने नाशा ।
विघ्न रहित हो भव्य जीव को, दान अभय परकाशा ।।
धर्म देशना दे अनुग्रह से, भव्य असंख्य उबारे ।
''निरुपप्लव'' तव नाम जु सार्थक, समकित धारी ध्यावें ।।५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपप्लवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा

कर्म कलंक नशाय, कर्म जु गिरि को भेदिया ।
''निष्कलंक'' हुए नाथ, भाव सहित अर्चा करूं ।।५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऐन कहा है पाप, सो तुम नाशा श्री जिना।
''निरस्तैना'' जु नाम, भाव सहित अर्चा करूं।।६०।।
ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तैनसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राध कहा अपराध, सो सब छूटे आप सौं।
''निर्धूताग'' जिनराज, भाव सहित अर्चा करूं।।६१।।
ॐ ह्रीं अर्हं निर्धूतागसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वच मन काया योग, आस्रव के ये हेतु हैं।
वश कीनो जिनराज, ''निर आस्रव'' जिनपूजिये।।६२।।
ॐ ह्रीं अर्हं निरास्रवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्द्ध अनंगशेखर

विशिष्ट शान्ति दोष की, जिनेन्द्र आपने करी।
विशिष्ट शान्ति आ मिली जिनेन्द्र आपको सही।।
''विशाल'' नाथ आप हो, सुशान्ति भक्त बांटते।
विराग दर्श पावते, जु पूज को रचावते।।६३।।
ॐ ह्रीं अर्हं विशालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

युगपत् लोकालोक को जाने केवल भान।
'विपुल ज्योति' तव नाम है, नित्य करूं गुणगान।।६४।।
ॐ ह्रीं अर्हं विपुलज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं तु सूर्य है जिना उदीयमान है सदा।
नहीं तु चन्द्र है जिना अटूट ज्योत्सना मुदा।।
''अतुल'' नाम आपका, सु तीन रत्न धार हो।
सु पूज्य एक आप हो, भवाब्धि तार नाव हो।।६५।।
ॐ ह्रीं अर्हं अतुलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचिन्त्य वैभवा' धरा सु नन्त बोध दर्शना।
सुवीर्य नन्त सौख्य धार मुक्ति लच्छमी वरा।।
मना अचिन्त्य हो सदा अगम्य बोध गम्यना।
अचिन्त्य वैभवा जु नाम अर्चना करूं सदा।।६६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्य-वैभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा हुआ जु आस्त्रवा कषाय मिच्छ भाव से।
प्रमाद व्रत भाव ना डुबे हुए अज्ञान से।।
सुसंवरा धरा जु आप दृष्टि व्रत्त बोध से।
''सुसंवृता'' हुए जिना जु आस्त्रवों के रोक से।।६७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुसंवृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दु आस्त्रवा निरोध से जु गुप्तियों कि शान थी।
मनो जु काय गुप्ति की, जिनेन्द्र में हि खान थी।।
हुआ सु आतमा प्रबुद्ध टांकि से उकेर सा।
सुभाव ज्ञायका लहा ''सुगुप्त-आतमा'' महा।।६८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुभव्य जीव को जु दीनि आप सुष्ठु बोधना।
सु पोषणा जु आप कीनी दे विशुद्ध देशना।।
''सुभृत्'' जु नाम आपका करूं प्रभो सु अर्चना।
जिनेश की सु अर्चना विबन्ध कर्म होत ना।।६९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जोगीरासा

निगम संग्रह विवहार नय हैं, ऋजू शब्द अभिरूढ़ा।
अतिशय ज्ञाता केवलि जिन हैं, शीश नमें गुणसूरा।।
नय तत्वों के रहस सुज्ञाता, ''सुनयतत्वविद्'' नामा।
अष्ट दरब ले पूजा करता, पाऊं मोक्ष सु धामा।।७०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुनयतत्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्द्ध अनंगशेखर

सु एक ज्ञान क्षायिका जु, आप में सुसोहता।
अशेष ज्ञानवर्ण के, विनाश से हि होवता।।
अनन्त है, प्रबुद्ध है विशुद्ध नित्य शाशता।
सु "एक विद्य" नाम आप पूजते न बन्ध हा।।७१।।

ॐ ह्रीं अर्हं एक विद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रबुद्ध हो विशुद्ध हो सुसिद्ध लाभ प्राप्त हो।
सुबोध केवला विशाल विद्य के सुसामि हो।।
जिनेश "महाविद्य" हैं सु वन्दना त्रिकाल है।
विवन्दना तिहारि नाथ पापपंक हार है।।७२।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतच्छ ओ प्रमाण रूप ज्ञान केवला लहें।
जु तीनकाल तीन लोक ज्ञान आपमें लसें।।
मुनीन्द्र पूजते सु चर्ण शीश को झुकायके।
'मुनी' सु नाम आपका जु मौन को हि धारते।।७३।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विवृद्ध नाथ आप तो गणों सु सामि पूज्य हो।
विवृद्धि है चहुंमुखी चतुष्टया अनन्त हो।।
"परिवृढ़ा" जु नाम आप तीन लोक शीर्ष हो।
बहूमुखी विराग पाय चर्ण आप पूज्य हो।।७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं परिवृढ़ाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जु दुःख से बचाय जीव रक्षणा करें सदा।
कषाय इन्द्रियों विषै जु बुद्धि की न लालसा।।
सयं सुरक्षिता सदा व रक्षणा जु अन्य की।
"पती" प्रणाम आपको सु वन्दना हि आपकी।।७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त धी सु ईश हो, गणेश से सु पूज्य हो ।
सु ''धीश'' नाम आपका, जु ज्ञान के अधीश हो ।।
जिनेश धी सु अर्चना, त्रिकाल नित्य कीजिये ।
सुबुद्धिहीन हूँ प्रभो, जु बुद्धिदान दीजिये ।।७६।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जोगीरासा

सर्व विद्या के स्वामि जिनेशा, देव रु इन्द्र ध्यावें ।
गणधर यतिवर शीश नमावें, ज्ञान महानिधि पावें ।।
'विद्यानिधि' सिरि जिनवर देवा, अर्चन वन्दन तेरा ।
अल्पबुद्धि मैं चरणों आया, विद्यानिधि दो देवा ।।७७।।

ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्द्ध अनंगशेखर

सु तीन लोक का सु ज्ञान, आपके प्रतच्छ है ।
त्रिलोक के पदार्थ सार्व , आपके सुगम्य हैं ।।
जिनेश ''साक्षी'' जु नाम त्रिकाल जाप्य कीजिये ।
सुबुद्धिहीन हूँ प्रभो, जु बुद्धि दान दीजिये ।।७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं साक्षिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हितोपदेश आपने सु भव्य जीव को दिया ।
अनात्म आत्म रूप का सरूप बोध दे दिया ।।
विशिष्ट मुक्तिमार्ग के ''विनेता'' आप हो सही ।
सुपूजता जु अष्ट द्रव्य पाउं मुक्ति की मही ।।७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं विनेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

जीत लिया यम को जिना, ''विहतान्तक'' है नाम ।
जन्म जरामृत हीन हैं, बन्दौ आठों याम ।।८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं विहतान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

''पिता'' जु आप हो जिनेश भक्त के सुरक्षका ।
दुनारकादि नीच को जु आप ही टलादिया ।।
दिया सु शान्ति सौख्य का अपूर्व सामराज हा ।
पिता जु नाम आपका सु पूजते हि पाप ना ।।८१।।
ॐ ह्रीं अर्हं पित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरक्षका महान हो विरक्षका सु आप हो ।
सुपुण्य रूप नाथ हो जु आप ही प्रताप हो ।।
''पितामह'' जिनेन्द्र हो सु आपकी सु अर्चना ।
प्रपूजता हूँ भाव से न होय कर्म बन्ध हा ।।८२।।
ॐ ह्रीं अर्हं पितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विनाश के हि गर्त में जु मैं पड़ा अनादिसे ।
सुमार्ग को न पाय नाथ पाप को हि आश्रये ।।
सुरक्षका जिनेन्द्र आप भक्त रक्षणा किया ।
जिनेशका जु ''पाता'' नाम शर्म शाश्वता दिया ।।८३।।
ॐ ह्रीं अर्हं पात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुनिर्मला जिनेश आप दोष हीन हो सदा ।
विराग हो विशुद्ध हो मलादि हीन हो मुदा ।।
''पवित्र'' हो निरञ्जना जु अष्टकर्महीन हो ।
सु पूजता जु आपको पवित्र से पवित्र हो ।।८४।।
ॐ ह्रीं अर्हं पवित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनादि से पतीत थे, निगोद की हि राशि में ।
निजात्म पावना किया सु डूब आत्मसिन्धु में ।।
प्रदोष हीन हो गये, सु पर्म पावना हुए ।
विशुद्ध ''पावन'' प्रसिद्ध भक्त पावन किये ।।८५।।
ॐ ह्रीं अर्हं पावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भवा जु पीड़िता सु जीव आप ही शरण्य हो।
सुरक्षका जिनेश आप बोध के सुगम्य हो।।
गति प्रदायका शुभा प्रबोध दान दायका।
''गति'' विशेष नाम आप पूजता विशेषता।।८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं गतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जुजीव पापकर्म तै तिरंच नारकी बनें।
दुदुःख पावते घने न रक्षका दिखे उनें।।
जिनेश आप तारका दुखाब्धि से सुतारते।
सु ''त्रातृ'' नाम पूजतां भवाब्धि तार नाव है।।८७।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत् सु जीव रोग से नित्य पीड़ित रहें।
सु नाम जाप आपका समस्त व्याधियां हरें।।
जलोदरा प्रचण्ड कुष्ठ शूल रोग नाशते।
''भिषग्वरा'' सु नाम पूज रोग मूल हानते।।८८।।

ॐ ह्रीं अर्हं भिषग्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतेन्द्र वन्द्य आप चर्ण मुक्ति नार इच्छती।
जिनेश को वरूं सदा हि भावना विभावती।।
सु सर्वश्रेठ आप वीतरागता सु धार हो।
जिनेश ''वर्य'' नाम आप श्रेष्ठ भी सु जेष्ठ हो।।८९।।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

भक्ति आपकी भक्त को, स्वर्ग मोक्ष वर देय।
''वरद'' नाम यातैं सुखद, गाते गणधर देव।।९०।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्म शर्म धर्म हो, जु कर्म हान वीर हो।
सुभक्त को जु इष्ट दान, आप ही प्रवीण हो।।
समीर हो सुशान्ति के जु आप एक धीर हो।
पाप पंक क्षालने जु नाथ ''परम'' नीर हो।।९१।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सु तीन रत्न से पवित्र, आपका जु आतमा।
सु शर्ण आपकी लहैं सु डूबते निजातमा।।
त्रिलोक के जु भव्य जीव, आप से पवित्र हैं।
''पुमान'' नाम आपका त्रिलोक पूज्य वन्द्य हैं।।९२।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुंसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

वस्तु सुभाव सुधर्म है, मिथ्या भाव अधर्म।
सरूप बखाना दोय का, ''कवि'' सु नाम सुखशर्म।।९३।।

ॐ ह्रीं अर्हं कवये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग के आदि जु काल में, प्रथम हुए तुम नाथ।
नाम ''पुराण-पुरुष'' महा, पूजो आठों याम।।९४।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुराण-पुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्द्ध अनंगशेखर

सुवृद्ध हो जिनेश आप आदिनाथ हो भले।
सुकाल तीसरे जु अन्त आप मुक्त हो लिये।।
सुप्राचिना जिनेन्द्र आप आपकी सु अर्चना।
सु ''वर्षीयान'' नाम जाप बन्ध का जु लेश ना।।९५।।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्षीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

तीन लोक को जानते, तीनलोक हरि पीर।
''ऋषभ'' नाम यातैं धरा, गणधर ऋषिवर धीर ।।९६।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्द्ध अनंगशेखर

जगत् जना सु पालना, युगादि में सु आप की।
हितंकरी सु वाणि नाथ, मिताक्षरी सुखंकरी।।
''पुरु'' सु नाम आपका, जु देव हो महान हो।
सु अर्चना त्रिकाल है, सुश्रेष्ठ नाथ आप हो।।९७।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र

काल चतुर्थ के आदि समये, दुखी हुए जब जीवा।
षट्कर्मों की विधी बताई, हर ली उनकी पीरा।।
असि-मसि कृषि उपदेश सु दीना, धर्म भाव फिर कीना।
'प्रतिष्ठा प्रभव'' सु नाम जिनेशा, वन्दन भक्ति प्रवीणा।।९८।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठा प्रभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तारणहार हो तुम ही प्रभुवर, नौका सम मम तारें।
जग में पीड़ित जीवों के प्रभु, एक ही आप सहारे।।
मोक्षमार्ग उपदेशी ब्रह्मा, मुक्ती पद जु निमित्ता।
''हेतु'' नाम है सार्थक यातै, वृषभदेव गुण मित्ता।।९९।।

ॐ ह्रीं अर्हं हेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्द्ध अनंगशेखर

अधो जु मध्य ऊर्ध्वलोक, लोक तीन जानिये।
सु तीन लोक भव्य जीव आपने हि तारिये।।
प्रभव्य जीव पितामह एक जिनराज हो।
सु अंग शीश नाउं अष्ट, आप ही जु ताज हो।।१००।।

ॐ ह्रीं अर्हं भुवनैकपितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाशोकध्वजादि को, जो पूजे तिरकाल ।
रिद्धि सिद्धि ता घर बसे, जीवन होय निहाल ।।

ॐ ह्रीं महाशोकध्वजादि शतनाम धारक श्री वृषभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप—ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाशोकध्वजादि शतनाम धारक श्री वृषभजिनेन्द्राय नमः
(लवंग से १०८ बार जपें)

जयमाला

दोहा

भक्ति से मुक्ति मिले, मिले शिवालय वास ।
महाशोक शत नाम की, गाऊं गुण मणिमाल ।।१।।

(पुष्पाञ्जलिं)

तर्ज—अहो जगतगुरू देव

अहो जगतगुरु देव नाना तप के धारी ।
तप बिन मुकति न होय, वन्दन तुमको म्हारी ।।
पक्ष मास चउ मास, अनशन तप गुणकारी ।
करें दिगम्बर सन्त, आतम गुण भंडारी ।।१।।अहो०
ऊनोदर तप धार, व्रत परिसंख्या धारें ।
नीरस भोजन लेय, दूध घृतादिक त्यागें ।।२।।अहो०
कंकरी भूमी मांहि, सोवें वे भगवन्ता ।
आसन नाना भांति, काय कलेश करन्ता ।।३।।अहो०
आभ्यन्तर तप धार, प्रायश्चित को धारें ।
पांच प्रकार विनय, चित्त में नित्य चितारें ।।४ ।।अहो०
वैय्याव्रत नव भांति, निश दिन आप करें हैं ।
मल-मूत्तर है नाहिं, तन से ममत तजे हैं ।।५।।अहो०

वर्ष जु एक सहस्त्र, तप कीना भगवन्ता ।
तप ही के परसाद, ऋद्धी लही जु महन्ता ।।६।।अहो०
बुद्धि जु विक्रिया आदि, आठों ऋद्धि पाई ।
हालन चालन आदि, जीव मरे ना कोई ।।७।।अहो०
कर में आया रूक्ष, भोजन सरस बने है ।
मुनि के भोजन बाद, चक्री कटक भखे है ।।८।।अहो०
वृषभदेव के काल, जीव थे भोले अज्ञा ।
हेय गेय ना जान, करते चंचल वृत्ता ।।
वीर प्रभु के काल, वक्री जीव हैं सारे ।
हित वार्ता ना गेय, तत्व कू नाहि पिछाने ।।९।।अहो०
सामायिक वा छेद, चारित तिनके गाया ।
शेष सभी के काल, इक सामायिक ठाना ।।
धर्म सु ध्यान प्रसाद, सात जु प्रकृति नाशी ।
क्षायिक समकित देव, तीन करण विधि जांची ।।१०।।अहो०
धर के शुकल पृथक्त्व, श्रेणी क्षपक सु मांडे ।
नवमें में छत्तीस, क्रम-क्रम सबही विनाशे ।।
दसवें सूक्षम लोभ, वो भी क्षण में नाशा ।
योग मात्र अब शेष, प्रत्यय शेष विनाशा ।।११।।अहो०
ध्यान एकत्व वितर्क, त्रेसठ प्रकृति चूरें ।
महिमा तप कल्याण, नाशे घातिक पूरे ।।
अहो जगत गुरुदेव, नाना तप के धारी ।
तप बिन मुकति न होय, वन्दन तुमको म्हारी ।।१२।।अहो०
कर जोडूं द्वय नाथ, दीजै इक वरदाना ।
तप कर हो कल्याण भस्म उड़े करमाना ।।
इतनी अरज जिनेश, ऐसा दिन कब पाऊं ।
निज आतम हो ध्यान, निज में ही रम जाऊं ।।१३।।अहो०

दोहा

बारह तप जग सार हैं, कर्म भस्म अंगार ।
धारूं मैं भवपार को, तारण एक जहाज ।।१४।।

ॐ ह्रीं महाशोकध्वजादि शतनाम धारक श्री वृषभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री जिन सहस नाम की पूजा, श्रद्धाधर जो करते हैं ।
यश वैभव कीरत बढ़ती है, ज्ञान महानिधि लहते हैं ।।
नवनिधि चौदह रत्न प्राप्त कर, मुक्तिरमा वे वरते हैं ।
शाश्वत आत्मानन्द बरसता, ज्ञान सुधारस पीते हैं ।।

(पुष्पाञ्जलिं)

●

अथ पंचम कोष्ठ
श्रीवृक्षादि शतनाम पूजा

स्थापना

श्री वृक्षआदिक शतक नामा, आओ देव हृदय में आज ।
देव पधारो पाप निवारो, चरण-कमल में नमाऊं माथ ।।
मोह महातम का अंधियारा, आतम देव की नाहि पिछान ।
मेरे मन मन्दिर के दीपक, उर में मेरे करो प्रकाश ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक

तर्ज—शान्तिनाथ पूजा (शान्तिनाथ पंचम चक्रेश्वर)

सुरसरिता को नीर सु निरमल, कंचन भृंग भरो हरषाय ।
तीन धार देओ जिन आगे, जनम जरामृत दूर भगाय ।।
देव जजो श्रीवृक्षशतादिक, नाम लेत सब पाप पलाय ।
देव-नरक पशु गति सब टलकर, गति पंचम गति शीघ्र मिलाय ।। १

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

केशर मलयागिरि का चन्दन, कदलीनन्दन में घिस लाय ।
भव संताप निवारण कारण, पादपद्म में चर्चूं आय ।।
देव जजो श्री वृक्षशतादिक, नाम लेत सब पाप पलाय ।
देव-नरक पशु गति सब टलकर, गति पंचम गति शीघ्र मिलाय ।। २

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्दुल अक्षत अमल अखण्डित, स्वर्ण थाल में भरकर लाय ।
पुंज धरो जिन चरण सु आगे, अक्षय पद के हेतु उपाय ।।
देव जजो श्री वृक्षशतादिक, नाम लेत सब पाप पलाय ।
देव-नरक पशु गति सब टलकर, गति पंचम गति शीघ्र मिलाय ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

देव कुसुम के सुरभित नीके, चुन-चुन लाओ भरकर थाल ।
श्री जिनके पादारविन्द में, शीघ्र चढ़ाओ शूल नशाय ।।
देव जजो श्री वृक्षशतादिक, नाम लेत सब पाप पलाय ।
देव-नरक पशु गति सब टलकर, गति पंचम गति शीघ्र मिलाय ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

पेड़ा मीठा, गोघृत नीका, मुद्ग इमरती सद्य बनाय ।
भेंट चढ़ाओ जिनवर आगे, क्षुधा वेदनी तुरत नशाय ।।
देव जजो श्री वृक्षशतादिक, नाम लेत सब पाप पलाय ।
देव-नरक पशु गति सब टलकर, गति पंचम गति शीघ्र मिलाय ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप मणीमय घृतसनेहमय, लेकर बाती करो प्रजार ।
जगमग-जगमग करो आरती, मोह नशे चहुंगति टर जाय ।।
देव जजो श्रीवृक्षशतादिक, नाम लेत सब पाप पलाय ।
देव-नरक पशु गति सब टलकर, गति पंचम गति शीघ्र मिलाय ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन देवदारु कृष्णागरु, अगर तगर की गन्ध अपार ।
अष्ट करम के जारन कारण, खेऊं धूप धनञ्जय माय ।।
देव जजो श्रीवृक्षशतादिक, नाम लेत सब पाप पलाय ।
देव-नरक पशु गति सब टलकर, गति पंचम गति शीघ्र मिलाय ।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

एला दाड़िम द्राक्षा केला, सुन्दर लो सहकार मंगाय ।
रत्नथाल में लाय चढ़ाओ, अरचत पाओ शिवपुर राज ।।
देव जजो श्रीवृक्षशतादिक, नाम लेत सब पाप पलाय ।
देव-नरक पशु गति सब टलकर, गति पंचम गति शीघ्र मिलाय ।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल अरु चन्दन पुष्प फलादिक, आठ द्रव्य का अर्घ बनाय ।
गीत नृत्य वादित्र बजाकर, थाल चढ़ाओ जिन गुण गाय ।।
देव जजो श्रीवृक्षशतादिक, नाम लेत सब पाप पलाय ।
देव-नरक पशु गति सब टलकर, गति पंचम गति शीघ्र मिलाय ।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा

तिहुंजग शान्ती होय, श्रीवृक्षादिक जाप से ।
शान्ति सु धार करें, है यह मारग शान्ति का ।।

शान्तये शान्तिधारा

मौलसिरी का पुष्प, सुरभित चम्पा मोगरा ।
लाय चढ़ाओ खूब, पुष्पाञ्जलि अर्पण करो ।।

पुष्पाञ्जलिं

अथ प्रत्येक अर्घ

बसंततिलका (१४ अक्षरी)

श्रीवृक्ष उन्नत ललाम, अरू महाना,
रत्नों जटीत मणि भासुर शोक हाना।
"श्रीवृक्ष" नाम जिनदेव सदा सुरूपा,
पूजूं सु अर्घ शुभ लेकर भाव पूर्वा।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी अनन्त शुध दर्श अनन्त धारा,
लक्ष्मी अनन्त सुख वीर्य अनन्त सारा।
आलिंगिता तुम जिनेश सु मुक्ति नारी,
श्री "श्लक्ष्ण" नाम नित पूजन है तिहारी।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्लक्ष्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों सु व्याकरण के तुम एक बुद्धा,
ज्ञानी महा सकल बोधमया प्रसिद्धा।
"लक्षण्य" नाम जिनदेव सु वन्दना है,
पूजो सु भाव धर संसृति बन्ध ना है।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं लक्षण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीवृक्ष शंख नर-नारि गरूड़ सोहे,
दो हाथ चर्ण कमलों पर चिह्न मोहे।
तीर्थंकरा जिन "सुलक्षण" अष्ट सौ हैं,
पूजैं सु भाव धर संसृति छेदनो है।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती किया तुम जिना चकचूर सारा,
इन्द्रीय जाल तब नाश हुआ तिहारा।
श्री नाम है जिन ''निरक्ष'' भवाब्धि तारा,
पूजूं सु भाव धर संसृति हो किनारा।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कमल कली आकारवत् मनहर नेत्र विशाल।
'पुण्डरीकांक्ष' नाम है, पूजो आठों याम।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्डरीकांक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान से पुष्ट हो, 'पुष्कल' यातैं नाम।
अष्ट द्रव्य का थाल ले, पूजो आठों याम।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्कलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कर कहते कमल को, इक्षण कहते आँख।
पुष्कर सम तव नेत्र है, 'पुष्करेक्षण' तव नाम।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करेक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण कर्म तुम नाश किये जिनेशा।
आत्मावबोध शुभ लाभ बने शुधेशा।।
सिद्धेश नाथ तुम सिद्धि, सु हो प्रदाता।
'सिद्धिद' नाम तव पूजक सिद्धि दाता।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकल्प देव तुमने शुभ ले लिया था।
मुक्ती सु प्राप्त हित निश्चय रूप धारा।।
'संकल्प सिद्ध' तव नाम जु अर्चना है।
पूजौं सु भाव धर संसृति बन्ध ना है।।१०।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसंकल्पाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध सरूप जिनदेव सु आप पाया।
शुद्धासु चेतन गुणा उसमें समाया।।
'सिद्धात्म' नाम तव अर्चन है सदा ही।
पूजूं सुभावधर संसृति बन्ध नाही।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादि सैन्य गुण सिद्ध जु आप कीना।
कर्मारि शत्रु दल छेदन शीघ्र कीना।।
"सिद्धा सु साधन" जिना तव नाम पूर्णा।
पूजूं सुभावधर संसृति बन्ध हैं ना।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंग प्रयात

सुबुद्धा सुशुद्धा सुसिद्धा जिनिन्दा।
अक्रुद्धा स्वयं को सु जाना सुचित्ता।।
सु "बुद्धा" सु "बोध्या" सुनामा जिनार्चा।
जजूं मैं जजूं मैं जजूं मैं जिनाद्या।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्ध बोध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बसन्ततिलका

वैराग्य बोधि जुसमृद्ध जिनेश ने की,
रत्नत्रया सुखद शान्ति सु वृद्धि भी ली।
भो! देव आप "महबोधि" सु नाम धारे,
पूजें सदा भविक आकर चर्ण थारे।।१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाबोधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्णता अतिशया तुममें विराजैं,
श्रीमान बोध अरु पूजा सु वृद्धि पावें।
है "वर्धमान" तव नाम जगत् प्रसिद्धा,
पूजूं त्रिकाल जिनदेव जु सर्वसिद्धा।।१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धी तपा विपुल औषध ऋद्धियां हैं,
भो देव ! वीक्रिय रसा बल सिद्धियां हैं ।
अक्षीण आदि सब ऋद्धि सु सामि वन्दूं,
अर्चूं 'महर्द्धिक' सुनाम सुपाद चर्चूं ।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं महर्द्धिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीवादि तत्त्व तुम बोध लिया जिनेशा,
ज्ञानी प्रमाण नय के जिन आप वेत्ता ।
है ज्ञान अंग तव आतम का स्वरूपा,
'वेदांग' नाम तव पूज्य सु हे महेशा ।।१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेदांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो जानता तनु व देह सु धारियों को,
आत्मावबोध धर भेद विवेकियों को ।
है वेद सत्य यह आगम जैनियों का,
है 'वेदविद्' अरहता सरवज्ञ मेरा ।।१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेदविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

योगी सदा निज सरूप सुबोध चाहें,
अर्हंत देव तुमको निज में हि पावें ।
हे नाथ ज्ञेय तुम हो बस योगियों के,
'वैद्य' प्रनाम जप लो सब कर्म काटे ।।१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीवीतराग जिन जात सुरूप धारें,
बाह्या सु अन्तर परिग्रह छोड़ डारे ।
है नग्न रूप तव बालकवत् निराला,
पूजौं सु "जातरूप" संसृति छेदकारा ।।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

ज्ञानी योगी गुणी प्रभु, बुधजन में तुम श्रेष्ठ ।
नाम 'विदांवर' पूजता, तीन लोकमें जेष्ठ ।।२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'विदांवराय' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मूढ़ बुद्धि जाने नहीं, वीतराग की शान ।
ज्ञान गम्य तुम हो प्रभो, 'वेदवेद्य' गुणखान ।।२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेदवेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वात्मबोध से जानता, वीतराग का रूप ।
निज आतम पहिचानता 'स्वसंवेद्य' जिन भूप ।।२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वसंवेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वि विशिष्ट अनुयोग हैं, चारों वेद प्रमाण ।
सो तुमने जाने प्रभो, नाम ''विवेद'' बखान ।।२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं विवेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तार्किक विद्या के धनी तर्क बुद्धि की खान ।
''वदतांवर'' शुभ नाम है, तार्किक श्रेष्ठ न आन[1] ।।२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं वदतांवराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शार्दूल–(१९ अक्षर)

अर्हन्ता मरणा न जन्म धरता संताप पापाहरा ।
शुद्धा कर्ममला सुहीन सुखदा संशान्ति सौख्यप्रदा ।।
लक्ष्मीनाथ महा ''अनादि निधना'' नामा प्रभो भास्करा ।
पूजा है प्रभु आपकी शमसुखा सम्यक्त्व रत्नप्रदा ।।२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनादि निधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीवादी नव तत्त्वरूप तुमने वाणी शुभा से कहा ।
दिव्यावान सु आप धारक जिना व्यक्त प्रबोधा महा ।।
'व्यक्ता' नाम जिनेन्द्र पाद नमता भावा सु मंजू लहा ।
पूजा है प्रभु आपकी शमसुखा सम्यक्त्व रत्नप्रदा ।।२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१. आन = अन्य

संज्ञी जीव सभी जिनेश वचना प्राप्ता शुभा भासता ।
वाणी है हितकार शंकर सुधा अज्ञान तापाहरा ।।
'व्यक्तावाक्' जिनशासना प्रियकरा माधुर्य भाषावरा ।
पूजा है प्रभु आपकी शम सुख सम्यक्त्व रत्नप्रदा ।।२८।।
ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भो देवा तव शासना सु विमला हिंसादि दोषाहरा ।
'व्यक्तशासन' नाम सुन्दर सखा चारित्र संद्योतका ।।
राग-द्वेष विहीन शासन सदा पक्षादि दोषा न हा ।
पूजा है प्रभु आपकी शमसुखा सम्यक्त्व रत्नप्रदा ।।२९।।
ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भो देवा युग आदि के सु तुम हो कर्ता जिना शासता ।
वाणिज्या शुभ शिल्प आदिक कला दीनी प्रजा पालका ।।
मासा श्रावण सौम्य आदि जिन ने, आरंभ कीना युगा ।
पूजा है 'युगआदिकृत्'' सुसुखदा, सम्यक्त्व रत्नप्रदा ।।३०।।
ॐ ह्रीं अर्हं युगादिकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा

'युगाधार' है नाम, कृतयुग के आधार हो ।
चर्ण कमल शिर नाव, समकित निधि मम वास हो ।।३१।।
ॐ ह्रीं अर्हं युगाधाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आदिकार हो आप, कृतयुग को तुमने किया ।
पूजा है दिन रात, नाम 'युगादि' याही तै ।।३२।।
ॐ ह्रीं अर्हं युगादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

''जगदादिज'' शुभ नाम, आदिकाल अवतरित हो ।
पूजूं आठों याम, समकित मम शाश्वत रहो ।।३३।।
ॐ ह्रीं अर्हं जगादिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोतिदाम १२ अक्षरा (४ जगण)

जिनेसुर की महिमा जु गरिष्ठ ।
बने शत इन्द्रन में जु वरिष्ठ ।।
"अतीन्द्र" सु नाम महासुख धाम ।
भजो मन आठ पहेर ललाम।।३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अतीन्द्रिय बोध सु खान विशाल,
क्रिया सु अतीक्रम अक्ष दुवार ।
सु इन्द्रिय बोध नशा गुणधीर,
भजों सु 'अतीन्द्रिय' नाम विनीत ।।३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनेश धरा तुम ध्यान सु शुक्ल ,
बने तुम धी शुध सामि विशुद्ध ।
सु नाम तिहारु जु "धीन्द्र" मुनीन्द्र,
नमें कर जोरि सुरीन्द नरीन्द ।।३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनेन्द्र सु चर्ण नमें सुर ईश,
नमें चरणों तव सौ सब इन्द्र ।
भजें नर नारक देव तिरञ्च,
"महेन्द्र" सु नाम जपैं सरपञ्च ।।३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अमूर्त अरूप पदार्थ विशेष,
सुजानत केवल बोध अशेष ।
"अतीन्द्रिय अर्थ" सुदृक् शुभ नाम,
भजो भवि लोक सु आठों याम ।।३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुपर्शन चक्षु रु पांच विहीन,
मना बिन नाम ''अनीन्द्रिय'' चीन।
प्रभो न रही अब अक्ष अशेष,
नमूं कर जोड़ सुभक्ति समेत।।३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जु सोलह सूरग ऊपर देव,
सु पूजत हैं नित अर्हत एव।
प्रनाम कहा ''अहमिन्द्र सु अर्च्य'',
नमूं कर जोड़ विभक्ति विचर्च।।४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहमिन्द्रार्च्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जजैं सब दस हैं भावन देव
करें अठ विन्तर पाद जु सेव।
सु कल्प जु बारह सूर्य व चांद,
''महेन्द्र महीत'' दु तीस प्रमाण।।४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं ''महेन्द्र महीताय'' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विदोष विरोग विमोह महन्त,
विपूज्य विसिद्ध विशुद्ध कवीन्द्र।
''महान्'' सु विनाम विदेह वितन्द्र,
जजो नर-नार बनो भगवन्त।।४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं महते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

प्रधान सु भव अन्तिम है सार,
तीन लोक का है यह भाल।
''उद्भव'' नाम महाहितकार,
पूजो भविजन अष्ट प्रकार।।४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं उद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकार्य निमित्त जु कारण जान,
जु आदि करि तुम वृष्टि सुधर्म।
सु "कारण" नाम यही विध पर्म,
जजो भवि जीव लहो सुख शर्म।।४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं कारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

युग के आदि में जो करि, सृष्टि धर्म की आप।
"कर्ता" यातै नाम है, पूजो आठों याम।।४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतियादाम

प्रभो तुम पार कियो तुम वारि,
नमें तुम चर्ण सु देव व नाग।
सु "पारग" नाम महासुखदाय,
करूं नित वन्दन पार लगाय।।४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुतारक हो जिन संसृति पांच,
जु द्रव्य रु क्षेत्र रु काल रु भाव।
भवो "भव-तारक" हो जिनराय,
जजों भव तारक नाम विशाल।।४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं भव तारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तव रूप अगाह्य अगम्य,
अशक्य सदा छदमस्थ न शक्य।
"अग्राह्य"। सु नाम जपो तिरकाल,
नशें सब पातक एक हि साथ।।४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिन सरूप के ज्ञान में, योगीजन ही क्षम्य।
गहन नाम यातै कहा, गणधर यतिवर सन्त ।।४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं गहनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतियादाम

रहस्यमयी तव ब्रह्म सरूप,
जु योगि हि जानत योग कु रूप।
सु "गुह्य" जु नाम अमोल अनूप,
नमूं तिनको कर जोड़ विशुद्ध ।।५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परा उतकृष्ट जु ऋद्धि समेत,
धरें जिन ऐश्वर मुक्ति विशेष।
"पराध्यं" जु नाम अमोल अनूप,
नमूं तिनको कर जोड़ विशुद्ध ।।५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं पराध्यांय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

मोक्ष परा लक्ष्मी के ईश, सुरगण पूजें रु नावें शीश।
राग-द्वेष से जिनवर हीन, नाम "परमेश्वर" परम पवित्र ।।५०

ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतियादाम

अनन्त सु लच्छमि ऋद्धि धरेय,
सुमुक्ति रमा सह केलि रचेय।
"अनन्त ऋद्धी" तव नाम सुसार,
जपो भवि जीव सदा तिरकाल ।।५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मर्यादा सीमा नहीं, ऋद्धि जिनेश अनन्त ।
''अमेयर्द्धि'' तव नाम को, पूजें सन्त महन्त ।।५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चिन्तन के नहीं योग जु, ऋद्धि अचिन्त्य अमान ।
'अचिन्त्यर्द्धि' तव नाम को, पूजो भक्ति प्रमाण ।।५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाने एक हि काल में, सकल पदारथ साथ ।
'समग्रधी' याते नाम कु, पूजों शीश नवाय ।।५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं समग्रधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चाम नाम ना श्रेष्ठ है, वीतरागता श्रेष्ठ ।
प्रथम अग्रता तुम धरी, प्राग्रय नाम हर नेष्ट ।।५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौपाई

पद प्रधान है तव अभिराम, मनसा वचसा सु पूजा धार ।
प्रभो उतकृष्ट परम पद सार, नाम ''प्राग्रहर'' नाऊं भाल ।।५८

ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब पुरुषों में आप ही श्रेष्ठ, सन्त महन्तों देव में जेष्ठ ।
नाम ''अभ्यग्र'' सु अति अभिराम, भाव शुद्ध धर नाऊं भाल ।।५९

ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यग्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीर्थंकर सा पद नहीं ओर, पद प्रधान सबका शिरमोर ।
नाम ''प्रत्यग्र'' जु देव वृषभ, भाव शुद्ध धर आया शर्ण ।।६०

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यग्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुण्य प्रथम तीर्थंकर देव, पद प्रधान अरहन्त की सेव ।
''अग्रय'' नाम समकित का द्वार, पूजो भविजन अष्ट प्रकार ।।६१
ॐ ह्रीं अर्हं अग्रयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रजापाल जनता में सु अग्र, बल-चक्री-हरि नावें चर्ण ।
''अग्रिम'' नाम सु नहीं गुण वर्ण, भाव शुद्ध धर आया शर्ण ।।६२
ॐ ह्रीं अर्हं अग्रिमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रथम तीर्थकर्ता जिनराय, काल सु तीसरे आये आप ।
''अग्रज'' नाम समकित का द्वार, पूजो भविजन अष्ट प्रकार ।।६३
ॐ ह्रीं अर्हं अग्रजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शिखरिणी

जिनेशा ने कीने सु तप बहु कर्म क्षयन को ।
बिना तापे सोना तजत नहि किट्टादि मल को ।।
असारे संसारे करम बहु छाये दुख दिये ।
''महातपा'' नामा भजत दुख भाजैं भवनिके ।।६४।।
ॐ ह्रीं अर्हं महातपसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महातेजा पुण्या जगति विषया त्यागि सुजिना ।
महाधीरा वीरा प्रणमति सदा शाश्वत बुधा ।।
''महातेजा'' नामा सुगुणवर धामा दुखहरा ।
नमूं मैं अर्हन्ता जजत दुख भाजे भवनिका ।।६५।।
ॐ ह्रीं अर्हं महातेजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

किया कर्मा सर्वा जिनप नश तूने सुजश से ।
फला पाया अर्हन्त बुधजन से पूजित बसे ।।
''महोदर्का'' देवा गणधर सु नावें चरण में ।
नमूं मैं अर्हन्ता जजत दुख भाजे भवनिका ।।६६।।
ॐ ह्रीं अर्हं महोदर्काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तर्ज—हे वीर

तीर्थंकर पद महा उदय में, दयाभाव के तुम भंडार ।
कर कल्याण सभी जीवों का, तेज सूर्य कोटी को लाज ।।
कर्म अस्त से ज्ञान सु केवल, प्राप्त किया है एक महान ।
'महोदयाय' सु नाम जिनेश्वर, पूजे पावे मोक्ष सुधान ।।६७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महापुण्य यश के भंडारी, तुम सम पुण्य नहीं है और ।
चहुंदिशा में गुण कीर्तन का, शोर मच रहा है चहुं ओर ।।
'महायशा' है नाम आपका, देव इन्द्र चक्री गुण गाय ।
जजूं भक्ति से अष्ट द्रव्य ले, मेटो मेरे पाप तमाम ।।६८।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायशसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कोटि सूर्य का तेज दमकता, वीतरागता का जो रूप ।
लज्जित होती सूर्य किरण भी, सूर्य सदा रहता है दूर ।।
नहीं ताप है नहीं राग है, समता दीप्ति की चमक दिपो ।
'महाधामा' है नाम सु देवा, कोटि-कोटि मम नमन अहो ।।६९।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाधाम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महामनः सामर्थ्य जिनों ने, केवलज्ञान रु दर्श लिया ।
चूर-चूर कर्मों को करके, वीर्य अनन्त सु प्रकट किया ।।
'महासत्त्व' के धारक जिनवर, हरि प्रतिहरि चक्री हारे ।
जम्बूद्वीप पलटन शक्ति धर, इन्द्र सु चरण में शीश धरें ।।७०।।

ॐ ह्रीं अर्हं महासत्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जनमत महाधैर्य के धारक, सहस्त्र आठ इक कलश ढुरे ।
तनिक धैर्य छूटा नहि तिनका, मुनि बन सहस उपसर्ग सहे ।।
शमरस पान सदा आतम में, गुण सन्तोष महागुण धार ।
'महाधृति' जिन नाम की पूजा, भव्यों को करती भव पार ।।७१।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाधृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सहै परीषह घोर भयानक, तनिक न भय आकुलता होय ।
सदा सहिष्णु वीतराग को, मोह क्षोभ कबहुं ना होय ।।
आप धीर की महाकथा का, जिव्हाशत से कथन नहीं ।
'महाधैर्य' जिन नाम की पूजा, करती है भवपार यही ।।७२।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाधैर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महावीर का महावीर्य है, महातेज बल है जु अनन्त ।
परम वीरता नाथ आपकी, तेज सूर सा अनुपम सन्त ।।
'महावीर्य' शुभ नाम देव का, वीतराग की शक्ति अपार ।
जजो भजो नित अष्ट द्रव्य से, भव समुद्र से होओ पार ।।७३।।
ॐ ह्रीं अर्हं महावीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

समवसरण की महा सु सम्पत्, नन्त चतुष्टय का वरदान ।
'महासम्पत्' है नाम आपका, जपै प्राणि निर्धनता जाय ।।
शान्ति सुधारस नित्य बरसता, दिव्यध्वनि की बहे बहार ।
वीतराग के चरण-कमल की, शोभा है भवि अपरम्पार ।।७४।।
ॐ ह्रीं अर्हं महासम्पदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन जगत और तीन काल के, सर्व पदार्थों को जानें ।
युगपत् जानें श्री जिनेन्द्र पे, समय एक को नाहि थके ।।
है महिमा तव बल अनन्त की, नाम 'महाबल' का है तेज ।
पूजो भाई भक्ति भाव से, नाशे अष्ट कर्म का खेत ।।७५।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाबलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सभी सुखी हों जीव जगत के, सभी निरोगी जु काया हो ।
दुख का भागी हो ना कोई, यही सु भावना भाया हो ।।
था उत्साह तेजपुंज का, वीतरागता का शुध भाव ।
'महाशक्ति' यह नाम अनूठा, आओ हिलमिल पूज रचाव ।।७६।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाशक्त्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

ज्ञान सु केवल जोति है, 'महाज्योति' तव नाम ।
दीप्ति दिपत है रात दिन, नमैं सूर्य अरु चन्द्र ।।७७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अतिशय रूप सु सम्पदा, नन्त चतुष्टय सार ।
गुण अनन्त सु विभूति है, 'महाभूति' तव नाम ।।७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दा तारे जगत के, सब दुति है इक ओर ।
वीतराग जिनदेव की, शुभ 'द्युति' है शिरमोर ।।७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा

'महामति' विभो नाम, ज्ञान जु केवल पाइयो ।
पूजो भव्य सुजान, शीश बृहस्पति नाइयो ।।८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

न्याय नीति मतिमान हो, 'महानीति' विभो नाम ।
अनेकान्त दर्शन महा, उसके तुम ही विधातृ ।।८१।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानीतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षमाधरी सब जीव में, शत्रु मित्र का अन्त ।
महाक्षान्ति के दूत हो, शीश नमें नित सन्त ।।८२।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

षट्कायिक के जीव की, दया हृदय में धार ।
पद तीर्थंकर पा लिया, नमन 'महादय' नाम ।।८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रज्ञा मेधा मती महा, बुद्धि बल है विशाल ।
बोधि सु केवल अतीन्द्रिय, 'महाप्राज्ञ' के पास ।।८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्राज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

राजा चक्री देवगण, भक्तों की भरमार ।
'महाभाग' पूजा करें, महाभाग्य के साथ ।।८५।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाभागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महानन्द' झरना झरे, आत्मानन्द अपार ।
प्रभु पूजा आनन्द दे, भक्तों को दे राह ।।८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दिव्यध्वनि मुखतै खिरै, 'महाकवि' तुम नाम ।
छन्द सरस रचना रची, झूमें सन्त महन्त ।।८७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकवये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भुंजग प्रयात

महामोह जीता महातेज पाया ।
महाअंधनाशा सुबोधा विकाशा ।।
महाजू ''महा'' है सुनामा जिनेन्द्रा ।
नमूं मैं नमूं मैं नमूं मैं वितन्द्रा ।।८८।।

ॐ ह्रीं अर्हं महसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महाकीर्ति धामा महाशान्ति रामा ।
यशोगान होता विरागा त्रिकाला ।।
''महाकीर्ति नामा जपै जाप तेरा ।
सु दीजै जिनेशा निजानन्द भेषा ।।८९।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकीर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुदीप्ति सुकान्ती महाज्योति धारी।
सुपूजै मुनीशा गणेशा सदा ही।।
"महाकान्ति" नामा नमूं मैं सुचर्णा।
महासिन्धु तारो नमूं मैं जिनिन्दा।।९०।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरूपा शरीरा सुगन्धा अनूपा।
न खेदा न स्वेदा निहारा विहीना।।
"महा है वपू" जू सुनामा अनूठा।
नमें भक्ति भावा सुदेवा मनुष्या।।९१।।

ॐ ह्रीं अर्हं महावपुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिया दान ऐसा सुभव्या जनों को।
भया ही रहा ना समीपा जु आये।।
अनन्ता सुजीवा भयाहीन कीना।
"महादान" नामा महादान दीना।।९२।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाज्ञान पारा नहीं कोय पावे।
सुबोधी यही मोक्ष आलै लिजावै।।
"महाज्ञान" नामा जिनेशा जजूं मैं।
सुदर्व्या सु आठों सुपूजा रचूं मैं।।९३।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महायोग धारा सुशुक्ला उपाया।
कुघाती चतुष्टा क्षया ही कराया।।
महाचित्त रोधा "महायोग" नामा।
सुपूजूं विशेषा सु योगीन्द्र रामा।।९४।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

पुत्र भरत को राज्यावस्था, शिक्षा दी गुणकारी।
संधी-विग्रह यान रु आसन, द्वेधीभाव विचारी।।
बने विरागी मूल रु उत्तर, गुण न लगे अतिचारे।
''महागुणा'' है नाम इसीसे, पूजो ये भव तारे।।९५।।
ॐ ह्रीं अर्हं महागुणायं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनमत श्री जिनेन्द्र को इन्द्रा, मेरु सुदर्शन लाया।
सहस एक अरु आठ कलश से, मह अभिषेक रचाया।।
चार निकाय देव आकर यहं, उत्सव खूब मनाया।
इन्द्र महापूजा तव कीनी, ''महामहपति'' सु ध्याया।।९६।।
ॐ ह्रीं अर्हं महामहपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह सपने माता देखे, गर्भ मात जब आये।
जन्म हुआ तब मेरु सुदर्शन, देव सु कलश ढुराये।।
राग त्याग, केवल को पाये, मुक्तिवधू वर लाये।
''प्राप्तमहाकल्याण'' सु पंचक, नाम जपे सुख पाये।।९७।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्तामहापञ्चकल्याणकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्रवर्ती षट्खण्ड के स्वामी, चरणों शीश झुकाया।
गणधर मुनीवर दास तिहारे, स्वामी तुम्हें बनाया।।
''महाप्रभु'' यह नाम तुम्हारा, तीन लोक के ईशा।
शत इन्द्रों से वन्दित जिनवर, तुम ही हो जगदीशा।।९८।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन छत्र भामण्डल सोहे, पुष्पवृष्टि गंधारी।
देव दुन्दुभि सु धुन-धुन बजती, दिव्यध्वनि है प्यारी।।
चामर चौसठ तरु अशोक का, सिंहासन मणियों का।
''महाप्रातिहार्या अधीश'' के, चरण नमो मम मीता।।९९।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामहापूजा अधिकारी, ईश जगत के नामी।
इन्द्रादिक से पूज्य जिनेश्वर, मह ईश्वर गुणधामी।।
नाम "महेश्वर" महाईश का, वीतराग छवि प्यारी।
पूजूं अर्चूं अष्ट द्रव्य ले, भव्य कमल दुखहारी।।१००।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीवृक्षादिक नाम को, जो पूजे तिरकाल।
रिद्धि सिद्धि ता घर बसे, जीवन होय निहाल।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षादिक शतनामधारक श्री वृषभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप—ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीवृक्षादिक शतनामधारक श्री वृषभ जिनेन्द्राय नमः।

(लवंग से १०८ बार जाप करें)

जयमाला

दोहा

श्री वृक्षादिक नाम जिन, चार धातिया घात।
पायो केवल बोध कूं, निज पद में बिसराम।।

छन्द-तोटक

जय वीत विराग जु सर्वग हो, जय दुःख दवानल वारिद हो।
जय थान जु तेरम पाय लियो, जय योग सयोगि सु थान लियो।।१

जय नन्त चतुष्टय मंडित हो, जय दिव्यधुनीधर पंडित हो।
जय रच्य दियो शुभ भाव भिना, जय आय कुबेर समोसरणा।।२

जय बारह योजन विस्तर है, जय रत्न मणीमय कोट बने।
जय सप्त सु भूमि वहां सगरे, जय श्री शुभ मण्डप शोभ धरे।।३

जय अष्टम भूमि सु बार सभा, जय योगि सु कल्प जु वासिनी का ।
जय कोठ सु तीज जु आर्यिक हैं, जय ज्योतिष भावन वितरनी ।।४
जय भावन विन्तर जोति बसें, जय देव सु मानव घोटक हैं ।
जय तीन सु पीठ जु गंधकुटी, जय सिंह सु आसन छत्रमयी ।।५
जय नीरज आसन देव जिना, जय आप सुशोभित रागहिना ।
जय चामर चौंसठ दिव्य धनी, जयवृक्ष अशोक जु देव मयी ।।६
जय पुष्प सु वृष्टि सु मण्डल भा, जय कोटि रवी शशि तेज हना ।
जय दीप रहें अतिशै दशधा, जय केवलज्ञान कला जयदा ।।७
जय देव रचीत सु चौदह हैं, अतिशै जग में सुखदेश्वर हैं ।
जय सौ युजना जु सुभिक्ष रहें, जय होय विहार अकाश सबे ।।८
जय जीवनिका वध हो न कदा, जय बोध कला जगदीश अहा ।
जय छाय रहीत फटीक समा, जय चार मुखा दिशते विशदा ।।९
पलकें तव नेत्र नहीं झपकें, जय केश नखादिक नाहिं बढ़े ।
जय घाति क्षया अतिशै प्रगटे, जय नित्य नमो सब पाप नशें ।।१०
जय हो उपसर्ग अहार हिना, जय नावत शीश सु इन्द्र सबा ।
जय मागध भाष सु अर्द्धमयी, जय प्राणिन में सब मित्तु ठही ।।११
जय षट्रितु फूल फला फलते, जय दर्पणवत् सु मही प्रदीपै ।
जय निर्मल हो दिश दिक् गगना, जय चर्ण तले कमला रचना ।।१२
जय गूंज नभा जय बान रही, जय मन्द सुगन्ध बयार चली ।
जय गन्ध उदोदक वृष्टि झरी, जय भूमि जु कंटक हीन हुई ।।१३
जय हर्ष सु हर्ष जु सृष्टि रही, जय चार दिशा जयकार हुई ।
जय धर्म सु चक्र चले जु अगे, जय मंगल द्रव्य सु अष्ट कहे ।।१४
जय अतिशै चौदह देव किये, जय केवल भानु सु ख्याति लहै ।
जय दोष अठारह नाश किये, जय वीत विराग जु आप्त भये ।।१५

जय धर्म सुदेशक देव भये, जय लक्ष सु पूरब एक रहे ।
जय केवल बोध नमूं चरणों, जय देव एक थारो शरणो ।।१६
जय बोधि समाधि प्रदान करो, जय केवलभान प्रकाश करो ।
जय देव सुभाव विभाव हरो, मम नन्त चतुष्टय पूर्ण करो ।।१७

दोहा

केवलज्ञान कल्याण के, स्वामी हैं जिनदेव ।
श्री वृक्षादिक नाम को, पूजूं मैं हित टेव ।।१८।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिक शतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री जिन सहसनाम की पूजा, श्रद्धा धर जो करते हैं ।
यश वैभव कीरत बढ़ती है, ज्ञान महानिधि लहते हैं ।।
नवनिधि चौदह रत्न प्राप्त कर, मुक्तिरमा वे वरते हैं ।
शाश्वत आत्मानन्द बरसता, ज्ञानसुधारस पीते हैं ।।

पुष्पाञ्जलिं

●

अथ षष्ठम कोष्ठ
महामुन्यादिक शतनाम पूजा

स्थापना

छन्द चौबोला

आओ नाथ हृदय में मेरे, कमलासन मम वास करो।
महामुनी आदिक शतनाम, जिनवर मम उद्धार करो।।
आव्हानन संस्थापन करता, नित्य पुकारूं भक्ति सु धार।
कर्म कालिमा रज धोकर के, कर दो निरमल मुझ को आज।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(छन्द - नराच)

सुनीर सिन्धु को जु लाय, भृंग में भरायकै।
जिनिन्द पाद में चढ़ाय, तीन धार डारके।।
"महामुनी" जु आदि नाम पूजता शतैक सौ।
मुनीन्द्र बोध दृष्टि दो, सु जन्म मृत्यु को हरो।।१।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

सु चन्दना सु केशरा सुगन्धिता जु लायकै।
जिनिन्द पाद में चढ़ाय ताप को विनाशनै।।
महामुनी जु आदि नाम पूजता शतैक सौ।
मुनीन्द्र बोध दृष्टि दो, दु पाप ताप नाश हो।।२।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

भराय थाल अक्षता अखण्डिता सुगन्धिता।
चढ़ाय पाद अग्र में जु पाप पुंज खंडिता।।
महामुनी जु आदि नाम पूजता शतैक सौ।
मुनीन्द्र बोध दृष्टि यतीन्द्र अक्षता सु दो।।३।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जुही सरोरुहा जु लाय, पुष्प माल थाल में।
जिनिन्द पाद में चढ़ाय, शूल काम नाशने।।
महामुनी जु आदि नाम, पूजता शतैक सौ।
मुनीन्द्र बोध दृष्टि दो जु कामबाण नाश हो।।४।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अनाश मुद्ग लाडु लाय, पोलियां बनाइये।
सुरत्न थाल में सजाय, देव को चढ़ाइये।।
महामुनी जु आदि नाम, पूजता शतैक सौ।
मुनीन्द्र बोध दृष्टि दो, जु भूख रोग नाश हो।।५।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूर जोति दीप ले, मणीमया सुथाल में।
जिनिन्द पूज भाव से, महान्ध मोह नाशने।।
महामुनी जु आदि नाम पूजता शतैक सौ।
मुनीन्द्र बोध दृष्टि दो, सुज्ञान का प्रकाश हो।।६।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांग धूप गन्ध लेय, अग्नि मांहि खेइये।
सुधूम कर्म की उड़ाय, कर्महीन होइये।।
महामुनी जु आदि नाम, पूजता शतैक सौ।
मुनीन्द्र बोध दृष्टि दो, जु अष्ट कर्म नाश हो।।७।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनार आम सन्तरा, सु एल केल लाइये।
जिनिन्द पाद भेंट धार, मुक्ति नार पाइये।।
महामुनी जु आदि नाम, पूजता शतैक सौ।
मुनीन्द्र बोध दृष्टि दो, जु मुक्ति नार को वरौं।।८।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादि गन्ध अक्षतान, अष्ट द्रव्य लायकै।
जिनेश पाद में चढ़ाव, रत्न थाल धारके।।
महामुनी जु आदि नाम, पूजता शतैक सौ।
मुनीन्द्र बोध दृष्टि दो, सुचर्ण प्रीति जोड़ दो।।९।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

महामुनी शत नाम ही, तिहुंजग शान्ति करेय।
निज आतम में शान्ति हो, धारा शान्ति करेय।।

शान्तये शान्ति धारा

सुरभित पुष्प सु मोगरा, चम्पा जुही गुलाब।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करो, होवे बोधि सुलाभ।।

पुष्पाञ्जलिं

अथ प्रत्येक अर्घ

चौबोला

जनमत अवधी परतच्छ धरैं, मन परजय दीक्षा बाद लहै ।
तब ज्ञानदिवाकर दमक उठे, जब कर्म घातिया चूर करै ।।
तुम धर्म धुरन्धर ज्ञानपती, नितनमत पुरन्दर देवपती ।
हे महामुनि'' अव दर्शन दो, मेरा समकित निरमल कर दो ।।१।।
ॐ ह्रीं अर्हं महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम आर्त रौद्र का त्याग किया, अरु धरम शुक्ल सुदृढ़ ध्याया ।
आरत से पशु रौद्र नरक से, नित भव्यजनों उपदेश दिया ।।
धर्म शुकल की अग्नि जलाकर, सब कर्म काठ का दहन किया ।
नाम 'महाध्यानी' जिनवर को, नित शत-इन्द्रों ने नमन किया ।।२।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आत्म ध्यान अनुरागी जिनवर, निजात्म सुधा में विलीन हुए ।
आदि ब्रह्म जिनदेव हमारे, मौन वे सहस्त्रों वर्ष रहे ।।
केवलज्ञानी पूर्ण विज्ञानी, दे उपदेशामृत बांट गये ।
'महामौनी' सु नाम विशेषा, तारण-तरण जहाज हुए ।।३।।
ॐ ह्रीं अर्हं महामौनिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप सु दुस्सह क्लेश सहन का, महासामर्थ्य जिन्हों का था ।
छह मासों तक फिरे घूमते, क्षुधा पिशाचिनी जीता था ।।
प्राणी मात्र सु रक्षक देवा, अभय सु दान के हो स्वामी ।
नाम 'महादम' पूजो निशदिन, काम-क्रोध मद नाश सुधी ।।४।।
ॐ ह्रीं अर्हं महादमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चामर छन्द

क्षान्त हो सुशान्त हो, महासहिष्णु नाम हो।
पापियों रु दुष्टियों, सुबुद्धियां अभीष्ट दो।।
आतमा प्रशान्त है, सुशान्त क्षान्तभाव से।
पूजता "महाक्षमा" सु, नाम पूज्य भाव से।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं "महाक्षमाय" नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील सामराज आधिपत्य आपने लिया।
ठार सेस[1] शील पाल मोक्ष राज्य पा लिया।।
आत्म रूप हो जिनेन्द्र आप रूप भासिया।
पूजता "महासुशील" नाम पाप नाशिया।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशीलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होम दी जु आपने, समीध पाप ताप की।
इन्द्र ओ नरेन्द्र पूज्य, आपकी सुभाव की।।
तीन लोक से सुपूज्य, नाम "महायज्ञ" की।
आरती करूं सदा हि, पाप ताप वारती।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य देव आप ही, जिनेश एक पूज्य हो।
पूज्य हो शतेन्द्र से, विशेषता सु पूर्ण हो।।
पूज आपकी जिनेन्द्र, पूज्यता सु देत है।
पूजता "महामखा", जु नाम महापूज्य है।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग हिंस भाव आप, आत्म रूप ले लिया।
लीक लीक चाल आपने, अलीक ना कहा।।
चौर्य नाहि ब्रह्म पाय, संग हान वीर हो।
नाम है "महाव्रतापती", जिनेश पूज्य हो।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ सेस = सहस्त्र

पूज्य हो विराग हो जु, वीतराग आप ही।
बोध तीन लोक का, जिनेश आप्त आप ही।।
ज्ञान का सुधामृता सु, आप ही पिलाय हो।
''मह्य'' नाम आप देव, पूज्य से सुपूज्य हो।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं मह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुषी जु सीढ़िया कु, आपने उलंघ की।
कान्तिधार सैकड़ो, सहस्त्ररश्मि जीत ली।।
शोभ वीतराग की, सु अन्य देव ना धरें।
पूजते ''महा सुकान्ति धार' चर्ण आपके।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तिधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जीव रक्षका, दया सु दान वीरता।
लोक वा अलोक सर्व, आप में प्रभासता।।
नाम है ''अधिप'' आप, पूज्यता निकेत हो।
पूजता विशेष पूज्य, आप सर्व ईश हो।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जीवनदाता सर्व के ''महामैत्रीमय'' नाम।
नित्य निरञ्जन नाथ को पूजो आठों याम।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं ''महामैत्रीमयाय'' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लंगड़ा पैर न चल सके, खग ना नापे कोय।
सुगुण अनन्त'अमेय' के, माप सके ना कोय।।१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श बोध चारित्र तप, निधियां हैं तुम पास।
मोक्ष उपाय हि आप हो, ''महोपाय'' शुभ नाम।।१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोपायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चामर

कोटि सूर्य की सु रश्मियां लजाति आप से।
ज्ञान धाम आपका सु सर्वलोक वाप्त है।।
नाम है "महोमयं" जु पूजता सु चाव से।
पार होऊं सिन्धु नाथ भक्ति की सु नाव से।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो दयालु नाथ आप प्राणिमात्र रक्षका।
सर्व जीव रक्षिका सु देशना दया लता।।
हे "महाकारुणिक" दयालुता दिखाइये।
डूबते हुए मुझे सु पार तो लगाइये।।१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकारुणिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त तत्त्व पाप पुण्य लोक में ठसाठसे।
जीव दुक्ख सुक्ख पाय आपके हि कर्म से।।
ज्ञान में जु तीन लोक आपके चराचरे।
"मन्ता" नाम आप नाथ पूजता सु चाव से।।१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्प के विषं विषै जु गारुड़ी सु मन्त्र हो।
डाकिनी निकालने पिशाचिनी सु मन्त्र हो।।
तीन लोक वश्य को वशीकरा सु मन्त्र हो।
हे जिनेश पाप नाशने "महासुमन्त्र" हो।।१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामन्त्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यत्न आपने किया सु रत्न तीन लब्धि का।
पांच लब्धि में विशेष यत्न कर्ण लब्धि का।।
दर्श चर्ण मोहनी विनाशिया कु घातिया।
नाम है "महायती" सु तीन रत्न पालिया।।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य आपकी धुनी जु, धारती सु नाद ही।
दान जीव निर्भया सु, एक दे विभारती।।
नाम देव आपका, "महासु नाद" भासता।
पूजता जु चाव से, दुकर्म अष्ट नाशता।।२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य को बुला रही सु आतमा जगा रही।
योजना शता सु वाप है गिरा जु आपकी।।
देशना विशेष है जु सारता दिखा रही।
है "महासुघोष" नाम अर्चना सु गा रही।।२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाघोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव तू महान है सु इज्यता कु प्राप्त है।
इन्द्र ओ नरेन्द्र पूज्य पूज्यता कु प्राप्त है।।
उत्तमा सु उत्तमा जु दर्व थाल में सजा।
पूजता "महेज्य" नाम अष्ट कर्म हों बिदा।।२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेज पुंजता धरो सु कर्म आठ को हरो।
कोटि-कोटि सूर रश्मि एक तेज से हरो।।
नाम है "महसांपति" अर्चना सु आपकी।
कर्म आठ नाश के लहूं सु पांचवीं गती।।२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं महसांपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

महायज्ञ को धारते, महातपस्वी सु नाथ।
"महाध्वर धर" नाम को, पूजो पाप पलाय।।२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्वरधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म धुरा धारक जिना, ''धूर्य'' नाम गुणकार ।
सेवो भक्ती से सदा, जनम मरण की हान ।।२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं ''धूर्याय'' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तर्ज—अहो जगत गुरुदेव

गुण औदार्य विशाल, दान महा तुम कीना ।
काल विराग में आप, दान सभी का दीना ।।
''महौदार्य'' तुम नाम, यातैं मुनिगण गाया ।
पूजूं भक्ति समेत, समकित याही दिलाया ।।२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महौदार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दिव्यगिरा हैं आप, इन्द्रादिक से पूज्या ।
गणधर यतिवर पूज्य, वाणी न तुम सम दूज ।।
''महिष्ठवाक्'' शुभनाम, यातैं गणधर गाया ।
पूजूं भक्ति समेत, समकित याही दिलाया ।।२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिष्ठवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महामहाव्रत पाल, मुनिवर रूप सु भाया ।
महामहाधर ध्यान, केवलिपद को पाया ।।
आतम यातै महान, ''महात्मा'' नाम सुसिद्धा ।
पूजूं भक्ति समेत, तुम सम ओर न दूजा ।।२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं महात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन लोक का तेज, तुम तन मांहि समाया ।
यातैं और न तेज जग में, तुम सम पाया ।।
नाम सु ''महसांधाम'', यतिवर मुनिवर गाया ।
पूजूं भक्ति समेत, समकित याही दिलाया ।।३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं महसांधाम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महाऋद्धि के स्वामि, औषध विक्रियाक्षीणा[१] ।
केवलज्ञान की ऋद्धि, सबसे बड़ा नगीना ।।
ऋषियों के जु अधीश, ऋषीगण शीश झुकावे ।
यातैं ''महर्षि'' नाम, पूजत समकित पावे ।।३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं महर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रेणी क्षपक पर आप, चढ़कर मोह विनाशा ।
गुण बारह में जाय, नाशा रज अरु रहसा ।।
परमातम पद पाय, गुण तेरा जु सयोगी ।
''महितोदय'' शुभ नाम, तीर्थंकर पद भोगी ।।३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं ''महितोदयाय'' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मत्त गजेन्द्र समान, मन गज चंचल धाया ।
संयम अंकुश धार, क्षण भर मांहि पछाड़ा ।।
कष्ट सहिष्णु जिनेश, धीरज मीत तिहारा ।
''महाक्लेशांकुश'' नाम, जप लो एक सहारा ।।३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्लेशांकुशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

युद्ध क्षेत्र में जीत, जग में शूर कहावें ।
अथवा जीते सिंह, वे भी शूर कहावें ।।
इन्द्रिय मन को जीत, शूर नाम तुम पाया ।
कर्म अनन्त विहन्त, पूजूं ''शूर'' जिनन्दा ।।३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं शूराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग में सु भूत महा, चक्री गणधर आदिक ।
इनके स्वामी देव, भूत महापति नामी ।।
''महाभूतपति'' नाम बुधजन निशदिन गाते ।
पूजो भक्ति समेत, समकित इनसे पावें ।।३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१. विक्रियाक्षीण=विक्रया व अक्षीण ऋद्धि ।

छाय तिमिर घनघोर, सत्य न समझे कोई ।
मार्ग सुझाया आप, देशना धर्म सु देई ।।
सब जग गुरुवर आप, ज्ञान प्रकाश किया है ।
नाम "गुरू" का जाप, जप लो धार हिया में ।।३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वीर्य अनन्ता धनी, युगपत् वस्तु विवेदें ।
क्षण इक को ना खेद, निज में अति परमोदे ।।
"महापराक्रम" नाम, याही ते है सार्था ।
पूजूं भक्ति समेत, जनम न जावे व्यर्था ।।३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महापराक्रमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कालबली यमदेव, सब पर वार किया है ।
तुम हि महाबल धार, पास न आय सका है ।।
अन्त हुआ जु अनन्त, पर ना अन्त तिहारा ।
पूजो नाम "अनन्त", अन्त अनन्त[1] कराया ।।३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मित्र ना शत्रु कोय, समता रस आस्वादी ।
क्रोध विभाव सुभाव, उसके पूरण त्यागी ।।
कोप सुभाव जलाय, उसको तुम हि जलाया ।
'महाक्रोधरिपु" नाम, यातै गणधर गाया ।।३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्रोधरिपवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लघुता में प्रभु आप, जिनवर दास बने हो ।
लघुता से ही आप, प्रभुता प्राप्त भये हो ।।
हुआ उदास जु दास, सोऽहम् में रम पाया ।
अहं प्रभुत्व जगाय, नाम "वशी" कहलाया ।।४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं वशिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१. अनन्त=संसार ।

संसार एक समुद्र, जलचर आरत-रौद्रा।
राग-द्वेष रु मोह, बड़े-बड़े महामच्छा।।
भवदधि तारणहार, "महाभवाब्धिसंतारी"।
निशदिन करता जाप, डूबे ना नाव हमारी।।४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाभवाब्धिसंतारिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामोह गिरि आप क्षण में भेद दिया है।
बोधि समाधि सु सार, जग उपदेश दिया है।।
"महामोहाद्रि" नाम "सूदन" है गुणकारा।
जप लो नाम त्रिकाल, ये ही तारण हारा।।४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामोहाद्रिसूदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समकित दर्श रु ज्ञान, वीरज अव्याबाधा।
अवगाहन सूक्ष्मत्व, अगुरुलघु गुणधारा।।
"महागुणाकर" नाम, सिद्ध प्रसिद्ध हुआ है।
जाप जपो तिहुंकाल, जपते सुक्ख हुआ है।।४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोष तोष दुखकार, आतम शक्ति नशावें।
क्षण भर का भी क्रोध, तप में दाग लगावे।।
क्रोधमहारिपु जीत, क्षमा धरम के मीता।
यातै नाम है "क्षान्त", तुम ही ने जग जीता।।४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगी धरते ध्यान, निशदिन योग लगाके।
योगीश्वर गणराज, तिनके स्वामि कहाते।।
"महायोगीश्वर" नाम, यातैं बुधजन गाया।
पूजन भक्ति प्रसाद, मुक्तिवधू वर पाया।।४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायोगीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट करम का नाश, शम है बुधजन कहते।
उसके धारक देव, "शमी" नाम हम पूजें।।
तामस भाव न धार, समता सखी है साथा।
अष्ट दरब ले पूज, चरणों में धर माथा।।४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं शमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाध्यान है शुक्ल, पृथक् एकत्व वितर्का।
सूक्ष्मकिरिया जान, व्युपरतकिरिया निवृत्ता।।
ध्यान सु चारों स्वामि, महाध्यानपति नामा।
अष्ट दरब ले हाथ, चरणों पूज रचाया।।४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरब भव जिनदेव, श्रावक कुल में जाये।
ध्याय महा जिनधर्म, धरमपति पद पाये।।
नाम "ध्यातमहाधर्म", सुरनर किन्नर गाया।
पूजों अर्घ्य चढ़ाय, मोह तिमिर विनशाया।।४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं ध्यातमहाधर्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापाप हैं पांच, पूरण तुम तज दीना।
बाहर भीतर संग, तजकर दीक्षा लीना।।
ममता भाव कु त्याग, पूर्ण महाव्रत पाला।
नाम "महाव्रत" सार, पूजो अष्ट प्रकारा।।४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति चतुक कर्मारि, मूल से आप नशाये।
अरि हनन से हि आप, पद अरिहन्त सु पाये।।
"महाकर्मारिहा" नाम, इन्द्र नरेन्द्र सु पूजें।
पूजूं मैं दिन रात, कर्म महारिपु छूटे।।५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकर्मारिघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

आतम रूप पिछानिया, पूरण आप जिनेन्द्र ।
नाम ''आत्मज्ञ'' हे प्रभो, पूजूं जिनवर चंन्द्र ।।५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

देवों के अधिदेव हो, अहमिन्द्रों से पूज्य ।
''महादेव'' तव जाप से, पूजक भी हो पूज्य ।।५२।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भीतर नन्त चतुष्टया, समवसरण है बाह्य ।
लक्ष्मी युगपत् स्वामी हो, ''महेशिता'' तव नाम ।।५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेशित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शारीरिक मानस सभी, आकस्मिक जो क्लेश ।
क्षण में आप विनाशिया, ''सर्वक्लेशापह'' देव ।।५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्लेशापहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मनाश में तत्परा, ध्यान ध्येय सु लीन ।
संग्रह निग्रह से रहित, ''साधु'' नाम है चीन ।।५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं साधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्व दोष में अग्रणी, तृष्णा है बलवान ।
क्षुधा-जरा-जु तृषा नशे, सर्वदोष हर नाम ।।५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदोषहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव अनन्त का पाप जो, नाम लेत नश जाय ।
नाम सु ''हर'' है आपका, पूजूं मैं तिरकाल ।।५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं हराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुण संख्या कु उलंघिया, गिनती करे न कोय ।
''असंख्येय'' जिनराज हो, तुम सम और न होय ।।५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंख्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जामें अगणित सिद्ध हैं, इक में नन्ता जान ।
नाम ''अप्रमेयात्मा'' जिन, पूजत हो कल्याण ।।५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रूप चौपाई

प्रशम जिना उपशम शम कीना, कृष कषाय पच्चीस विहीना ।
शम सरूप आतम गुण भीना, 'शम आत्मा' शुभ नाम प्रवीना ।।६०

ॐ ह्रीं अर्हं शमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शम उत्कट को प्रशम कहा है, आकर बनकर कर्म दहा है ।
'प्रशमाकर' विभु नाम तिहारा, मेटो मिथ्या तिमिर हमारा ।।६१

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वृक्षमूल आतापन योगा, अभ्राकाश धरें त्रय योगा ।
धारक इनके तुम योगीशा, 'सर्वयोगीश्वर' नाम महेशा ।।६२

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वयोगीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है अचिन्त्य तव रूप सलोना, देव इन्द्र सब जन-मन भीना ।
नाम 'अचिन्त्य' सु पूज तिहारी, भेटो भव दुख बाध हमारी ।।६३

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ग्यारह अंग रु चौदह पूर्वा, जिनवर ज्ञाता एक अपूर्वा :
नाम 'श्रुतात्मा' है परसिद्धा, पूजूं पाऊं निजगुण रिद्धा ।।६४

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गंधकुटी जु सिंहासन बैठे, धर्मामृत देते तुम पैठे ।
आसन सम तव कर्ण विशाला, 'विष्टरश्रवा' नाम तव आला ।।६५

ॐ ह्रीं अर्हं विष्टरश्रवासे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महातपस्वी क्लेश विजेता, दान्त देव तुम परीषह जेता ।
उपसर्गों के विजयी नेता, 'दान्तात्मा' पूजूं सुख देता ।।६६

ॐ ह्रीं अर्हं दान्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्रिय निग्रह कारक शास्त्रा, दमतीर्था कहते जिन वक्ता ।
सब शास्त्रन के ईश जिनेशा, 'दमतीर्थेश' सु नाम विशेषा ।।६७
ॐ ह्रीं अर्हं दमतीर्थेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अलब्ध शुद्ध आतम निजरूपा, प्राप्त किया जिनदेव नियोगा ।
शुद्धातम तुम रूप निहारा, 'नाम योगात्मा' यजन तिहारा ।।६८
ॐ ह्रीं अर्हं योगात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोक अलोक सर्व जग जाना, है प्रमाण यह केवलज्ञाना ।
यातै नाम ''ज्ञान सर्वग'' है, तीर्थ प्रवर्तक नमन सतत है ।।६९
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानसर्वगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परम ध्यान शुकल तुम ध्याया, आतम में आतम को पाया ।
ध्यान शुद्ध परवीन सु देवा, नाम 'प्रधान' जपो दुख छेवा ।।७०
ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोक अलोक सतत जो जानें, तत्त्व द्रव्य का मर्म पिछानें ।
'आत्मा' नाम वृषभ जिनदेवा, करते कर्म रिपु प्रभु छेवा ।।७१
ॐ ह्रीं अर्हं आत्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोक अलोक परम हितकारी, जिनकृति है सब जग उपकारी ।
है प्रकृष्ट कृति आदि जिनन्दा, नाम 'प्रकृति' तिहुं जग के चन्दा ।।७२
ॐ ह्रीं अर्हं प्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

परा कहा उत्कृष्ट को, मा लछमी का नाम ।
''परम'' नाम पूजो सदा, पाओ मुक्ति सु धाम ।।७३।।
ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रूप चौपाई

चक्री बल हरि देव जु सारे, नमन करें चरणों में थारे ।
अभ्युदय के मुकुट सु मणीहो, 'परमोदय' के धाम सदन हो ।।७४
ॐ ह्रीं अर्हं परमोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुर्यबन्ध के क्षय जिन कर्ता, क्षीणमोह गुणथान कु धर्ता ।.
''प्रक्षीण बन्ध'' नाम गुणकारा, जपत जाप बन्धन दुखहारा ।।७५
ॐ ह्रीं अर्हं प्रक्षीणबन्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्रिय पंच विषय अभिलाषा, काम भोग में करे विलासा ।
काम शत्रु ने सब जग जीता, नमूं नमूं 'कामारि' विजेता ।।७६
ॐ ह्रीं अर्हं कामारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षेमसुकृत् जिन मंगलकारी, हरी भव्य की विपदा सारी ।
सकल उपद्रव नाशनहारे, नमूं 'क्षेमकृत' जग उद्धारे ।।७७
ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षेम सु शासन वृषभ जिनेशा, दिया भव्य को सद् उपदेशा ।
मंगल देशना मंगलकारी, नमूं 'क्षेमशासन' बलिहारी ।।७८
ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

प्रणव मन्त्र ओंकार है, पंच परम हा रूप ।
यातै स्तुत्य सु आप हो, ''प्रणव'' नाम सुखरूप ।।७९।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रणवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है उपासना आपकी, महापुण्य की खान ।
प्रीति प्राप्त सब जीव के, नाम ''प्रणय'' सुख धाम ।।८०।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रणयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा

''प्राणद'' हो बलदाय, बल अनन्त दो जीव को ।
काल बली कु हराय, नाम मात्र ही आपका ।।८१।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्राणदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन भक्तों के नाथ, प्राणों से भी प्रिय जिना ।
''प्राण'' जिनेश्वर आप, भक्तों के गुणमान को ।।८२।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्राणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मन-वच नावें शीश, यतिवर मुनिवर चरण में।
भक्तों के प्रभु ईश, ''प्रणतेश्वराय'' पूजूं सदा ।।८३।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रणतेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नराच

पदार्थ जीव आदि के सरूप जानने हितू।
प्रमाण रूप हो जिनेन्द्र आप सत्य के मितू।।
जजूं जिनिन्द चन्द के पदारविन्द भावसों।
'प्रमाण' नाम जाप से लहूं भवाब्धि पार को ।।८४।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

योग कु धारक योगिया, मुक्तिदूत जिनदेव।
सार असार को लखि रहें, नाम 'प्रणिधि' परमेश ।।८५।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रणिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नराच

जिनेश कोशला सरूप शीघ्र मुक्तगामि हो।
सुदक्ष हो विपक्ष हीन आप ही निपक्ष हो।।
जजूं जिनिन्द चन्द्र के पदारविन्द भावसौं।
सु 'दक्ष' नाम जाप से लहूं भवाब्धि पार को ।।८६।।
ॐ ह्रीं अर्हं दक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सरूप आपका विशुद्ध सार तत्व ग्राह्यता।
न लोभ है न शोक है न रोग की मिशालता।।
सुनाम 'दक्षिणा' जिनिन्द चर्ण चर्च भावसौं।
सु नाम जाप आपके लहूं भवाब्धि पार को ।।८७।।
ॐ ह्रीं अर्हं दक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौपाई

सोलह भावन यज्ञ किया है, स्वामिपना ऋत्विज का लिया है ।
मोक्षमहासुख यज्ञ उद्धारा, नाम 'अध्वर्यु' चरण हम दासा ।।८८

ॐ ह्रीं अर्हं "अध्वर्यवे" नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नराच

सुपन्थ मोक्ष का दिखाय, मोक्ष रूप हो लिये ।
सुदृष्टि बोध वृत्तधार, देशना सु दे दिये ।।
जजूं जिनेन्द्र चन्द्र के, पदारविन्द भाव सौं ।
भजूं सु "अध्वरा" जु नाम, तारने को नाव हो ।।८९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अध्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जोगीरासा

जनमत नन्द्यावर्त महल में, षट्ऋतु फूल फलावें ।
देवोंकृत भोजन वस्त्रों को, भोगत सुर सुख पावें ।।
धर संतोष परिग्रह त्यागें, आत्म सुधा आस्वादें ।
'आनन्द' कन्द सिरि जिनवर के, चरणों शीश नमावें ।।९०।।

ॐ ह्रीं अर्हं आनन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जनमत सुख गुण हुए समृद्धा, चारों दिश हरषाये ।
केवल बोध लहें जब जिनवर, होवे जय-जयकारे ।।
हरी-भरी कंचनमय पृथ्वी, कंटक रहित महाना ।
"नन्दन" नाम जिनेसुर पूजों, सुख होवे अम्लाना ।।९१।।

ॐ ह्रीं अर्हं नन्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानानन्दी परमानन्दी आतम अनुभव झूलें ।
दिव्यधुनी में आत्म सुधा को, बांटे सुख गुण पूरें ।।
'नन्द' जिनेसुर पूरण ज्ञानी, तिमिर अबोध नशाओ ।
बोधि समाधि प्राप्त करूं मैं, आतम जोति जगाओ ।।९२।।

ॐ ह्रीं अर्हं नन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नराच

जिनेश आपके सु चर्ण, देव इन्द्र पूजते।
सु "वन्द्य" हो जु वीतराग, पाद पद्म सेवते।।
जिनिन्द पूज्य आप हो, सुभव्य जीवपूजका।
मिले जिनेश पूज से, सु आत्म वीर्य सौख्यता।।९३।।

ॐ ह्रीं अर्हं वन्द्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनिन्द्य आप हो जिनेश, दोषहीन वंद्य हो।
पुनीत मीत आप ही सुवन्दना के योग्य हो।।
"अनिन्द्य" नाम अर्चना जु पाप पुंज नाशती।
सुपूज्य आप अर्चना हि पूज्यता दिलावती।।९४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्द्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विकारहीन रूप हो गुणा छियालिसा लसो।
सुसप्तपर्ण आम्र चम्पका अशोक भावनो।।
सुनन्दता बिछा रही विराग रूप भासता।
"अभी सु नन्दना" जिनेश आपकी सु अर्चना।।९५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभिनन्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निकाम हो जिनेश आप "काम दाह" को किया।
अनिच्छ भाव से सदा सु बोध दान को दिया।।
विकाम हो विदेह हो विशान्त हो विराम हो।
प्रकाम हा सुनाम पूजता महा प्रताप हो।।९६।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सु भव्य जीव इच्छिता पदार्थ पा रहे सभी।
सु वन्दना हि आपकी जु इष्टता को दे रही।।
जिनेश आप "कामदा", सु इप्सिता प्रदान से।
जजूं जिनेश आपको, सदा हि आप्त भाव से।।९७।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मन चिंतित सब ही मिले, जिनवर के दरबार ।
'काम्य' नाम पूजा करो, पाओ शक्ति अपार ।।९८।।

ॐ ह्रीं अर्हं काम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भक्त मनोरथ पूरने, ''कामधेनु'' सम आप ।
इच्छित पूरो आस मम, करो भवोदधि पार ।।९९।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामधेनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जोगीरासा

मिथ्या सम्यक् मिश्र अनन्ता, बन्धी को क्षय कीना ।
बार कषाय रु नव नो कषाय जु, जीता चारित मोहा ।।
मोह महारिपु मूल विनाशा, पूजूं अठ परकारा ।
नाम ''अरिंजय'' पूजा तेरी, करें भवोदधि पारा ।।१००।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरिञ्जाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

महामुन्यादि नाम की, पूजा करो त्रिकाल ।
रिद्धि सिद्धि तव घर बसे, जीवन होय निहाल ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामुन्यादिकशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामुन्यादिकशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय नमः ।

(लवंग से १०८ बार जाप करें)

जयमाला

दोहा

तीन लोक चूडामणी, महामुनी शत नाम ।
गाऊं गुणमणि मालिका, पूजूं आठो याम ।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

तर्ज—हे दीन बन्धु

जैवन्त तीन लोक ईश, दुःख विनाशी ।
जैवन्त हे जिनन्द, मुनीवृन्द सुभासी ।।
जैवन्त भुवन सूर्य, सर्वलोक प्रकाशी ।
जैवन्त भुविचन्द, भव्यकुमुद विकासी ।।१ ।।

जैवन्त है अशोक तरु, शोक को हरे ।
मरकत मणीमया जु पत्र, विचित्र रंग में ।।
जै पद्मराग मणि सु तुल्य पुष्प धरे हैं ।
अशोक प्रातिहार्य देव शोक हरे है ।।२ ।।

रत्नों जटित सिंहासना में मोतिया लटके ।
जैवन्त वीतराग देव अधर ही रहें ।।
मणीमया अनूप तीन छत्र शोभते ।
जै तीन लोक स्वामिपना ये ही द्योतते ।।३ ।।

भामण्डला की कान्ति चहुंओर दिपै है ।
भविजीव के भव सात, तामें दीख पड़े हैं ।।
दिव्यधुनी जिनेन्द्र आप, अमृता झरणी ।
पीते जो जना नित्य, वे तर जाय वितरणी ।।४ ।।

सुरकल्पतरु से सुमन, सुगन्धिता लाते ।
वे भांति-भांति के प्रसून, नित्य बरसाते ।।
चन्द्र चांदनी समा, जो श्वेत विभासें ।
चौसठ चंवर ढुराय देव, पुण्य कमाते ।।५ ।।

ओंकार रूप वान खिरी, अक्षरी नहीं ।
महाभाषा अठारा है, लघु शतक सात ही ।।
सब जीव वाणी आप सुनें सर्वभाषा में ।
अतएव संख्यातीत भाषा में ही ये खिरे ।।६ ।।

बाजे बजे हैं नित्य मधुर कर्ण को प्रिये ।
मानो वे बुला ही रहे जिनेश को हिये ।।
वसु प्रातिहार्य देव अरहंत शोभते ।
मन रंजना ये भंजना हैं पाप कर्म के ।।७ ।।
नाम के छियालीसा हैं सुगुण अनन्ता ।
नहीं पार पा सकी है मम बुद्धि अल्पता ।।
तव बाह्य लच्छमी समोशर्ण राजती ।
है नन्त चतुष्टय जु अन्तरा में शोभती ।।८ ।।
हे नाथ आत्म ज्योति जगे, बोधवृत्त की ।
सम्यक्त्व मेरा पूर्ण हो, क्षय कर्म हों सभी ।।
मम बार-बार प्रार्थना है, ध्यान दीजिये ।
बस अष्ट कर्म नाश का, वरदान दीजिये ।।९ ।।

घत्ता

महामुनि शतनामा, पूरो कामा,
अतिशय धामा, पाप हरो ।
भव दुःख विनासो, आतमभासौं,
बोधि समाधि, सु पूर्ण करो ।।१०।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिकशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री जिन सहस नाम की पूजा, श्रद्धाधर जो करते हैं ।
यश वैभव कीरत बढ़ती है, ज्ञान महानिधि लहते हैं ।।
नवनिधि चौदह रत्न प्राप्त कर, मुक्तिरमा वे वरते हैं ।
शाश्वत आत्मानन्द बरसता, ज्ञान सुधारस पीते हैं ।।

पुष्पाञ्जलिं

●

सप्तम कोष्ठ

असंस्कृतादि शतनाम पूजा

स्थापना

नरिंद्र छन्द

गणधर मुनीवर जिन चरणाम्बुज, नित्य सुशीश झुकाते ।
सौ इन्द्रों से वन्दित जिनवर, वाञ्छित करते काजे ।।
आओ नाथ विराजो उर में, मन कमलासन राजो ।
आह्वानन संस्थापन करता, केवलबोध प्रकाशो ।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक

(तर्ज—दशलक्षण पूजा)

जिन वच शीतल नीर, धारा सुरभि सुगन्ध की ।
जन्म जरामृत नाश, पूजो असंस्कृतादिशत ।।१।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

केशर चन्दन घीस, पाद सु पद्म चढ़ाइये ।
भव का ताप विनाश, पूजो असंस्कृतादिशत ।।२।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्दुल अमल अखण्ड, मुक्ताफल सम शुभ्र हो ।
पद अक्षय दातार, पूजो असंस्कृतादिशत ।।३।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

चम्पा पुष्प गुलाब, होय सुवासित दशों दिशा ।
समर शूल नश जाय, पूजों असंस्कृतादिशत ।।४।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

गोघृत में पकवान, उत्तम मिष्ट बनाइये ।
रोग क्षुधा नश जाय, पूजो असंस्कृतादिशत ।।५।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जले ज्योति कर्पूर, घटपट में परकाश हो ।
मोह अन्ध हो दूर, पूजो असंस्कृतादिशत ।।६।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

खेऊं अगर सु धूप, उड़े कर्म की धूम्र हो ।
कर्म होय चकचूर, पूजो असंस्कृतादिशत ।।७।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ले कमरख अंगूर, फल के गुच्छे रस भरे ।
मोक्ष महाफलदाय, पूजो असंस्कृतादिशत ।।८।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फलादि अठ द्रव्य, उत्तम से उत्तम लहो ।
पद अनर्घ्य फलदाय, पूजो असंस्कृतादिशत ।।९।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा

असंस्कृतादिशत नाम, तिहुं जग शान्ती को करें ।
चतुसंघ शान्ती होय, शान्तीधारा मैं करूं ।।

शान्तये शान्तिधारा

दोहा

सुरभित पुष्प जु मोगरा, चम्पा और गुलाब ।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करो, होवे बोधि सुलाभ ।।

पुष्पाञ्जलि

अथ प्रत्येक अर्घ्य

चौबोला १६-१४ मात्रा

संस्कार विधि से रहित जिनवर, आनन्द अमरत रस झरे ।
जनमत धरे मति श्रुत रु अवधि, परम समरस निरझरे ।।
'असंस्कृत सु संस्कार' जु नामा, वीतरागी जिनदेव हैं ।
जो पूजते भव पार होते, वर भक्ति नौका एक है ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम जगत गुरु तीर्थंकरा हो, संस्कार विधि शक्या नहीं ।
गुणमूल के संस्कार हो स्वं, वरष अष्टम में तव सही ।।
महापुरुष तुम हि देव वृषभा, ना दुष्ट बर्बर पामरा ।
''अप्राकृता'' शुभ नाम तेरा, अब पार मम भवदधिकरा ।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्राकृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

''वैकृतान्तकृत्'' नाम है, विकृति कीनी अन्त ।
रोगादिक पीड़ा नहीं, नमें तुमें नित सन्त ।।३।।
ॐ ह्रीं अर्हं वैकृतान्तकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मरण अन्त को कहा जिनेशा, अन्तमरण का कर दीना ।
नाम ''अन्तकृत'' गाया गणधर, देव इन्द्र वन्दन कीना ।।
निज सुभाव उतपन्न किया जिन, पर विभाव का क्षय कीना ।
अष्ट दरब ले पूजन आये, जीवन अर्पण हम कीना ।।४।।
ॐ ह्रीं अर्हं अन्तकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाको सुनत मुदित हो भविजन, उदित होत चित चेत गहे ।
सुरग मुकत पदवी शुभ पावें, दोष राग मद मोह दहे ।।
मनभानी मनहर जिनवाणी, सुन सुन भविजन रूप लहैं ।
दोष रहित हित मित प्रिय वाणी, नाम 'कान्तगु' सु देव जजै ।।५।।
ॐ ह्रीं अर्हं कान्तगवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कोटि सूर्य सम तेज दमकता, वीतरागता बलिहारी ।
साम्यभाव की तेज दीप्ति से, दीपित आतम जोति रही ।।
नाम ''कान्ति'' यह महा मनोहर, पाप ताप संताप हरे ।
भक्ति भाव से वन्दन कर भवि, उच्च गोत्र शुभ प्राप्त करें ।।६।।
ॐ ह्रीं अर्हं कान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हो मुदित मन जो उदित रवि सा, ध्यान धारे जो आपका ।
चिन्तन करें संस्मरण धरके, मणि समा जिन प्रभु अहा ।।
'चिन्तामणि' प्रभो इष्ट दाता, मैं प्रणमता भाव सौं ।
उत्तम मुकत फल देहु मोकू, आस करूं नित आप सौं ।।७।।
ॐ ह्रीं अर्हं चिन्तामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनभक्त जिनवर भक्ति से ही, फल सू वाञ्छित पा जाता ।
भक्त नहीं जो भगवन तेरा, सब अनिष्ट उसका होता ।।
तुम समदर्शी हो प्रभो विरागी, राग-द्वेष लव लेश नहीं ।
नाम ''अभीष्टद'' शुभ जु तिहारा, सर्व लोक को इष्ट यही ।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभीष्टदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

काम क्रोध ने सब जग दाहा, लोक हि पीड़ित सदा किया ।
जीता क्रोध काम भी जीता, जीता अजित देव संसार ।।
''अजित'' जिनेशा परम सुखेशा, चरण नमें नित पद्मेशा ।
संकट काटो अरज समारो, भव से तारो जग्गेशा ।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीता कामदेव ने जग को, बड़े-बड़े बलवानों को ।
दिया पछाड़ हि एक बार में, ब्रह्मचर्य शुभभावों से ।।
अंग-अंग वश में है जिनवर, अरि अनंग को जीता है ।
'जितकामारि' कर्म प्रहारी, वन्दन निशदिन में है ।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितकामारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अतिशय जनमत दश शुभ धारक, केवल दस चौदह देवा ।
प्रातिहार्य फुनि आठ लसै अरु, नन्त चतुष्टय सुखभेवा ।।
सहस आठ लक्षण शुभ धारो, सुन्दर रूप सलोना ओ ।
माप सका ना कोई गुण को, 'अमित' गुणों के पुंज प्रभो ।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर केवलज्ञान विपेखें, लोक चराचर पूर्ण अहो ।
असंख्यातवां भाग निखरता, दिव्यध्वनि में मात्र विभो ।।
गणधर झेले वाणी उनकी, सर्व कथन ना शक्य प्रभो ।
गणधर वाणी कहते थकती, अमित 'सुशासन' आप नमो ।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमितशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज सुभाव खंडित कर डाला, क्रोध कषाय कि ये ज्वाला ।
क्षमा वीर का भूषण कहकर, साम्य भाव तव रखवाला ।।
जिनवर है 'जितक्रोध' इसीसे, कोप विभाव कु तज डाला ।
अर्चन करके चन्दन ने भी, बन्धन लोह का नश डाला ।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितक्रोधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्व जगत हितु मितु उपकारी, श्वेत रक्त तनु एक मिशाल ।
सर्व जगत उद्धार करू बस, भाव यहि शुभ मन में धार ।।
तीर्थंकर पद समवसरण में, जाति विरोधी जीव मिलें ।
भीतर बाहर शत्रू जीते, 'जितामित्र' शुभ नाम जपे ।।१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितामित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब बाधाएं जीती तुमने, उपसर्ग परिषह कु जीता ।
शुद्धातम से प्यार किया तुम, आतम रूप सदा निरखा ।।
सुखिया भाव शरीर तजा जिन, निशदिन आतम रमण किया ।
'जितक्लेश' यह नाम जिनेशा, क्लेश सभी तुम जीत लिया ।।१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितक्लेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कालबली ने सबको जीता, जनम मरण दुख पाया है ।
कालबली पर करी चढ़ाई, जनम जरा तुम नाशा है ।।
'जितअन्तक' जिनवर का वंदन, चन्दन जीवन कर देता ।
पूजै भक्ति भाव से जो भी, कालबली उससे डरता ।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मशत्रु तुमसे जिनहारा, घातिकर्म चकचूर किया ।
ध्यान अग्नि की एक लपट से, सर्व कर्म का दहन किया ।।
श्रावक मुनिवर गणधर जिन हैं, सबके स्वामि आप 'जिनेन्द्र' ।
जजैं भक्ति से चरण-कमल को, कर्म अरी का हो क्रन्दन ।।१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परम बुद्ध हो परम शुद्ध हो, परम विशुद्ध हो विज्ञानी ।
परमशान्त हो परम तेज हो, परम विराग हो परम यति ।।
'परमानन्दी' सुखानन्द देवा, देव इन्द्र नित पूज रचें ।
परमानन्दी पद वह पावे, पूजा जो भवि नित्य करे ।।१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान परोक्ष प्रतच्छ बताये, अवधि मनः हैं देश प्रतछ ।
ज्ञान जु केवल सकल कहा है, उसके स्वामि आप जिनिन्द ।।
प्रत्यक्ष बोध धारि गणधर के, आप हि स्वामी एक गणीन्द्र ।
भाव सहित वन्दन वे करते, सर्व पूज्य हि आप 'मुनीन्द्र' ।।१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जय के नगारे रुम झुम बजते, बाजे दुंदुभि मधुर धुनी ।
ललित सुरों युत मधुर दिव्यधुनि, मुख से खिरती ओम् सरूप ।।
प्रियहितकारी गभीर सु वानी, भव्यजीव कल्याणकरी ।
'दुंदुभिस्वन' शुभ नाम मनोहर, पूजत भागे कर्म अरी ।।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुंदुभिस्वनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

देव इन्द्र अहमिन्द्र भी, गावे तव थुति गान ।
''महेन्द्रवन्द्य'' जिनदेव को, कोटि कोटि परणाम ।।२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रवंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

योगी जिनका ध्यान धरें, उन मुनियों के इन्द्र ।
जाप जपें नित आपका, जय जय जय 'योगीन्द्र' ।।२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कषाय रहित जो हैं यति, तिनके जिनवर इन्द्र ।
ओ 'यतीन्द्र' सुखकर सदा, नमें सदा जग सन्त ।।२३।।
ॐ ह्रीं अर्हं यतीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सखी छन्द तर्ज—सुनिये जिन अरज

प्रभो नन्दन नाभिराया, जिनमारग तुम दरशाया ।
आनन्द के कन्द जिनिन्द, माता मरुदेवी नन्द ।।
''नाभिनन्दन'' नाम जिनेश, सिर नावें गण के ईश ।
थाल अष्ट दरब सजावें, पूजा तव मुक्ति पठावे ।।२४।।
ॐ ह्रीं अर्हं नाभिनन्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुलकर चौदहवें नाभि, जग में कीरत फहराई ।
पुत्र वृषभ कुल का दीप, जग का यह ही है प्रदीप ।।
'नाभेय' प्रभो तुम नाम, पूजा दे सुख मन भावन ।
ओ पावन परम उदारा, जग में शरणा बस थारा ।।२५।।
ॐ ह्रीं अर्हं नाभेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सखी छन्द

नाभिराज के वंशज देव, नित लेकर आवें अक्षत ।
चरणों में नित्य चढ़ावें, ''नाभिज'' चरणों शिर नावें ।।२६।।
ॐ ह्रीं अर्हं नाभिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अहिंसादि महाव्रत जिनके, षष्ठम अणु निशिभोजन ना ।
व्रत सुन्दर जिनमें निपजैं 'जातसुव्रत' को हम पूजैं ।।२७।।
ॐ ह्रीं अर्हं जातसुव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्व सप्त आप सुज्ञाता, ''मनु'' नाम जपो गुणदाता ।
अष्ट दरब थाल सजाऊँ, पूजन कर कर्म नशाऊँ ।।२८।।
ॐ ह्रीं अर्हं मनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जड़ से तम नाश किया है, तम नाम न शेष रहा है ।
तम नाशक धीर महन्ता, ''उत्तम'' शुभ नाम भदन्ता ।।२९।।
ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उपसर्ग परीषह नाना, व्रत से न चिगे भगवाना ।
नहिं भेद सका है कोई ''अभेद्य'' नमो दुख खोई ।।३०।।
ॐ ह्रीं अर्हं अभेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनका न विनाश कभी भी, अविनाशी जिनवर सोई ।
''अनत्यय'' नाम की वन्दन, वन्दन से कर्म न बन्धन ।।३१।।
ॐ ह्रीं अर्हं अनत्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नरेन्द्र छन्द

केवलज्ञान हुआ जिनवर कु, अनशन पूरणधारा ।
लक्ष एक पूरब परमाणा, ज्ञानामृत का पाना ।।
''अनाश्वान्'' शुभ नाम को पूजो, मन में शान्ति धराके ।
अनशन व्रत को दृढतर पालो, बसो मोक्षपुर जाके ।।३२।।
ॐ ह्रीं अर्हं अनाश्वसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब आतम में तुम श्रेष्ठा, ना तुम सम कोई ज्येष्ठा ।
उत्तम जिन नाम ''अधिक'' है, पूजै तैं पाप विलय हैं ।।३३।।
ॐ ह्रीं अर्हं अधिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऋषिवर गणधर गुरुदेवा, तिनमें प्रभो आप सुवर्य्या ।
''अधिगुरु'' नाम है मनहर, वन्दन नित करते गणधर ।।३४।।
ॐ ह्रीं अर्हं अधिगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुष्ठु शोभन प्रिय वाणी, निर्दोषा मितहितकारी ।
''सुगी'' नाम जपो गुणकारी, भव से यह पार उतारी ।।३५।।
ॐ ह्रीं अर्हं सुगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूजक को पूज्य बनाती, जिनवर पूजा तव ऐसी ।
आदिनाथ जिना ''सुमेधा'', पूजक को करते वेदा ।।३६।।
ॐ ह्रीं अर्हं सुमेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अतिशय जनमत दस धारा, बल अतुल जु अचरज कारा ।
''विक्रम'' भू त्रय में व्यापी, नाम विक्रमी जप सुखदायी ।।३७।।
ॐ ह्रीं अर्हं विक्रमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम गति मुकत सुदाता, संसार समुद्दर त्राता ।
हित उपदेशक भविजीवा, ''स्वामी'' सरवज्ञ सदीवा ।।३८।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दुठ देवें कष्ट पजारा, तापर भी नाहि चिगारा ।
अवमानादिक नाशक्या, दुराधर्ष नमूं नित भक्तया ।।३९।।
ॐ ह्रीं अर्हं दुराधर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

थिर नाम करम की प्रकृती, उत्तम तव गुण मणि कीर्ती ।
आकुल वाकुल ना यातै, नाम ''निरुत्सक'' है तातैं ।।४०।।
ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्सुकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वीशिष्ट है विष्टप धारा, छत्रत्रय मणिमय प्यारा ।
गणधर विशिष्टता धारें, तव नाम ''विशिष्ट'' चितारें ।।४१।।
ॐ ह्रीं अर्हं विशिष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शिष्ट धर्म जु निष्ठ सु साधु, तिन पालक इष्ट विश्वासु ।
'शिष्टभुक्'' नाम जिन अर्चा, वन्दन से पातक हर्ता ।।४२।।
ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टभुजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शम शान्ति दया क्षम धारी, आचार सदा सुखकारी ।
'शिष्ट' नाम करुँ नित अर्चन, पूजन से नशता क्रन्दन ।।४३।।
ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनदेव दरश सुखकारी, निज आत्म दरश दें भारी ।
निधत्त निकाचित विहारी, वन्दन ''प्रत्यय'' हमारी ।।४४।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वषामीति स्वाहा ।

आभा कमनीय शुभा की, पूरण वाञ्छा हो सब की ।
''कामन'' नामा जिनदेवा, वन्दन निशदिन गुणमेवा ।।४५।।
ॐ ह्रीं अर्हं कामनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अघनाशा ''अनघ'' जिनेशा, चतु घाति जु पाप विशेषा ।
मणिमय शुभ थाल सजाऊँ, भक्ती कर पुण्य कमाऊँ ।।४६।।
ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

''क्षेमी'' प्रभु मोक्ष निवासा, भविजीवन पूरें आशा ।
मणिमय शुभ थाल सजाऊँ, भक्ती कर शिवसुख पाऊँ ।।४७।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भक्तन कल्याण सु कर्ता, ''क्षेमंकर'' पाप विहर्ता ।
मणिमय शुभ थाल सजाऊँ, भक्ती कर शिवसुख पाऊँ ।।४८।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अविनाशी अक्षय देवा, नहि नाश अमर गुण तेरा ।
''अक्षय्य'' जिना की अर्चा, हरती बन्धन करमन का ।।४९।।
ॐ ह्रीं अर्हं अक्षय्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग का कल्याण जु कर्ता, शुभ जैनधरम सुखकर्ता ।
''क्षेमधर्मपति'' जिन पूजा, जिनवर सम और न दूजा ।।५०।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमधर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

''क्षमा'' भाव जिनेशा धारा, जग तीन सु आप उभारा ।
सामर्थ्य महा तुम धारी, नमूं ''क्षमी'' जिना सुखकारी ।।५१।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्षमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल

सत विसनी जो जीव सदा हंकार से ।
पूजे नहि जिनदेव पाप के भार से ।।
यातैं तव शुभ नाम ''आग्राह्य'' प्रसीध है ।
मूर्खों से ना पूज्य, साधु जन पूज्य हैं ।।५२।।
ॐ ह्रीं अर्हं आग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानगम्य जिनदेव, आपका रूप है ।
ज्ञान जु केवल ग्राह्य, शिवालय भूप हैं ।।
''ज्ञान निग्राह्य'' सु नाम, याहि तै सिद्ध है ।
बनूं केवली शीघ्र, यही मम रूप है ।।५३।।
ॐ ह्रीं अर्हं निग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंचल मन नहि बोधे, सिद्ध सरूप को ।
डोले लक्ष चुरासी, पापमय कूप को ।।
''ध्यानगम्य'' जिनराज, ध्यान के गिरिवरा ।
ध्याओ मन एकाग्र, सभी चिन्ताहरा ।।५४।।
ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्कट रूप कु धारक, कोई मिशाल ना ।
तीर प्राप्त हो पूर्ण, जिनेश्वर घाट का ।।
तारण तरण जिनेश, एक पतवार हो ।
तुम सम और न कोय, "निरुत्तर" नाम हो ।।५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शोभन सुखप्रद देव, पुण्य तेरा विभो ।
तासु सुफल तीर्थंकर, पद सुन्दर प्रभो ।।
भव-भव दान रु पूजा, अर्चन तुम किया ।
नाम "सुकृती" शुभदेव, भक्त हरदम लिया ।।५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुकृतिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धातु योनि है शब्द जिनेश्वर गाइया ।
द्वादशांग सुश्रुत कु, जिना उपजाइया ।।
पूरण दो दस अंग, सु योनि आदीश्वर ।
नाम "धातु" मैं नमूँ, नमें योगीश्वरा ।।५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं धातवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर पूज्य हो ।
पाप मूल के नाश पुण्य के पुञ्ज हो ।।
पूजा करें त्रिकाल रतनमय थाल ले ।
पुण्य भरें भंडार "इज्यार्ह" नाम से ।।५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं इज्यार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वस्तु कथंचित् नित्य, अनित्या यूं कही ।
पक्ष एकान्त विहीन, नयों की विधि सही ।।
नयगम आदिक नया, सप्त प्रतिपादका ।
नाम "सुनय" नित जपो, जापसे बन्ध ना ।।५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुनयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परम उदारिक देह, धातु सत हीन है ।
समवसरण में दिपै, एक मुख चार से ।।
''चतुरानन'' महिमा हि, जु अपरम्पार है ।
पूजो भवि तिरकाल, चार गति नाश है ।।६०।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुराननाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बाहर भीतर श्री हि, जिनवर साथ है ।
पंकजवत् निर्लिप्त, सदा अवदात हैं ।।
''श्री निवास'' फिर क्यू कर देह उदास हैं ।
रहस यहि जिनशासन को गणधर कहें ।।६१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनिवासाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चार घातिया नाश, चतुर्मुख हो गये ।
अतिशय केवल बोध, सुशोभित हो रहे ।।
''चतुर्वक्त्र'' यह नाम, चार गति नाश का ।
पूजो भवि तिरकाल, चुरासी भ्रमण ना ।।६२।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्वक्त्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

समकित दर्श रु बोध व्रत्त तप चार हैं ।
कर्मक्षय के द्वार जिनेश्वर साथ हैं ।।
तव ''चतुरास्य'' सु नाम जिनेश्वर गाइया ।
पूजै वसुविध ठाठ, मुकति में जाइया ।।६३।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुरास्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रथम करण अरु चरण द्रव्य अनुयोग ये ।
अर्थ रूप शुभ चार बसें तव मुखनि में ।।
नाम ''चतुर्मुख'' शोभ रहा, अनुयोग से ।
पूजो वसुविधि ठाठ, मान-मद खोयके ।।६४।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

साधु गणों के आप हितैषी सत्य हो ।
सफल किया है सत्य धार निज आत्म को ।।
सज्जन चित में वास सदा दिन रात हो ।
''सत्यात्मा'' तव नाम जपूं कल्याण हो ।।६५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रवि केवल शुध सत्य आप विज्ञान हो ।
नाम ''सत्यविज्ञान'' सदा अमलान हो ।।
पूजो वसुविधि देव अरघ शुध धोयके ।
कर्म घातिया चूर करो संग छोड़के ।।६६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यविज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वाचा सत है नाथ, महामन भावनी ।
सफला द्वादशगणा सुसुन्दर तारिणी ।।
ध्यान धरें ''सत्यवाक्'' जिनेश्वर का सही ।
कर्म नाशकर जाय, वहीं शिव की मही ।।६७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुण परजय उत्पाद्र जु ध्रौव्य विनाशका ।
शासन सत्य बखान करें सब वस्तु का ।।
स्याद्वाद सतभंग जिनेश्वर देशना ।
''सत्य सुशासन'' नाम, जाप से बन्ध ना ।।६८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है आशीष जिनेश्वर की शुभ देशना ।
अक्षय आशीर्वाद दातृ नवनिधि मिला ।।
इह परलोक कु सफल, करें आशीष से ।
''सत्याशी'' तव नाम जपें नित भक्ति से ।।६९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्याशिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुनः मात के गर्भ नहीं मैं अवतरूं।
जनम मरण के दुःख नाश मुक्ति वरूं।।
सत्य प्रतिज्ञा आप करी वृषभेशजी।
नाम ''सत्यसंधान'' नमें सुरदेवजी।।७०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यसंधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सज्जन जन को सत्य जिनेश्वर आप हो।
सत्य मार्ग परकाश करो वर आप हो।।
दुर्जन देवे दोष सत्य कू ना गहे।
नाम ''सत्य'' मैं जजूँ भाव हिरदै धरे।।७१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्व सर्व समीचीन परायण तत्परा।
मोह अन्ध तम नाश अन्यतम हर लिया।।
''सत्यपरायण'' नाम जिनेश्वर सत्य हो।
जाप करुँ दिन रात पाप ना बन्ध हो।।७२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यपरायणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

बारह तप में थिर सदा, आराधन नित भाव।
'स्थेयान्' नाम कु पूजता, पाप ताप मिट जाय।।७३।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थेयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

थूल थूल जिन आप ही, तुम सा थूल न कोय।
'स्थवीयान्'' शुभ नाम जजै, काटै करम कलेश।।७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थवीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मन्दिर में भक्त के, सदा विराजो आप।
चिन्तक को चिन्तामणी, नाम है ''नेदीयान्''।।७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं नेदीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त हृदय जिनका नहीं, जिन उनसे अति दूर ।
प्रकृष्ट नाम ''दवीयान्'' कु, जपो ध्यान धर पूर ।।७६।।

ॐ ह्रीं अर्हं दवीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नरेन्द्र (जोगीरासा)

दर्श[1] दूर में जग सब देखे, देश विदेश जु वार्ता ।
देख-देख के पाप कमावे, आरत रौद्र बढ़ाता ।।
केवलज्ञान हि ''दूर जु दर्शन'', लोक जु तीन दिखाता ।
जाने देखें सब कुछ जिनवर, भक्त जना सुखदाता ।।७७।।

ॐ ह्रीं अर्हं दूरदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अणु कहा है जु अतिशय सूक्ष्मा, अवधि जु मन पर्ज गम्य ।
जिनवर केवली उससे सूक्षम, योगी के भी अगम्य ।।
'अणु' नामा जिनवर को ध्याओ, पूजो भाव सु लाके ।
आठ दरब को थाल सजाओ, अरघ उतारो आके ।।७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

तव ''अणीयान्'' सु नाम है, अणु से अतिशय सूक्ष्म ।
छद्मस्थों के गम्य ना, पूजो जिनवर भूप ।।७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अणीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीन हीन नहीं मम प्रभू तीन लोक सिरताज ।
महाशक्तिधर आप हो, ''अनणु'' नाम विख्यात ।।८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१. दर्श - दूर = दूरदर्शन

तेईस जिन अतिशय गुरू हैं, आद्य गुरु आदीश जी ।
आद्य शास्तासू आद्य शासक, आद्य जिनवर आप ही ।।
नाम 'गुरुराद्यो गरीयसाम्'', आप गणधर पूज्य हो ।
पूजित शतेन्द्रों गणधरों से, वन्दना शत बार हो ।।८१।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुरुराद्योगरीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परम ध्यानी परमयोगी ध्यान शुकल उपाइया ।
सब काल परम शुकल सुध्यानि, घाति करम विनाशिया ।।
क्षण इक विलग ना योग से, ''सदायोग'' सु नाम है ।
पूजूं जिनेश्वर जोड़ कर मैं, चरण की तव आस है ।।८२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नन्द अमरत पान करते, काल तीनों जिनवरा ।
शुध बोध भाव विलीन हो, निज आत्म कि हि विशुद्धता ।।
आत्म रस आस्वादना से, ''सदाभोग'' सु नाम है ।
पूजता हूँ आत्मभोगी, भोग का ना काम है ।।८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदाभोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

तुम पूरण जिन चन्द्र हो 'सदातृप्त' क्षुध नाश ।
पूरण काजा सब हुए, सदा नमाऊँ भाल ।।८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदातृप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाम 'सदाशिव' सार्थ है, सदा शिवालय वास ।
सर्व काल कल्याण रूप, चरण कमल की आस ।।८५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदाशिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सदा काल निज बोधि में, विचरण करते नाथ ।
सदागति शुभ नाम को, पूजूँ आठो याम ।।८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदागतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रकृति पाप की सब हनीं, सदासुखी जिनदेव ।
'सदासौख्य' निज रूप में, आतम-निधि की सेव ।।८७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदासौख्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब विद्या के ईश हो, सर्वकाल जिनराज ।
'सदाविद्य' शुध ज्ञान मय, हरो तिमिर अज्ञान ।।८८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदाविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुसुमलता

अस्त न होता ज्ञान जु केवल, विमल चराचर बोध विशाल ।
मोह अहि डसने नहिं पावें, निशिपती सम जिन शुभ्र प्रधान ।।
नाम 'सदोदय' पूज्य आपका, तीन भुवन में एक मिशाल ।
आठ दरब ले पूज रचावें, धूम्र उड़ावें पाप प्रजाल ।।८९

ॐ ह्रीं अर्हं सदोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दिव्यधुनी इक योजन व्यापी, कर्णामृत प्रिया पाप हनी ।
सुनि सुनि भवि शुभ मार्ग गहे हैं, जाती नहीं है रिक्त कभी ।।
मुनि श्रावक व्रत धारें भव्य जु, 'सुघोष' प्रनाम की बीन बजी ।
अष्ट दरब ले पूज रचावें, पाप प्रघानि में पिले सभी ।।९०

ॐ ह्रीं अर्हं सुघोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सवैया ३१ मात्रा

मणिमुक्ता किरणों सम शोभे, वीतराग सिरि मुख जिनराज ।
चन्द्रबिम्ब भी लज जाता है, पाकर जिनवर शोभ अपार ।।
अष्ट दरब का थाल चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार ।
प्रभो 'सुमुख' हम दास तिहारे, तारो शीघ्र भवोदधि पार ।।९१

ॐ ह्रीं अर्हं सुमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सदा सौम्य हो, सदा शान्त हो, नहीं क्रूरता किंचित् काम ।
दुख सुख शीत उष्ण परीषह, सहते रहते शमन कषाय ।।
अष्ट द्रव्य का थाल चढ़ाकर, वन्दन करते बारंबार ।
प्रभो 'सौम्य' हम दास तिहारे, तारो शीघ्र भवोदधि पार ।।९२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वीतराग हो फिर सुखदाता, मानस सुख सन्तोष प्रदा ।
वीतराग में राग कु कणिका, देना सुख यह क्षम्य कहा ।।
भक्ति भक्त के पाप पुञ्ज को, पुण्य रूप कर देती है ।
वीतराग जिन 'सुखद' आप हो, भक्त की भक्ती कहती है ।।९३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुखदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भक्ति भक्त के अहित सभी का, कर देती है पूरण चूर ।
वीतराग की महिमा गाओ, होगा सुख नित ही भरपूर ।।
अष्ट द्रव्य का थाल चढ़ाकर, करते वन्दन बारंबार ।
प्रभो 'सुहित' हम दास तिहारे, तारो शीघ्र भवोदधि पार ।।९४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुष्ठु हृदय शोभत है सन्तत, सहज स्वभाव उदारमना ।
दया क्षमा समता रस पूरा, हिरदे में जु सुतोष सुधा ।।
अष्ट द्रव्य का थाल चढ़ाकर, करते हम वन्दन बारंबार ।
प्रभो 'सुहृत्' हम दास तिहारे, तारो शीघ्र भवोदधि पार ।।९५
ॐ ह्रीं अर्हं सुहृदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शत्रु प्रवेश नहीं कर पाता, कोट में जिनवर रहें सदा ।
तीन गुप्ति का कोट लगाया, आराधन का पहरेदार ।।
रूप आपका गूढ अनोखा, मिथ्यामति नहिं करें प्रवेश ।
देव 'सुगुप्त' हम दास तिहारे, तारो शीघ्र हमें अखिलेश ।।९६
ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन वच काय नियन्त्रण करना, वीतराग ने गुपती कहा ।
रतनत्रय की परम रक्षिका, पालन करती मात महा ।।
सचमुच पाली जिसने सुगुप्ति, उसकी हि होती सुमुक्ति है ।
'गुप्तिभृद्' हम दास तिहारे, तारो भवोदधि विनती है ।।९७
ॐ ह्रीं अर्हं गुप्तिभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज आत्मा के आप सु रक्षक, तीन रतन सुशुध गुप्ति धरो ।
मिथ्यात्रय को चूर किया जिन, आनन्द अमरत पान करो ।।
'गोप्ता' नाम सु पूज्य जिनेश्वर, वन्दन करता सुनित्य अहो ।
दास तिहारे चरण पखारे, तारो भव से पार प्रभो ।।९८
ॐ ह्रीं अर्हं गोप्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अधोमध्य अरु ऊर्ध्वलोक के, लोचन रूप हो आप जिना ।
लोक देखता तीन लोक में, आप समा नहीं अन्य मुना ।।
'लोकाध्यक्ष' सु नाम जिनेशा, वन्दन करता सु नित्य अहो ।
दास तिहारे चरण पखारे, तारो भव से पार प्रभो ।।९९
ॐ ह्रीं अर्हं लोकाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नरेन्द्र छन्द

तप से पतन नहीं हो जग में, तप से सब जग सीझा ।
तप से भू तरु धान्य उपजता, तप से तपता सोना ।।
आप तपस्वी क्लेश सहा है, समता धार महाना ।
नाम दमीश्वर जिनवर पूजा, करती मम कल्याणा ।।१००।।

ॐ ह्रीं अर्हं दमीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

असंस्कृतादि शत नाम कु, पूजो भवि तिरकाल ।
ऋद्धि सिद्धि तव घर बसे, जीवन होय निहाल ।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप—ॐ ह्रीं अर्हं श्री असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय नमः ।

(लवंग से १०८ बार जाप करें)

जयमाला

तर्ज—अहो जगतगुरु

जय जय जय जिनधर्म, जग में मंगलकारा ।
जय जय अनादि अनन्त, जय जय प्राण हमारा ।।
जय जय वस्तु सुभाव, दयामयी है धर्मा ।
जय जय दशविध धर्म, भाव क्षमादि बताया ।।१ ।।

जय जय दर्शन ज्ञान, चारित धर्म हमारा ।
रत्नत्रय है धर्म, आतम सुख का कारा ।।
जय जय इनकी प्राप्ति, होती चार अधारा ।
जय जय द्रव्य रु क्षेत्र, काल सुभाव महाना ।।२ ।।

जय जय द्रव्य अपेक्ष, जीवादिक छह गाया ।
जय जय क्षेत्र अपेक्ष, अस्ति जु काय कहाया ।।
जय जय काल सपेक्ष, नवों पदारथ माने ।
जय जय सात सु तत्व, भाव अपेक्ष प्रमाणे ।।३ ।।

जय जय आगम बोध, इनसे पूरण जानो ।
निज आतम स्वद्रव्य, क्षेत्र रु काल रु भावो ।।
परद्रव्यादिक चार, हेय कहे सुन हानो ।
उपादेय बस एक, शेष सभी न प्रमाणो ।।४ ।।

जीव के भाव हैं तीन, अशुभ शुभ अरु शुद्धा ।
तामें अशुभ जु हेय, शुभ है बन्ध सुकर्ता ।।
सम्यग्दृष्टि सु पुण्य, नहिं संसार बढ़ाता ।
मोक्ष का हेतू होय, यदि कांक्षा ना भाता ।।५ ।।

शुद्ध भाव से मुक्त, साक्षात् होते जीवा ।
यही सनातन रीत, जिनवाणी पीयूषा ।।
जय-जय शुध उपयोग, जब तक पावै नाही ।
जय जय तब तक पुण्य, नित्य करो रे भाई ।।६ ।।

उच्च दशा को धार, नीचे गिरो ना कोई ।
जय जय शुभ आधार, लक्ष्य सदा शुध होई ।।
तज दो अशुभ कु पूर्ण, नीति यही जिनवाणी ।
मोक्ष सु मारग पाय, वर लो प्रिय शिवनारी ।।७ ।।

जय जय प्रथम से तीन, घट तो अशुभ जु हो है ।
चौथे गुण से प्रमत्त, बढतो शुभ नित हो है ।।
सप्तम से हो शुद्ध, शुक्ल सु ध्यान जगावे ।
वस्त्रों में ना होय, जिनवाणी यह गावे ।।८ ।।

भाव अशुभ ना होंय, शुभ में प्रीति लगाऊँ ।
शुद्ध सदा हो लक्ष्य, स्याद्वादमती पाऊँ ।।
जय जय भवदधितार, जय जय जिनवर शरणम् ।
दोष हुए जु अनेक, क्षमा करो मम भगवन् ।।९ ।।

घत्ता

जय जय वृषभेशा, गुणपरमेशा, इष्ट सुधेशा तुमही नमूं ।
निज आतम शुचिकर, समकित निधिवर, भव भव में अब नाहि भ्रमूं ।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री जिन सहस नाम की पूजा, श्रद्धा धर जो करते हैं ।
यश वैभव कीरत बढ़ती है, ज्ञान महानिधि लहते हैं ।।
नवनिधि चौदह रत्न प्राप्त कर, मुक्तिरमा वे वरते हैं ।
शाश्वत आत्मानन्द बरसता, ज्ञान सुधारस पीते हैं ।।

पुष्पाञ्जलिं

●

अष्टम कोष्ठ
वृहदादिशतनाम पूजा

स्थापना

कुसुमलता छन्द

वृहदादिक शत नाम सू पूजत, चिरसंचित भविजन के पाप ।
क्षण भर में भग जाते निश्चित, जिनभक्ति का यह परसाद ।।
आह्वानन संस्थापन करता, पूजन की विधि करने काज ।
आओ आओ देव हृदय में, पाप तिमिर को भानु समान ।।

ॐ ह्रीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टक

चामर छन्द

नीर सिन्धु सुच्छ स्वर्ण भृंग में भराइये ।
पाद पद्म श्री जिनेन्द्र, देव के चढ़ाइये ।।
वृहदादि नाम की सदा करो समर्चना ।
अर्चना फला यही कि फैर होय जन्म ना ।।१।।

ॐ ह्रीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दनादि केशरादि पाद में चढ़ाइये ।
ताप राग शान्त होय भाव नित्य भाइये ।।
वृहदादि नाम की सदा करो समर्चना ।
अर्चना फला यही कि फैर होय जन्म ना ।।२।।

ॐ ह्रीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ्र चन्द्र रश्मि सा अखण्ड तन्दुला लिये ।
पाद अग्र में चढ़ाय, धार हर्ष को हिये ।।
वृहदादि नाम की सदा करो समर्चना ।
अर्चना फला यही कि फैर होय जन्म ना ।।३।।

ॐ हीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पारिजात आदि का सु पुष्प भांति भांति का ।
पाद पद्म में चढ़ाव काम मल्ल नाशका ।।
वृहदादि नाम की सदा करो समर्चना ।
अर्चना फला यही कि फैर होय जन्म ना ।।४।।

ॐ हीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

मिष्ट अन्न भांति भांति थाल में सजाइया ।
जिनेन्द्र सामने चढ़ाय वेदनी नशाइया ।।
वृहदादि नाम की सदा करो समर्चना ।
अर्चना फला यही कि फैर होय जन्म ना ।।५।।

ॐ हीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्न दीप लाय धूम्र वर्जिता विशुद्ध हो ।
चर्ण में जिनेश वार बोध धर्म शुद्ध हो ।।
वृहदादि नाम की सदा करो समर्चना ।
अर्चना फला यही कि फैर होय जन्म ना ।।६।।

ॐ हीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप लाय अग्निपात्र गन्धिता सु खेइये।
धूप अष्ट कर्म की उड़ाय धर्म सेइये।।
वृहदादि नाम की सदा करो समर्चना।
अर्चना फला यही कि फैर होय जन्म ना।।७।।

ॐ ह्रीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव सन्तरा सु डाल केल की रसाल ले।
स्वर्ण पात्र से चढ़ाय मुक्ति नार हाथ ले।।
वृहदादि नाम की सदा करो समर्चना।
अर्चना फला यही कि फैर होय जन्म ना।।८।।

ॐ ह्रीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवना सु चन्दनादि अक्षता मिलाइये।
पुष्प चारु दीप धूप द्राघ को चढ़ाइये।।
वृहदादि नाम की सदा करो समर्चना।
अर्चना फला यही कि फैर होय जन्म ना।।९।।

ॐ ह्रीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

वृहदादि शत नाम, चउगति दुख को वे हरें।
चार गति हो नाश, शान्ति करो सब जगत में।।

शान्तये शान्तिधारा

सोरठा

पारिजात मंदार, कल्पतरु के सुमन ले।
होवे बोधि सु लाभ, पुष्पाञ्जलि अर्पण करें।।

अथ प्रत्येक अर्घ

देवों के भी देव हो, ''वृहद्वृहस्पति'' नाम।
चरण कमल पूजूं सदा, मन वांछित हो काम।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृहद्वृहस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चामर

वान है प्रशस्त आपकी पदार्थ भासती।
जीव आदि नौ पदार्थ सत्य को प्रकाशती।।
''वाग्मी'' सु नाम आप वान कर्णमाधुरा।
पूज्य हो जिनेश आप वान की प्रमाणता।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं वाग्मिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग वाणी शुभा, तिसके तुम ही स्वामि।
''वाचस्पति'' नामा प्रभो, पूरो वांछित आस।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं वाचस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग और विक्रमा गुणा सुबुद्धि शौर्यता।
राज्य से विरक्त आत्म राज्य में विलीनता।।
मोह अन्ध को नशाय आप धैर्य धार हो।
नाम है ''उदार धी'' उदारता के धाम हो।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं उदारधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त तत्त्व चिन्तता सु बाह्यदृष्टि हीनता।
जीव वा अजीव तत्त्व गेयता प्रवीणता।।
संवरा सु निर्जरा सु बुद्धि की विलीनता।
मोक्ष तत्त्व के ''मनीषि'' नाम पाप नाशता।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनीषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

तर्ज—हूँ स्वतंत्र निश्चल

मत प्रतिवादी करण निरस्त, आप विलक्षण बुद्धि सुदक्ष ।
नाम 'धिषण' की महिमा सार, पूजत सुख हो अपरम्पार ।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं धिषणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वृहस्पती गणधर से श्रेष्ठ, ज्ञानी ध्यानी नमे सिर टेक ।
प्राज्ञ आप ईश्वर मुनीनाथ, धी युत श्री ''धीमन्त'' सहाय ।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शेमुष् ईश सु नाम प्रधान, चर्ण नमें सब शेमुष आन ।
''शेमुषीश'' जिन धीर गम्भीर, पाद पद्म में नाऊँ शीश ।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं शेमुषीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

गिरा कहो वाणी प्रबल, दिव्यधुनी तव सार ।
''गिरांपती'' वागीश कू, पूजूं अष्ट प्रकार ।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं गिरांपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जोगीरासा

बुद्ध, नरायण, आप महेश्वर शं हो शंभु गणेशा ।
ब्रम्हा ईश्वर तुम जगदीश्वर, वृषभेश्वर गुण ईशा ।।
'नैकरूप' तुम एक जिनिन्दा, नैकात्मा जग सारा ।
पूजें अठविध अर्घ चढ़ाके, कर्म नशावन हारा ।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं नैकरुपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौपाई

आदि प्रभु का गौरव गान, सात नयों से उन्नत जान ।
सप्त भंग से एकानेक, पूज 'नयोत्तुंग' नाम विशेष ।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं नयोत्तुंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

एक मुक्त में मुक्त अनन्त, निज निज सत्ता निज से अभिन्न ।
प्रभो आदि में सिद्ध अनन्त, 'नैकात्मा' यातै हो भदन्त ।।१२।।
ॐ ह्रीं अर्हं नैकात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रावक यति द्वय धर्म बखान, दिव्यधुनि प्रभो आदि सु सार ।
भेद अनेक कहे जिननाथ, 'नैकधर्मकृत्'' पूजूं आज ।।१३।।
ॐ ह्रीं अर्हं नैकधर्मकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आप सरूप गम्य ना शक्य, हारे बली हरि चक्री सर्व ।
हे जिनेश 'अविज्ञेय' सरूप, चरणों नावें सुर नर भूप ।।१४।।
ॐ ह्रीं अर्हं अविज्ञेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन सरूप नहीं बोधी गम्य, शुध सुभाव कहा तर्क अगम्य ।
'अप्रतर्क्यात्मा' नाम जिनेश, पूजूँ निशदिन पूज्य सुधेश ।।१५।।
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतर्क्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृतयुग के ज्ञाता भगवन्त, सुरनर किन्नर सेवें सन्त ।
नाम 'कृतज्ञ' कहा गुणवन्त, पूजें चर्ण दास हम कन्त ।।१६।।
ॐ ह्रीं अर्हं कृतज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शोभे देह सु चिह्न प्रकृष्ट, सहस आठ लक्षण उतकृष्ट ।
कृतलक्षण निशिपति सम तेज, पूजा कर लो भाव समेट ।।१७।।
ॐ ह्रीं अर्हं कृतलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सवैया

मात मरूदेवी प्रियगर्भा, सर्वारथ से आये जिना ।
गर्भमाय त्रय बोध सु धारी, हर्षित होवे जु मात-पिता ।।
'ज्ञानगर्भ' यातै तुअ नामा, पूजत इन्द्र जु उछाह घना ।
अष्ट दरब से पूज रचाऊँ, घर घर में सुख होय घना ।।१८।।
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौबोला

प्राणिमात्र में दया भाव धर, तीर्थंकर पद कर्म बंधा ।
दयाभावधर मातगर्भ में, आये तुम आदीश जिना ।।
'दयागर्भ' शुभ नाम तिहारा, जीव मात्र को अभय दिया ।
पूजूँ निशदिन हिये धारकर, दया धर्म शुभभाव किया ।।१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं दयागर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शंभु छन्द

रतनन की वर्षा बरस रही, पन्द्रह मासों तक स्वर्णमयी ।
यह नगरि अयोध्या धन्य हुई, खिल गई हृदय की कली-कली ।।
है 'रत्नगर्भ' ये श्रेष्ठगर्भ, बल हरि चक्री सब गर्भों में ।
वह धन्य मात का गर्भ हुआ, है श्रेष्ठ सभी अनगर्भों में ।।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सवैया

कोटि भास्करा लज्जित करता, देह जिनेश्वर परम उदार ।
परम तेज का पुञ्ज सु देहा, दरशक को आनंद अपार ।।
हे जिनेश ''प्रभास्वर'' देवा, कोटि नमन है बारम्बार ।
चरणों में तव शरण मिले बस, यही भावना है इकसार ।।२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल बिच कमल सदा निर्लिप्ता, तैसे गर्भमांहि जिनराज ।
मात उदर में गर्भ पाय भी, उससे भिन्न सदा प्रभुराज ।।
पद्म कहा लछमी से युक्ता, श्रीमय शोभा अपरम्पार ।
'पद्मगर्भ' हे देव जिनेशा, चर्ण वन्दना बारम्बार ।।२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोक तीन सब जगत विभा से, युगपत् केवल बोध सुभाय ।
तीन लोक है उदर आपके, 'जगदगर्भ' यह नाम कहाय ।।
अष्ट दरब का थाल सजा के, पूजूँ सिरि जिन अष्ट प्रकार ।
मन मन्दिर में आन विराजो, जिनवर मेरे परम दयाल ।।२३

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्गर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मातगर्भ में देव आंय जब, रत्नवृष्टि होवे तिरकाल ।
स्वर्णमया वरषा रत्नों की, 'हेमगर्भ' यह नाम कहाय ।।
अष्ट दरब का थाल सजा के, पूजूँ सिरि जिन अष्ट प्रकार ।
मन मन्दिर में आन विराजो, जिनवर मेरे परम दयाल ।।२४

ॐ ह्रीं अर्हं हेमगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अतिशय सुखदायक जिनदर्शन, चिरसंचित करता क्षय पाप ।
नाम 'सुदर्शन' पूज्य आपका, भक्तों का हरता संताप ।।
स्वर्ण थाल में दरब सजा कर, पूजूँ सिरि जिन अष्ट प्रकार ।
मन मन्दिर में आन विराजो, जिनवर मेरे परम दयाल ।।२५

ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म घातिया पाप बहूला, क्षयकर लक्ष्मीनाथ हुए ।
ज्ञान अनन्ता दर्श अनन्ता, सौख्य सुवीर्य कु सिद्ध किये ।।
'लक्ष्मीवान' है नाम तिहारा, निशदिन अर्चन तेरा है ।
मम समकित छूटे ना भगवन, चरणों में मम डेरा है ।।२६

ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शंभु छन्द

हम पुण्यहीन हम बोधिहीन, दरशन परतच्छ न होता है ।
वे पुण्यपूत हैं देव जिन्हें, जिनदेव सु दर्शन होता है ।।
वे क्षेत्र विदेह को जाकर के, भक्ती से दर्शन पाते हैं ।
हे 'त्रिदशाध्यक्ष' ! हे वीतराग, हम चरणों शीश झुकाते हैं ।।२७

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिदशाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

देव हरी चक्री बलधारी, बल की जिनके ना थाह कही ।
वे भी झुकते जिन चरणों में, उन जिनवर शौर का छोर नहीं ।।
अतिशय बलकारी जिनवर का, 'द्रढीवान' नाम निशदिन पूजो ।
वन्दन फल सब पाप नाश कर, आतम की ज्योती में रम लो ।।२८

ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़ीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

योगीजिन गुण गावते, ध्याते हैं दिन रात ।
हृदय कमल में वास हो, नाम सु ''इन'' सुखदाय ।।२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं इनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो जिनराज ।
नाम ''ईशिता'' याहि तै, जपो जपो दिन रात ।।३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईशित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आयस को चुम्बक यथा, त्यों भक्तों को आप ।
भव्यों के मन को हरो, नाम ''मनोहर'' नाथ ।।३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेत्र नासिका मुख तथा, हस्त पाद अठ अंग ।
''मनोज्ञांग'' जिनदेव के, इन्द्र होय नित दंग ।।३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्द्ध अनंग शेखर

गभीर हो प्रधीर हो, सु रत्न तीन वीर हो ।
सुबुद्धि दान देन से, सुसेतु धार पीर हो ।।
सु ''धीर'' नाम देव की, जु वन्दना त्रिकाल हो ।
प्रभो सु नाम ज़ाप से, न ताप हो न पाप हो ।।३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बखान सप्त तत्त्व का, धुनी जिनेश की करे ।
निदोष पूर्व ओ अपर, गुणों सुपूर्ण उच्चरें ।।
हिंसादि दोष की कणा, न बान में जिनेश के ।
'गंभीर शासना' जु नाम पूज्य है गणेश से ।।३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं गंभीर शासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

दयामयी शुभ यज्ञ के, आदि प्रभु हैं थंभ ।
'धर्मयूप' हि नाम जपो, पूजो आठो अंग ।।३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मयूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुणी निर्गुणी सम लखें, प्राणी मात्र ना भेद ।
करुणा स्त्रोत सु बहे सदा, ''दयायाग'' की टेव ।।३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं दयायागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्द्ध अनंग शेखर

प्रधर्म चक्र चालने सु आप ही धुरा प्रभो ।
सु ''धर्मनेमि'' हे जिनेश मुक्ति दूत वीर हो ।।
धुरा विहीन चक्र नाहि पा सका सु तीर हो ।
सु धर्मचक्र आप हीन ना हरे सु पीर हो ।।३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनेमये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

मनपरजय अवधी कहे, ज्ञान केवल परतच्छ ।
धारक मुनिजन ईश हैं, नाम ''मुनीश्वर'' दच्छ ।।३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौबोला

खंडक निज शत्रु, पाप विहंडू, निजगुण मंडू सुखसंगू ।
यह धर्मसुचक्रा, कर्म विहर्ता, शान्त सुधेशा सुखभर्तू ।।
'धर्मचक्रायुध' नाम विशालू, पूजत पाप विहंडा हो ।
मैं निशदिन ध्याऊँ, पूज रचाऊँ, चरण कमल तव शरणा हो ।।३९

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनदेव विशाला, हर जंजाला पाप विडारा सुखसंगा ।
आतम रस गंगा, पीवे चंगा, क्रीड़ अभंगा दुखभंगा ।।
शुभ 'देव' जु नामा, पूरो कामा, भक्ति चरणमा अभिरामा ।
मैं पूजूँ ध्याऊँ गुण-गण गाऊँ, निजहित चाहूँ हन कामा ।।४०

ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ अशुभ जु कर्मा, क्षय कर दीना, निज गुण चीना गुणरंगा ।
नित पाप विहीना, पुण्य प्रहीना, आत्मविलीना हियचंगा ।।
शुभ नाम ''कर्महा'' पूजो कामा, भक्ति चरणमा अभिरामा ।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, गुणगण गाऊँ, निजहित चाहूँ हन कामा ।।४१

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुध धर्म अहिंसा, किया सुघोषा, जिनधुनि कीना हितचंगा ।
जो भाव जु हिंसा, आप विनाशा, निज गुण राचा गुणगंगा ।।
'धर्मघोषण' नामा, पूरो कामा, भक्ति चरणमा अभिरामा ।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, तव गुण गाऊँ, निजहित चाहूँ हन कामा ।।४२

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मघोषणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनधुनि है सफला होय न विफला, जीव असंख्या हितलंगा ।
प्राणी बहु तारें, कर्म विदारै, मुक्ति धरावै तिमिर हरा ।।
'अमोघवाक' सु नामा, पूरो कामा, भक्ति चरणमा अभिरामा ।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, तव गुण गाऊँ, निजहित चाहूँ हन कामा ।।४३

ॐ ह्रीं अर्हं अमोघवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवान अमोघा, है शुध बोधा, पाप नशै संतापहरा ।
भवकर्ण प्रिया है, सुधास्त्रवा है, सस्य सुखा है, कर्मझरा ।।
'अमोघाज्ञ' नामा पूरो कामा, भक्ति चरणमा अभिरामा ।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, तव गुण गाऊँ, निजहित चाहूँ हन कामा ।।४४

ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम दया धुरन्धर, नमत पुरन्दर, निरदय निरमम ज्ञान विधू ।
पर ममता हीना, आतम चीना, वीतराग गुणसिंधु विभु ।।
'निर्मम' शुभ नामा, पूरो कामा, भक्ति चरणमा अभिरामा ।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, तव गुण गाऊँ, निजहित चाहूँ हन कामा ।।४५

ॐ ह्रीं अर्हं निर्ममाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धुनि सफला जिनवर, झेलें गणधर, सर्वभाषमय कर्णमधू ।
भवि समकित धारैं, मुनिव्रत पालें, वरकर लावें सिद्धवधू ।।
'अमोघशासन' नामा, पूरोकामा, भक्ति चरणमा अभिरामा ।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, तव गुण गाऊँ, निजहित चाहूँ हन कामा ।।४६

ॐ ह्रीं अर्हं अमोघशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कमनीय सु वदना, सुभग सलौना, सहसनयनकरि इन्द्रलखा ।
अणु सम जग सुन्दर, जिनवर अन्दर, समा गया नहि अन्य मिला ।।
शुभ 'सुरूप' जु नामा, पूरो कामा, भक्ति चरणमा अभिरामा ।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, तव गुण गाऊँ, निजहित चाहूँ हन कामा ।।४७

ॐ ह्रीं अर्हं सुरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम भग ज्ञाना, यश सु महाना, जिन अभिरामा वीर्य अहो ।
नहिं इच्छा जाकै, श्रीवश वाकै, धर्मवीर ऐश्वर्य भरो ।।
शुभ 'सुभग' जु नामा, पूरो कामा, भक्ति चरणमा अभिरामा ।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, गुण तव गाऊँ, निजहित चाहूँ हन कामा ।।४८

ॐ ह्रीं अर्हं सुभगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अन्तर में नंगा, बाहर नंगा, जिन हैं चंगा, बिनशंका ।
त्यागा दस बाह्या, अन्दर चोदा, गत सब रागा, हितसंगा ।।
'त्यागी' शुभ नामा, पूरो कामा, भक्ति चरणमा अभिरामा ।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, गुण तव गाऊँ, निजहित चाहूँ हन कामा ।।४९

ॐ ह्रीं अर्हं त्यागिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह समय सुशब्दा, राध जु अर्था, काल का वाचा बुधगाया ।
यह आदि न निधना, काल न नन्ता, तिसपरिणन्ता, सब जाना ।।
सब नव जु पदार्था, जिन सिद्धान्ता, तिसके ज्ञाता गुणवन्ता ।
तुम नाम 'समयज्ञ' ओ मर्मज्ञ, चरणों नाऊँ भगवन्ता ।।५०

ॐ ह्रीं अर्हं समयज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

सर्व गुणों के खान हैं, पूर्णशान्ति भरपूर ।
नाम 'समाहित' आपका, पूजें इन्द्र रु भूप ।।५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं समाहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अतिशय सुख में थिर भये, 'सुस्थित' यातै नाम ।
कर्म घातिया चूर कर, निज में है विसराम ।।५२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा

पर में नहिं अनुराग, 'स्वास्थ्यभाक' शुभ नाम है ।
धन्य धन्य बड़भाग, शुद्धातम में थिर रहो ।।५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वास्थ्यभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

व्याधि आधि नहिं आप में, सदा 'स्वस्थ' निज आत्म ।
पूजूँ अर्घ चढायके, शुद्ध रूप सुखदाय ।।५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तोटक

रज दर्श रु बोध निवारण हो,
नित केवल दर्श रु बोध गहो ।
हम शीश झुकावत चर्ण परें,
प्रभु 'नीरजस्क' नित नाम जपें ।।५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं नीरजस्काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नहिं जीव विनाशन हिंस करो,
नहिं जीव विदारक भाव धरो ।
तुम पूज्य जिना हम पूजक हैं,
तुम 'निरुद्धव' हो हम शीश नमें ।।५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुद्धवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नहिं कर्म कलंक विलेप रहा,
जड़ मूल उखाड़ हि आप दिया ।
तुम हो ''अलेप'' नहीं लेप धरो,
तुम पारस हो हम लोह विभो ।।५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अलेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

नहिं कलंक का लेश है ,निष्कलंक जिनराज ।
निष्कलंक आत्मा'' नमूँ,भाव भक्ति उर धार ।।५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तोटक

जय राग रु द्वेष विहीन विभो,
जय वीत विराग विशुद्ध विभो ।
जय शान्त चिदम्बर चर्ण नमो,
जय 'वीतराग' मम पूज्य प्रभो ।।५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीतरागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग में सब वस्तु जु सीमित हैं,
मन की यह इच्छा असीमित है ।
तुम डायन इच्छ कु जीत लिया,
शुभनाम ''गतस्पृह'' पूज्य भया ।।६०।।

ॐ ह्रीं अर्हं गतस्पृहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शंभु

मदमत्त गजों की धूम मची, जग को सब लूट लिया क्षण में ।
तुमने जीता संयम बलि से, 'वश्येन्द्रिय' पूजूँ प्रतिपल में ।।
हे वीतराग ! हे जीतअक्ष ! तव, पूजा करने आया हूँ ।
तव चरणों की पूजा करके, मैं पाप नशाने आया हूँ ।।६१

ॐ ह्रीं अर्हं वश्येन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

संसार महादव दहन किया, सब कर्म नाश कर मोक्ष लिया ।
नाम 'विमुक्तात्मा' जिनवर का, पाद पद्म का शरण लिया ।।
हे वीतराग ! हे जीतअक्ष ! तव पूजा करने आया हूँ ।
तव चरणों की पूजा करके, मैं पाप नशाने आया हूँ ।।६२

ॐ ह्रीं अर्हं विमुक्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ना शत्रु कोय है जगत माय, सब नाश किये धर साम्यभाव ।
जो तुच्छ बुद्धि तिन शत्रु मित्र, हे ज्ञानदीप तुम साम्य चित्त ।।
हे 'निःसपत्न' ! हे जीतशत्रु ! तव पूजा करने आया हूँ ।
तव चरणों की पूजा करके, मैं पाप नशाने आया हूँ ।।६३

ॐ ह्रीं अर्हं निःसपत्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विषयों को विष की बेलि समझ, तुम हुए पराङ्मुख मन-वच-तन ।
इन्द्रिय विषयों को जीत जीत, हुए आत्म सिन्धु में आप मग्न ।।
हे 'जित इन्द्रिय'! हे वीतराग, तव पूजा करने आया हूँ ।
तव चरणों की पूजा करके, मैं पाप नशाने आया हूँ ।६४।

ॐ ह्रीं अर्हं जितेन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभो राग द्वेष अर मोह हीन, तुम साध लिया सुख अन्तहीन ।
है परम शान्त जिनदेव रूप, झरता आतम रस सत सरूप ।।
है नाम 'प्रशान्त' सु शान्त रूप, हो पूर्ण चन्द्र सम सुख सरूप ।
हे देव चरण में शीश नमूँ, क्रोधानल को में शीघ्र वमूँ ।६५।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है ज्ञान जु केवल नन्त धाम, प्रापति तिससे जिन ऋषि बखान ।
हे नन्त तेज के पुञ्ज रूप, 'धामर्षि अनन्त' जु दीप्त रूप ।।
मोहान्ध जीत, हे जीतकाम तव पूजा करने आया हूँ ।
तुअ चरणों की पूजा करके, मैं पाप नशाने आया हूँ ।६६।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तधामर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंगं सुख को तुम लाते हो, भक्तों के पाप गलाते हो ।
हे "मंगलमय" जिनदेव विभू, भक्तों को पुण्य प्रदान विभू ।।
हे पाप नाश ! हे विश्वरूप, तव पूजा करने आया हूँ ।
तुअ चरणों की पूजा करके, मैं पाप नशाने आया हूँ ।६७।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मिथ्यादर्शन अरु बोध वृत्त, ये तीन महामल पाप सक्त ।
त्रय रत्न महाजल साबुन ले, तुम धोय दिया मल आतम से ।।
हो फलहामणि सम शुद्धजिना, हे निर्मल 'मलहा' नाम जिना ।
हे रत्न तीन परकाश जिना, नमते चरणों में देव मुना ।६८।
ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ अशुभ कर्म को अय कहते, जिनवर उनमें ना रच पचते ।
हैं पुण्य पाप दो कर्म वीर, सब योग हीन हो किये क्षीण ।।
हे अनय[1] देव ! हे क्षीणयोग !, तव पूजा करने आया हूँ ।
तुअ चरणों की पूजा करके, मैं पाप नशाने आया हूँ ।६९।
ॐ ह्रीं अर्हं अनयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परमाणू जग के अनुपमेय, सब समा गये तुम सुगुण देह ।
नहिं तुम सम जग में और कोय, ढूँढे दीपक ले ठौर ठौर ।।
हे नाथ "अनीदृक" अनुपमेय, तव पूजा करने आया हूँ ।
तव चरणों की पूजा करके, मैं पाप नशाने आया हूँ ।७०।
ॐ ह्रीं अर्हं अनीदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे चन्द्रसमा उपमान देव, हे तेज पुञ्ज उपमेय नेव ।
शत इन्द्र नमें तव चर्ण आय, नित "उपमाभूत" कु शीश नाय ।।
हे देव शुंभकर, क्षेमंकर, तव पूजा करने आये हैं ।
तव पूजा दुख की हान करे, हम पाप नशाने आये हैं ।७१।
ॐ ह्रीं अर्हं उपमाभूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१. जय - कर्म/ अनय-कर्मरहित

शुभ अशुभ बंध के फल बखान, शुभ सुख देवे दिव मनुज जाय ।
दुख अशुभ देय पशु नरक दाय, जिन धुनि गायो यह तत्त्व सार ।।
हे 'दिष्टि' देव, हे पुण्य पुञ्ज, हम पूजा करने आये हैं ।
तव पूजा पुण्य विकास करे, हम पाप नशाने आये हैं ।७२।

ॐ ह्रीं अर्हं दिष्टये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम भक्त सदा सुख शान्तिदाय, जो हैं अभक्त ते दुःखपाय ।
हे नाथ शुद्ध आतम विचार, नहिं राग-द्वेष चिनगार धार ।।
दरपण सम निर्मल निर्विकार, तुम वीतराग आनन्द धार ।
'दैवम्' भक्तों के दिव्यरूप, जो नमें शीश हो शिवसरूप ।७३।

ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पद्धड़ी

प्रभु बोध न गोचर हों सबको, नहि इन्द्रिय गोचर रूप अहो ।
तुम नाम 'अगोचर' पूज्य सदा, सुख पाय सु पूजक सिद्धशिला ।७४।

ॐ ह्रीं अर्हं अगोचराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब घाति विकर्म विनाश किया, तुम कर्म अघाति जलाय दिया ।
नहि रूप रसा वरणा हि रहा, तुअ नाम 'अमूरत' पूज्य भया ।७५।

ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अरहन्त अवस्था कल सहीत, निक्षेप थापना गुण विहीत ।
जिनगुण आरोपण मूर्तिमान, है काल जु पंचम में प्रधान ।।
हे 'मूर्तिमान' ! हे जगत पूज्य !, प्रतिमा अरहन्त सु पूज्य रूप ।
है वीतराग छवि मानहीन, पूजें निशदिन हों शिवसरूप ।७६।

ॐ ह्रीं अर्हं मूर्तिमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तोटक

जय केवल भानु प्रकाश किया, जय मोक्षमगा उपदेश दिया ।
जय श्रेष्ठ शिरोमणि 'एक' महा, जय पूजक पावत आत्म सुधा ।७७।

ॐ ह्रीं अर्हं एकस्मै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भुजंगप्रयात

अनेका गुणों से विपूज्या जिनेशा,
सहाया प्रभो ने गुणों को सुपाया।
''न एका'' अनेका न रुद्रा विभावा,
नमो देव एका सुभावा सुहाया।।७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं नैकस्मै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेका न तत्त्वा विलोका जिनिन्दा,
निजात्मा सुशोभे सदानन्द देवा।
'सुनानैकतत्त्वदृशा' देव म्हारा,
नमूँ देव देवा निजात्मा विलोका।।७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं नानैकतत्त्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुराकाल लागा जु मिथ्यात्व भारा,
जु रागादि दोषा विनाशा मुनीन्द्रा।
निजानन्द प्यारा थिरा भाव धारा,
सु ''अध्यात्म गम्या'' जिनिन्दा हमारा।।८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अध्यात्मगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न पापी जना जान पाते सरूपा,
जिनेशा अगम्या न गम्या कु दर्शा।
''अगम्या सु आत्मा'' नमूँ मैं सुचर्णा,
चढ़ाऊँ सुअर्घा जिनिन्दा सुपद्मा।।८१।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगम्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपूर्वा खजाना प्रभो आप पाया,
उसी में रमाया निजात्मा विशाला।
''सुयोगा सुवित्'' कू नमूं मैं त्रिकाला,
हरो नाथ मेरा दुकर्मा जु सारा।।८२।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

योगीजन कर वन्दिता, 'योगीवन्दित' नाम ।
करें जोड़कर प्रार्थना, निजपद हो विसराम ।।८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगिवन्दिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भुजंगप्रयात

सुलोका जु तीनो विलोका प्रतच्छा,
सुसंचार त्रैलोक्य देवा विइच्छा ।
स ''सर्वत्रगा'' नाम पूजूँ सुचर्णा,
नमूँ मैं नमूँ मैं नमूँ पाद पद्मा ।।८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वत्रगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सदाभावि काला, सुबोधा विधारो,
गुणां ज्ञान दर्शा सदा पारिणामो ।
''सदाभावि'' नामा सुपूजूँ सुचर्णा,
नमूँ मैं नमूँ मैं नमूँ पाद पद्मा ।।८५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदाभाविने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जोगीरासा

भूत भविष्यत् संप्रतिकाला, गुण परजय परणीता ।
वस्तु अनन्तानंत कु पेखे, केवलिश्री भगवन्ता ।।
तदपि निज आनन्द रस पीवें, जगदीशा जयवन्ता ।
नाम 'त्रिकाल विषयार्थ'' दृक मम, पाप हरो भगवन्ता ।।८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालविषयार्थदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सु शं प्राप्त देवा, निजानन्द सेवा ।
सुभक्तों विदीना सु शं का खजाना ।।
सुयोगी जनों के हितू देवदेवा ।
सदा शं प्रदाता सु ''शंकर'' नामा ।।८७।।

ॐ ह्रीं अर्हं शंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

परमानन्द सु प्राप्ति का, दिया सदा उपदेश ।
''शं वद'' नाम सु शोभनो, पूजो देव सु देव ।।८८।।
ॐ ह्रीं अर्हं शंवदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौपाई

तपकर स्वर्ण दमक दुति पाय, तपकर तरुवर फले फलाय ।
तपकर क्लेश सहा जिनराय, वीतराग छवि 'दान्त' निहार ।८९।
ॐ ह्रीं अर्हं दान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हो निष्काम तज्यो अक्ष ग्राम, रोग भग्यो निज में विसराम ।
विषयन को नहि वास है लेश, नाम जपो 'दमी' पाप न नेक ।९०।
ॐ ह्रीं अर्हं दमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धारो क्षमा खडग निज हाथ, करम शत्रू को करो प्रहार ।
'क्षान्ति परायण' जाप त्रिकाल, पूजूँ निशदिन अष्ट प्रकार ।९१।
ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्तिपरायणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्व जीव प्रतिपाल अनूप, दयासिन्धु मुनीनाथ गुणीश ।
'अधिप' नाम है महासुखदाय, नमूँ नमूँ जिनदेव त्रिकाल ।९२।
ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभो आनन्द परम सुख रूप, परमानन्दि चिदानन्द भूप ।
'परमानन्द' विशुद्ध अनूप, पूजो जीव पड़ो ना कूप ।९३।
ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध सु नय से जगत सब जीव, निज सम लखें जिनदेव सदीव ।
'पर आत्मज्ञ' जिना हर पीर, पूजूँ सु वसुविध धर उर धीर ।९४।
ॐ ह्रीं अर्हं परात्मज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बन्ध दशों से जिनवर भिन्न, कर्म क्षार कीने गुणधीर ।
तम नाशक तुम श्रेष्ठ जिनेश, नाम 'परात्पर' जपो दुख छेव ।९५।
ॐ ह्रीं अर्हं परात्पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

प्रियवर हो त्रय लोक में, तुम सम प्रिय ना कोय ।
हे 'त्रिजगद् वल्लभ' विभो, हरो अशुभ सब योग ।।९६।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगद्वल्लभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन लोक से पूज्य हो, वीतराग सरवज्ञ ।
हे ''अभ्यर्च्य'' सु चर्ण में, नमते सन्त महन्त ।।९७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यर्च्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शंभु

जिनवर की पूजा सुख देती, कल्याण पांच करवा देती ।
आराधन निशदिन करने से, जिनभक्ति मुक्ति का वर देती ।।
ये तीर्थंकर पदवी दाता, जग में सब जीव कु मंगल दें ।
''त्रिजगन्मंगलोदय'' देवा, जग में पूजक का क्षेम करे ।९८।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

तीन लोक के नाथ हो, सुर चक्रीकर पूज्य ।
''त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रि'', तुम सम नहि अन दूज ।।९९।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोक अग्र चूडामणि, तीन लोक सिरमौर ।
हे ''त्रिलोकाग्रशिखामणि'', नमें चरण मन मोर ।।१००।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वृहदादिक शत नाम को, जो पूजे तिरकाल ।
रिद्धि सिद्धि तव घर बसे, जीवन होय निहाल ।।

ॐ ह्रीं वृहदादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप—ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृहदादिकशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय नमः ।

(लवंग से १०८ बार जाप करें)

जयमाला

वृहदादिक शत नाम से, शोभित वृषभ जिनेश।
जयमाला अखिलेश की, कल्पवृक्ष सम देत।।१।।

(पुष्पाञ्जलिं)

तर्ज—हे वीर

जिनभक्ति करु मैं मन-वच से, मेरा समकित ना डोल सके।
मुरझायी जीवन की बगिया, यह भक्ति सुमन से विकस उठे।।टेक।।
जिनभक्ति सुशक्ति प्रदान करे, शक्ति से युक्ति सु कमल खिले।
युक्ति ही मुक्ति की मात अहो, भक्ती है मुक्ति की नाव कहो।।१।।टेक
जिनभक्ति..... ।।

पूज्यों के गुण अनुराग करो, शुभ भक्ती की पहिचान यही।
भक्ती में समर्पणता होती, घी जलता जैसे संग बाती।।२।।
जिनभक्ति..... ।।

इक ग्रामपती की भक्ती से, होता निहाल है एक दुखी।
तुम तीन भुवन स्वामी भक्ती, क्यों कर नहिं सकती निज सम ही।।३।।
जिनभक्ति..... ।।

श्री कुन्दकुन्द गुरु भक्ती से, देवी अम्बीके बुलवाया।
तब आदि दिगम्बर बतलाकर, निरग्रन्थ का डंका बजवाया।।४।।
जिनभक्ति..... ।।

मुनि मानतुंग के भक्ती से, ताले अठ चालिस टूट गये।
मुनि वादिराज का कुष्ट मिटा, कंचनमय देह दिपै जग में।।५।।
जिनभक्ति..... ।।

शिवकोटी राजा हठवादी, सामन्तभद्र पे रोष अपार।
बन्दो शंभु पिंडी को नातर, छोड़ो तुम जिन धर्म असार।।६।।
जिनभक्ति..... ।।

लीन हुए गुरुदेव भक्ति में, चन्द्रप्रभ प्रगटे अवतार।
जय-जयकार हुई तब नभ में, भक्ती है अघनाशनकार।।७।।
जिनभक्ति..... ।।

वन्दन से चन्दन बेड़ि कटी, अगनी का कुण्ड हुआ जलधार ।
अंजन निकलंक बनी भक्ती से, पतीदेव आये तिस द्वार ।।८।।
जिनभक्ति..... ।।

सोमा ने सर्प का हार किया, हुआ नमसकार में चमतकार ।
मैना ने पति का कुष्ट मिटाया, सिद्ध भक्ति का किया इलाज ।।९।।
जिनभक्ति..... ।।

विकराल नाग चन्दन लिपटे, सुन मयूर धुनी होते बेहाल ।
यों भक्ति मयूर की मधुर धुनि सुन, कर्म निकाचित होंय निढाल ।।१०।।
जिनभक्ति..... ।।

हे नाथ चरण में भक्ति रहे, तब तक जब तक ना मुक्ति वरे ।
इह जन्म तथा परजन्म जन्म, बस वीतराग से प्रीति रहे ।।११।।
जिनभक्ति..... ।।

मम मन गुप्ति औ वच गुप्ति के, पालन की कछु चिन्ता ना ।
बस भक्ति रहे समकित बरसै, वृत शील बोध का केन्द्र यहां ।।१२।।
जिनभक्ति..... ।।

दोहा

जो जानत अरहंत को, द्रव्य रु गुण परजाय ।
सोई जाने आप को, भक्ती से तिर जाय ।।१३।।

ॐ ह्रीं वृहदादिकशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री जिन सहसनाम की पूजा, श्रद्धा धर जो करते हैं ।
यश वैभव कीरत बढ़ती है, ज्ञान महानिधि लहते हैं ।।
नवनिधि चौदह रत्न प्राप्त कर, मुक्तिरमा वे वरते हैं ।
शाश्वत आत्मानन्द बरसता, ज्ञान सुधारस पीते हैं ।।

पुष्पाञ्जलिं

●

नवम कोष्ठ
त्रिकालदर्श्यादि शतनाम पूजा

स्थापना

शंभु

त्रैकालदर्शी शत नाम जिना, तुम तीन लोक सद्ज्ञानी हो ।
जानो सब एक ही काल विषै, तुम तो प्रभु अन्तरयामी हो ।।
आह्वानन संस्थापन करता, हे नाथ हृदय में आन बसो ।
मेरे उर के सिंहासन पर, हे नाथ विराजो वास करो ।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादि-शतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक

भुजंगप्रयात

मुनी चित्त सा नीर स्वच्छा लिया है,
प्रभो पाद पद्मे सु धारा दिया है ।
त्रिकाला सु दर्श्यादि देवा नमूँ मैं,
भवाब्धी प्रतारो सु अर्जी करूँ मैं ।।१।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुगंधीत कर्पूर अष्टा सुगन्धा,
प्रभो पाद चर्चो नशे सर्व फन्दा ।
त्रिकाला सु दर्श्यादि देवा नमूं मैं,
भवाब्धि प्रतारो सु अर्जी करूँ मैं ।।२।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनूपा अखण्डा सु तन्दूल लाओ,
जिनेशा पदाग्रा सु पुञ्जा चढ़ाओ।
त्रिकाला सु दर्श्यादि देवा नमूँ मैं,
भवाब्धि प्रतारो सु अर्जी करूँ मैं।।३।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोगरा पुष्प सेवंति लाओ,
कामारि जेता सु चर्णों चढ़ाओ।
त्रिकाला सु दर्श्यादि देवा नमूँ मैं,
भवाब्धि प्रतारो सु अर्जी करूँ मैं।।४।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अनाशा कलाकन्द लाडू इमर्ती,
क्षुधा डायनी पूज में त्रास कर्ती।
त्रिकाला सुदर्श्यादि देवा नमूँ मैं,
भवाब्धि प्रतारो सु अर्जी करूँ मैं।।५।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूरा जले ज्योति मोहान्धनाशे,
जिनेशा कु वारे कैवल्य जागे।
त्रिकाला सु दर्श्यादि देवा जपूँ मैं,
भवाब्धि प्रतारो सु अर्जी करूँ मैं।।६।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

विशुद्धा जु कंकोल धूपा चढ़ाऊँ,
कु कर्मारि धूली दिशाओं उड़ाऊँ।
त्रिकाला सु दर्श्यादि देवा नमूँ मैं,
भवाब्धि प्रतारो सु अर्जी करूँ मैं।।७।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फला भांति भांति लिया आम पिस्ता,
चढ़ाऊँ जिनाग्रे जिना मोक्ष जीता।
त्रिकाला सु दर्श्यादि देवा नमूँ मैं,
भवाब्धि प्रतारो सु अर्जी करूँ मैं।।८।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोहारि लेऊँ जला चन्दना को,
चढ़ाऊँ सु अर्घा जिनेशा महा को।
त्रिकाला सु दर्श्यादि देवा नमूँ मैं,
भवाब्धि प्रतारो सु अर्जी करूँ मैं।।९।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

त्रिकालदर्श्यादिक नाम तै, पाप सभी नश जाय।
समता रस का पान हो शान्ति सुधा बरसाय।।

शान्तये शान्तिधारा

पुष्प मोगरा मालती, चम्पा जुही गुलाब।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करो, पाओ बोधि सुलाभ।।

पुष्पाञ्जलिं

अथ प्रत्येक अर्घ

तर्ज—हे दीनबन्धु

सु भूतभाविकाल के जिनिन्द आप दर्शका।
समर्थता हि आपकी न अन्य कोय देवता।।
त्रिकालदर्शि नाम देव आपकी अराधना।
अराधना हि भक्त के है पाप की विराधना।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनिन्द तीन लोक के जु ईश आप एक हो।
मुनीन्द्र शीश नाय चर्ण विश्व भान तेज हो।।
युगादि देव आप ही सु तीर्थ में प्रधान हो।
जिनेश "लोक ईश" को प्रणाम हो प्रणाम हो।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक पूर्ण रक्षका जिनिन्द वीतरागता।
विरागता में राग का जु पक्षपात ना रहा।।
सर्व "लोकधातृ" देव तीर्थ में प्रधान हो।
जिनेश लोक रक्ष को प्रणाम हो प्रणाम हो।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकधात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहार पान ना किया, जिनिन्द वर्ष एक लौं।
दृढ़ प्रतिज्ञ ओ जिना, सुनिश्चला अभंग हो।।
"दृढ़व्रत" जिनिन्द नाम, तीर्थ में प्रधान हो।
जिनेश के चारित्र को, प्रणाम हो प्रणाम हो।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़व्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मारतंड हो बोध के, प्राणिमात्र के अग्र।
"सर्वलोकातिग" देव को, पूज चढ़ाओ अर्घ।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकातिगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज—हे दीनबन्धु

सु ''पूज्य'' हो जिनिन्द आप वीतरागता धरा ।
सु सर्व गेय बोधका जु मोक्षमार्ग देशका ।।
नरेन्द्र इन्द्र से सुपूज्य देव के सु देवता ।
अराधना जिनेश आप पापहारिणी सदा ।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नरेन्द्र

पाप पंक सौ जीव महादुख, पायो है संसारा ।
धर्म देशना जिनवर दीनी, कीनो भव निस्तारा ।।
धर्म विनेता आदि जिनेन्द्रा, पद पंकज शिर नावें ।
'सर्व लोक इक सारथि' नामा, जिनवर पूज रचावें ।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकैकसारथये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोक्षगमन के पूरब देवा, परम उदारिक देहा ।
रहते हैं निश्चल निष्कामा, मोह रहे ना क्षोभा ।।
नाम 'पुराण' सु पुर[१] में जीवन, यातैं गणधर गाया ।
पूजों अठविध दरब चढ़ाकै, मोह रहे ना माया ।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन लोक व्याप करें जो, ध्यान शुकल अरहंता ।
पुरू कहते उत्तम उत्तम गुण, भोगें भोग महन्ता ।।
इन्द्रादिक से पूज्य जिनेशा, गणधर चक्री ध्याते ।
नाम 'पुरुष' की पूजा कर लो, भव से पार लगाते ।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१. पुर = परमौदारिक

नराच

सुपूर्व हो जिनेश आप, आद्य आदिदेव हो।
सुधर्म तीर्थ के प्रधान तीर्थकार आप हो।।
जिनिन्द आपने प्रकाश मोक्षमार्ग का किया।
सुवीर मारतंड देव नाम ''पूर्व'' भासिया।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धगीता १४-१४ मात्रा

सुनो पूर्वांग को लेके जिना अचलात्म तक गाया।
अंग ग्यारा तथा पूरब, देशना चौदहा दाया।।
जपौ आदी जिनेशा कौ, मुक्ति का मार्ग दरशाया।
'कृत पूर्वांग जो विस्तर' नाम गणधर सदा गाया।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतपूर्वांगविस्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल तीजा हि जाये थे, ध्यान अरु तप सु ध्याये थे।
कर्म घाती नशाये थे, देव प्रथमा कहाये थे।।
दान पूजा गुणा स्वामी, देव आदीश्वरा नामी।
ज्ञान जोती प्रथम जारे, 'आदिदेवा' हमें प्यारे।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं आदिदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नराच

युगादि के पुरु महा जिनिन्द चन्द आप ही।
महापुराण के अरंभ आदि देव आप ही।।
जजौं जिनिन्द के पदारविन्द भक्ति भाव सौं।
''पुराण आद्य'' शीश नाव अष्ट अंग चाव सौं।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभंग रंग अंग आठ भक्ति है उमंग सौं।
पुरू कहे जु देव इन्द्र पूजते उछाह सौं।।
पुरू महान देवता अराध्य पूज्य भाव सौं।
'पुरू जु देव' भक्ति पाग नन्द ओ प्रभाव सौं।।१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुरुदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सब देवन के देव हो, प्रथम तीर्थ करतार।
पूजो नित "अधिदेवता", मोक्षमार्ग सिरताज ।।१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिदेवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि जिनेश्वर मुख्य हैं, कृतयुग के शिरमौर।
जपो नाम 'युगमुख्य' का, रहे न भव भ्रम और ।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगमुख्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत 'युग के ज्येष्ठा' जिना, श्रेष्ठा अन्य न कोय।
ज्येष्ठा जिन चरणों नमूँ, भाव भक्ति मद खोय ।।१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

कल्पवृक्ष जब नाश हुए थे, चिन्तित जीव घनेरे।
चरणों आये वृषभेशा के, अरज करें कर जोड़े ।।
सबके रक्षक क्षत्रिय जानो, वैश्य करें व्यापारा।
नीच काम जो करता भाई, शूद्र कहे भगवाना ।।
कृतयुग में उपदेश दिया प्रभु 'युगादि स्थित देशक'।
त्रिवर्णों की रचना सु कीनी, आदि प्रभो हित देशक ।।
असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प बताया देवा।
पूजूँ वसुविधि अर्घ सजाकर, होवे संसृति छेवा ।।१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगादिस्थिति देशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभंगी

भानू शशि लाजै, जोति सु छाजै, सब तम भाजै सुखसंगा।
जिनदेह सु पीता, ताप सहिता, हर मन चंगा, शुभरंगा ।।
'कल्याण जु वर्णा' तम सब हरणा, गुणगणशरणा, शिवसंगा।
पूजो प्रभु चरणा, तारण तरणा, भव दुख हरणा, अठ अंगा ।१९।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरोगी देहा, देह न देहा, जीव निगोदा, नासंगा।
यह परम उदारा, जग निस्तारा, मणिमय प्यारा बहुसज्जा।।
'कल्याण' सु नामा, सुख का धामा, आठों यामा गुणगंगा।
पूजो थुति गाओ, हर्ष बढ़ाओ, गुणगण गाओ, निरभंगा।२०।
ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करुणा रस सिन्धो, पाप विखण्डो, भवभयहण्डो गुणमण्डो।
कल्याण सु मंडो, जीवदयंडो, सब दुख हुंडो, सुखमण्डो।।
शुभ 'कल्य' जु नामो, गुण को गामो, पूजो यामा अठ पेरो।
पूजो थुति गाओ, हर्ष बढ़ाओ, गुणगण गाओ, सुख पाओ।२१।
ॐ ह्रीं अर्हं कल्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याण जिनेशा मंगल देशा हित उपदेशा पापहरा।
मंगल अरिहंता ओ गुणवन्ता साम्य अनन्ता पूज्यवरा।।
'कल्याण लक्षण' नामा सुख का धामा आठों यामा पूजकरा।
पूजो थुति गाओ, हर्ष बढ़ाओ गुणगण गाओ नित्य मुदा।२२।
ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण लक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याण सरूपा, पुण्य निरूपा, पुण्य पुण्य नित राचै हैं।
शुभ समवसरण मा, बारसभा मा, देव इन्द्र सब गाजै हैं।।
हे 'प्रकृति कल्याणा' महिमावाना, परम विधाना पूज करें।
नित पूजैं ध्यावै, पुण्य बढ़ावे, फेर न आवें भव वन में।२३।
ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणप्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ओ पुण्य आतमा, पाप पास ना, इन्द्र देव सब लोक जजै।
हे दीप्त ज्योतिमय, पुण्य पुञ्जमय, इन्द्र नमत नित शीश धरै।।
'कल्याण आतमा, दीप्त' ज्योति मा, कर्म घातिया मूल हरै।
नित पूजो ध्याओ, पुञ्ज चढ़ाओ, पद अनर्घ्य वरदान करो।२४।
ॐ ह्रीं अर्हं दीप्तकल्याणात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंगप्रयात

जिनेशा तुमी पाप पुंजा नशाया,
तुमी कल्पनातीत कल्याण पाया।
कलंकापहारी वरी मुक्तिनारी,
जजो हैं 'विकल्मष' सदा सौख्यकारी ।।२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं विकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमाकान्त देवा अरीहन्त हन्ता,
कृतान्ता जिनिन्दा समस्तार्थ वेत्ता।
कलंका विहीना चिदानन्द धारा,
नमो देव देवा 'विकलंका' हमारा ।।२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं विकलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विभो पाप मूला जु देहा नशाया,
कला[1] से विहीना कलातीत गाया।
विदेहा जिनिन्दा नमो आदिनाथा,
जजों भाव पूरा नवाओ सु माथा ।।२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं कलातीताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलीला कहा पाप पुञ्जा विनाशा,
कृतान्ता विभो लोक धन्या कहाया।
'कलीलघ्न' नामा जु हन्ता भवारी,
सु पूजो जिनिन्दा सदा सौख्यकारी ।।२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं कलिलघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु-छन्द

जै कला बहत्तर के सामी, निज ज्ञान कला में अभिरामी।
सौ पुत्र भरत ओ बाहुबली, सब ज्ञान दान के उपकारी ।।
मैं नमूँ त्रिकालं ज्ञान उजारं हीन पुण्य हम पाप नशो।
सब संकट नाशो, पाप विनाशो, नाम 'कलाधर' पूज करो।२९।

ॐ ह्रीं अर्हं कलाधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. कला - (कल) - शरीर।

शिर नावे राज अवस्था में, राजा महाराजा अधिराजा ।
हो देव राज विभु आप इसी से, 'देव-देव' तुम प्रभुराज़ा ।।
मुनिपद तुम धारा सब कुछ त्यागा, नमें देव अरु मुनिराजा ।
तुम देवों के भी देव जिनेशा, चरण नमें सब ऋषिराजा ।३०।

ॐ ह्रीं अर्हं देवदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

अधोलोक में नरक कु वासा, मध्यलोक पशु मनुज बखान ।
देवगती में देव विराजै, उर्ध्वलोक में सिद्ध महान ।।
तीन जगत के नाथ जिनेशा, 'जगन्नाथ' का है ये प्रमाण ।
धरती से अम्बर तक मेरा, आधिपत्य है करूँ प्रणाम ।३१।

ॐ ह्रीं अर्हं जगन्नाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूर्य उदित होते ही पंकज, विकसित सब हो जाते हैं ।
पंकज बन्धू एक किरण पा, जीव सभी जग जाते हैं ।।
हे वीतराग सरवज्ञ देव, हे भव्यपद्म कू अर्क अहा ।
'जगद्बन्धु' है नाम इसीसे, भव्य खिलाये नेक महा ।३२।

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्बन्धवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इस तीन लोक का ईशपना, सिरि जिनवर तुमने ही पाया ।
तव पादारविन्द में आकर, चक्री बल ने भी शिर नाया ।।
हे 'जगद्विभु' हे चिदअम्बर, हम पूजा करने आये हैं ।
तेरे चरणों की पूजा से, हम पुण्य बढ़ाने आये हैं ।३३।

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्विभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुखी होंय सब जीव जगत, हो नहीं दुःख का लेश कभी ।
पापभीत हो पुण्य प्रीत हो, यह सद्भावना सदा रही ।।
'जगद्धितैषी' देव चरण की, वन्दन हम करने आये हैं ।
निज़गुण सम्पद की कर्मचोर से, रक्षा हम करने आये हैं ।३४।

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धितैषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौबोला (३० मात्रा)

आकाश नन्तानन्तमधि में, आकाश लोक विशाल है।
यह घनोदधी अरु घन तथा, तनु वातवलयों वृत्त है।।
अविनाशी है ये अनादि है, ये ईश का नहि है किया।
त्रैलोक्य के ज्ञाता जिनेशा, तव नाम शुभ 'लोकज्ञ' हा।३५।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

तीन लोक के ज्ञेय सभी झलकें ज्ञान मंझार।
युगपत् देखें सर्व को, 'सर्वग' नाम सुभाय।।३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन जगत के अग्र हो, तीन जगत शिरमौर।
लोकशिखर में जा बसे, नाम ' जगदग्रज' आप।।३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगदग्रजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिगीत

चर-अचर चारों गति सु जीवा, नारकी पशु देव हैं।
मनुज तिनके हित सुगुरु प्रभो, आदिनाथा एक हैं।।
सर्वसरूपा चार गति का आदिनाथा ने कहा।
पूजैं जु अष्ट प्रकार हम सब, 'चराचरगुरु' नाम हा।।३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं चराचरगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अगम्या सु रूप गोप्या, अज्ञ लोका गम्य ना।
जो आत्म रूपा है अमूर्त्ता, छद्मस्थ जाने लोक ना।।
हे 'गोप्य' देवा वीतरागी, पूजता हूँ चाव सौं।
मैं पार होऊँ भव जु वारिध, भक्ति की शुभ नाव सौं।।३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं गोप्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्त आतम गूढ रूपा, पूर्णिमा शुभ चाँदनी।
जिन अरि हना हन्ता जिना भी, हैं अहिंसा अग्रणी।।
तव नाम 'गूढात्मा' जिनेश्वर, पूजता हूँ चावसौं।
मैं पार होऊँ भव जु वारिध, भक्ति की शुभ नावसौं।।४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं गूढ़ात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यापार सब इन्द्रिय निरोधा, आत्मज्ञान प्रतच्छ हो।
हैं तीन लोक पदार्थ नन्ता, बोध गुण परजाय हो।।
तुम ज्ञान केवल पूज्य जिनवर, गूढ़गोचर नाम है।
अब पूजता हूँ चाव सौं मैं, भक्ति वर नौका यहे।४१।

ॐ ह्रीं अर्हं गूढगोचराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सुरग से च्युत हो जिनेश्वर, मात गरभ सु आ गये।
तव नाम 'सद्योजात' शोभित, रूप सुन्दर पा गये।।
अतिशय सु उत्तम रूप मनहर, सुरग के देवा जजै।
सुरकन्यकाएं मात सेवा, रुचकगिरि से आ करें।४२।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम है जिनका तेजरूपा, दीप्ततापरकाशता।
भानू शशी द्युति कोटि लाजै, ज्ञान केवल भासता।।
'आत्मा प्रकाश' सु नाम जिनवर, पूजता हूँ चावसौं।
मैं पार होऊँ भव जु वारिध, भक्ति की शुभ नावसौं।४३।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रकाशात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबोला

दीप्तिमान जिनवर की कान्ती, ज्वालायुत अगनी सम जान।
'ज्वलज्ज्वलन सप्रभ' शुभ यातैं, नाम कहा बुद्धि गुण खान।।
आठ द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा पाठ रचाऊँगा।
तव पूजा के अनुपम फल से, मुक्ति पुरी बस जाऊँगा।४४।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्वलज्ज्वलसप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाल लाल है, उदित सूर्य सम, देह कान्ति भामण्डल रूप ।
इसीलिये तो श्री जिनवर सम, नहीं दूसरों का है रूप ।।
सहस सूर्य सम सहसरश्मि धर, 'वर्ण आदित्य' सु दीप्त जिना ।
चरणों मस्तक धरते हैं नित, देव मनुज अरु सर्व गणा ।४५।

ॐ ह्रीं अर्हं आदित्यवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्वेत श्याम अरु पीत लाल हैं, वर्ण हरित पुद्गल के भेद ।
आदिनाथ जिन दीप्त जोति में, पीत वर्ण में भासें एक ।।
शुभ्र नाम 'भर्माभ' जिनेशा, हाटक द्युति सम कान्त युता ।
आठ द्रव्य से आठ अंग युत, पूजो भविजन भाव मिता ।४६।

ॐ ह्रीं अर्हं भर्माभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चामर

कोटि सूर्य चन्द्र सी प्रभा सदा सुशोभती,
नेत्र को सदा हरे सु है प्रभा जिनेश की ।
भासमान मण्डला जिनिन्द बोध दर्शका,
देव 'सुप्रभ' प्रबोध, अष्ट कर्म नाशका ।।४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

कनक अचल सम धीर हो, 'कनकप्रभ' शुभ नाम ।
तप्त कनक सम क्रांति है, पुनि पुनि करो प्रणाम ।।४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं कनकप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चामर छन्द

हे 'सुवर्णवर्ण' देव, वर्ण गंधहीन हो ,
मूर्त हो न देव आप, एक ही अमूर्त हो ।
मैं नमूं जिनिन्द को, त्रिकाल अष्ट अंग से,
नाथ लो उबार आज कर्म आठ कीच से ।।४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्णवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'रुक्म आभ' देव की सु लोक रंजिता विभा,
दर्श एक बार पाय पाप पंक हो बिदा।
सर्व तत्त्व देशना सुधीजना सु भावना,
पूजता हूँ अष्ट द्रव्य होय पुण्य सम्पदा।।५०।।
ॐ ह्रीं अर्हं रुक्माभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान पूर्ण धारका सु देह कोटि सूर्य सा,
बोधना सदा रही जु आप शान्ति तुष्टिका।
'सूर्य कोटि समप्रभा' जिनिन्द की सु वन्दना,
जो करे त्रिकाल पाय मुक्ति रूप अंगना।।५१।।
ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

तप्त कनक सम है वपू, ध्यान अगनि का तेज।
'तपनीयनिभ' जिनदेव कु, नमूँ नमूँ सिर टेक।।५२।।
ॐ ह्रीं अर्हं तपनीयनिभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चामर

तुंग लोक अग्र को बसाय भक्त आपना,
उन्नता जु उच्चता सदा सु भाव धारका।
तुंग नाम देव की करें सदा सु अर्चना,
अर्चना सुमार्ग जान भक्त वास मोक्ष का।।५३।।
ॐ ह्रीं अर्हं तुंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

ज्ञान केवला सु भानु, लोक सर्व भासता,
नायका जिनेश आप, बोधना सु देशना।
'बालअर्क आभ' देव साम्यता सु सौख्यता,
अर्चना सुमार्ग जान भक्त वास मोक्ष का।।५४।।
ॐ ह्रीं अर्हं बालार्काभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

दोहा

कर्मवनी को दाहने, अग्नि समा जिनदेव ।
''अनलप्रभ'' जिन नाम को, जपूँ जपूँ नित मेव ।।५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनलप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अस्ताचल के मेघ सम, भासमान ग्रह नाश ।
संध्याभ्रबभ्रु नाम है, पूजों आठो याम ।।५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सन्ध्याभ्रबभ्रवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चामर

हेमकान्ति को धरा सु भासमान मण्डला,
सू प्रिया हु मित्र सा सुमण्डला प्रभात सा ।
'हेमआभ' नाम की करो सदा सु अर्चना,
अर्चना सु वास जान भक्त वास मोक्ष का ।।५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं हेमाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

योगीरासा

कामभोग तजदीना देवा, चामीकर द्युति साजै ।
योग त्रिकाल धरें जिन देवा, ध्यान सु शुक्ल विराजैं ।।
तप्त चामीकर द्युति कु पूजो, पूजो हर्ष सु लाकै ।
पूजा जिनवर मुक्ति प्रदाता, पूजो वसु विध आकै ।।५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं तप्तचामीकरद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चामीकर सा तपता देहा, ध्यान तपोनिधि राजैं ।
छाया माया दोनों तजके, निजघर देहा भ्राजैं ।।
'निष्टप्तकनकच्छाया' गुण कु, पूजो हर्ष सु लाकै ।
पूजा जिनवर मुक्ति प्रदाता, पूजो भविजन आकै ।।५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

योग ध्यान की धमकन लागी, धूँ धूँ करम जलाई ।
दम-दम दमकें दमन शमन से, जिनवर तपके धारी ।।
'कनत सु काञ्चन सन्निभ' गुण कू, पूजो हर्ष सु लाके ।
पूजा जिनवर मुक्ति प्रदाता, पूजो भविजन आकै ।।६०।।

ॐ ह्रीं अर्हं कनत्कांचनसन्निभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चामर

श्री हिरण्यवर्ण देव मैं करुँ पदाब्ज सेव ।
पंच वर्ण तक्त एव ज्ञान वर्ण हे सुधेश ।।
श्री 'हिरण्यवर्ण' की सदा करो सुअर्चना ।
अर्चना हि मार्ग जान भक्तवास मोक्ष का ।।६१।।

ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मह सुमेर सम देह छवि, पीत वर्ण 'स्वर्णाभ' ।
लेश पीत का है नहीं पूजो आठों याम ।।६२।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्णाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नरेन्द्र

[१]शातकुंभ परवत पर होता, सोना अति चमकीला ।
तिस सम शोभा अति हि सुहावन, चित्तहरण मन भीना ।।
[२]शातकुंभ तज दीने तुमने, '[३]शातकुंभनिभप्रभा' ।
पूजो [४]सातकुंभप्रददेवा, कर्म हरें भव टेवा ।।६३।।

ॐ ह्रीं अर्हं शातकुंभनिभप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

अंग अंग दुति दमकती, हो अनंगदम देव ।
'द्युम्नाभ' जिनदेव नमूँ, नमें चक्री बलदेव ।।६४।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्युम्नाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१. सुमेरु पर्वत, २. सात नरक, ३. स्वर्णसम, ४. सातावेदनीय ।

सोरठा

चमक द्युतिकर युक्त, तपत तपत सोना हुआ।
'जातरूपाभ' सु नाम, द्वादशतपध्यानाग्नि से ।।६५।।

ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

जाम्बूनद की दीप्ति को, जीता सब कुछ त्याग।
तप्त सु जाम्बूनद द्युति, पूज करें बड़भाग।।६६।।

ॐ ह्रीं अर्हं दीप्त जाम्बूनदद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

श्री कलधौत सु धौत हैं, सर्व परिग्रह मुक्त।
परपरिणति छांडि सभी, आत्मबोधधनयुक्त।।६७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुधौतकलधौतश्रिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

परम उदारिक देह है, सप्त धातुकर हीन।
जीते भास्कर देव को, जपो सु नाम ''प्रदीप्त'' ।।६८।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रदीप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

क्षय मद अष्टक कर भये, ''हाटक द्युति'' जिनराज।
वीतराग विज्ञान को, पुनि पुनि करो प्रणाम।।६९।।

ॐ ह्रीं अर्हं हाटकद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

अडिल्ल

प्रीति करें सब इष्ट जना अतिशय सही।
आदि प्रभो हैं इष्टदेव बल्लभ मही।।
इन्द्रदेव धरणेन्द्र नमें चक्री सबै।
नाम सुगुण ''शिष्टेष्ट'' सदा अर्चा करें।।७०।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टेष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'पुष्टिद' नाम सु पुष्ट सदा शुभ गुणनि से।
भोग तजे निज आत्म योग शुध सृष्टि से।।
योगीश्वर नित दोष सदा सब ही हरें।
पूजक को कर पुष्ट सदा शिव में धरें।।७१।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्ध समान जु 'पुष्ट' जिना सदगुणनि से ।
नन्त सु दर्शन ज्ञान वीर्य सौख्यादि से ।।
सुहृद हैं महदेव सबल सिद्धदेव हैं ।
पूजक को कर पुष्ट सदा शिव में धरें ।।७२।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोकनि में तव दर्श, अर्थ सु 'स्पष्ट' है ।
सूक्ष्म सूक्ष्मतर [1]पष्ट करे [2]बुध-पुष्ट में ।।
अष्टम क्षिति में जाय बसें गुण अष्ट हैं ।
पूजक को कर [3]पुष्ट सदा शिव में धरें ।।७३।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वाणी है जिनराज अक्षरा स्पष्ट में ।
कर्णपुटा में अमृत सम है प्रियकरे ।।
परमब्रह्म अविनाशी शुध पद को धरें ।
पूजक को शुध बोध देय शिव में धरें ।।७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्वान काक चाण्डाल लोक में सब कहा ।
क्रोध महाचाण्डाल तपोवन को दहा ।।
सो जिन जीता क्रोध कषाय रु परीषहा ।
नाम सु 'क्षम' है देव आपका अघ हरा ।।७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मशत्रु का हान जिनेश्वर ने किया ।
पंच चेल परित्यक्त मुक्तिवधु वर लिया ।।
मोहमहारिपु अन्ध करा तुम जय किया ।
है 'शत्रुघ्न' सु नाम महागुण का भरा ।।७६।।

ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१. पष्ट = स्पष्ट । २. बुध - केवलज्ञान । ३. पुष्ट-पष्ट - शुद्ध ।

अप्रतिघ[1] अविनाशी जु आतम विनय जुक्त ।
कोप चण्ड निरमुक्त, साम्य गुण में प्रयुक्त ।।
पूजो थाल सजाकर वसुविध द्रव्य से ।
कर्म असाता हान करो पुन[1] संचके ।।७७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वाणी मधुरा है "अमोघ" जिनदेव की ।
चन्द्रकान्त दुति लाजै प्रियवर कर्ण की ।।
[2]मोघ नहीं जाता है जिनवर तप महा ।
ज्ञान सु केवल जान तपस्या फल अहा ।।७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्राणिमात्र पर करो दया यह धर्म है ।
हिंसादिक में नन्द महा हि अधर्म है ।
भव्य विनेयों को तुम दीनी देशना ।
नाम "प्रशास्तार" पूज करो भव बन्ध ना ।।७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशास्ते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रक्षक हो त्रय लोक अपाय से भयहरा ।
भव्य जनों के एक सु शासक शंकरा ।।
"शासिता" नाम शुभंकर है दुखहारका ।
हो संरक्षक चित्तहरण शिवकारका ।।८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं शासित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

नाहि अपेक्षा पर करी, नाहि किया गुरु कोय ।
निज में निज को बोधकर, भये स्वभू जिन सोय ।।८१।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१. पून=पुण्य, २. मोघ=व्यर्थ ।

नराच

सु 'शान्तिनिष्ठ' हो जिनिन्द, काम कोप नाशिया ।
सुशान्त रूप का सरूप, श्रेणि शुद्ध मांडिया ।।
कुकर्म जाल शान्तकार, घाति चार हानिया ।
यथार्थ है चरित्त आप शान्त भाव ठानिया ।।८२।।

ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जजौं जिनिन्द चन्द के पदारविन्द चाव सौं ।
सुसेष्ठ हैं सुजेष्ठ हैं मुनीन्द्र हैं विराग सौं ।।
प्रभो सुसामि आप ही गणीन्द्र हो सुबोध सौं ।
अनन्त चार को धरो "मुनी सु ज्येष्ठ" हो वरौ ।।८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुनिज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निरुद्ध चण्ड मानसा सु मोक्ष की अराधना ।
सुभव्य जीव देशना जु मोक्ष की प्रकाशना ।।
"शिवप्रताति" नाम जाप नाहि हो विराधना ।
शिवेश मुक्तिधाम धार याहि तै सुअर्चना ।।८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवतातये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

"शिवप्रदा" जिनिन्द के सु पादपद्म पूजिये ।
सु पञ्चकल्य भाव पाय तीर्थ ईश हूजिये ।।
जजौं विशुद्ध अष्ट द्रव्य, अंग अष्ट नाइये ।
क्षिती सु अष्टमा जु पाय आत्मनन्द पाइये ।।८५।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनिन्द वीतराग धार सौम्यता सु ईश हो ।
सुचर्ण आप में जु मित्त जात जो विरोध हों ।।
सुजन्म-जात वेर जीव शान्तता कु प्राप्त हों ।
जिनेश नाम "शान्तिदा" सु शान्ति दान आप हो ।।८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रूप चौपाई

कृत क्षुद्रों सु उपद्रव भारे, सदा शान्तता जिनवर धारें ।
नाम 'शान्तिकृत्' नाथ तिहारा, पूजत होय पाप निस्तारा ।।८७
ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षय कीना सब कर्म जिनेशा, शुद्धातम तुम नमें अमरेशा ।
नाम शान्ति वृषभेश तिहारा, पूजत होय पाप निस्तारा ।।८८
ॐ ह्रीं अर्हं शान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानादिक है अन्तर शोभा, बाहर समवरण मन मोहा ।
देह छवि भामण्डल प्यारी, 'कान्तिमान' पूजा सुखकारी ।।८९
ॐ ह्रीं अर्हं कान्तिमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भक्त आपका इच्छित पाता, चरणों में नित शीश झुकाता ।
'कामितप्रद' मम मुक्ति सु दीजै, तारण-तरण ! अमरपद दीजै ।।९०
ॐ ह्रीं अर्हं कामितप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

केवलज्ञान सु लच्छमी, सदा करे आस्थान ।
श्रियांनिधि ! नव निधि तजी, आतम निधि रस पान ।।९१।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रियांनिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अधिष्ठान' हो नन्त गुणा, पाप मूल कर नाश ।
अशरण के तुम ही शरण, भक्तन के सरदार ।।९२।।
ॐ ह्रीं अर्हं अधिष्ठानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

''अप्रतिष्ठ'' हो जिनवरा, आदिदेव सरताज ।
ना विरोध है काहु से, समता कुंजर आप ।।९३।।
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रूप चौपाई

धर्म दया सु 'प्रतिष्ठित' ईशा, जिनवर चर्ण नमें जु रिषीशा ।
ईश प्रतिष्ठा आप विशिष्टा, धर्म हीन ना पाय प्रतिष्ठा ।।९४
ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चारु चरण तुम योग निरोधा, खड्गासन पद्मासन सोहा ।
निश्चल 'सुस्थिर' आप जिनेशा, पूजें पादपद्म अमरेशा ।।९५
ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वचन काय मन जोग सम्हारा, निश्चल रूप अचल अविकारा ।
'स्थावर' नाम सु पूजो देवा, संसृति का हो शीघ्र हि छेवा ।।९६
ॐ ह्रीं अर्हं स्थावराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भाव औदइक उदय करावे, योग जीव को बन्ध करावे ।
सो योगा तुम रोधा स्वामी, 'स्थास्नु' सु नाम नमूँ गुणधामी ।।९७
ॐ ह्रीं अर्हं स्थास्नवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

तीन लोक से पूज्य हो, तीन लोकपति आप ।
हरि चक्री बलदेव नमें, नाम जपू ''प्रथीयान्'' ।।९८।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रथीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन जगत विख्यात हो, ख्याति प्रदर्शन दूर ।
पूजा लाभ की चाह ना, नाम ''प्रथित'' गुण भूर ।।९९।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रथिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौसठ चंवर ढुरैं सदा, प्रातिहार्य पुनि आठ ।
तीन छत्र शिर शोभता, पृथु प्रनामका ठाठ ।।१००।।
ॐ ह्रीं अर्हं पृथवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्रिकालदर्श्यादिक नाम कु, पूजे जो तिरकाल ।
रिद्धि सिद्धि ता घर बसे, जीवन होय निहाल ।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिकशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप—ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिकालदर्श्यादिकशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय नमः ।

(लवंग से १०८ जाप करें)

जयमाला

धत्ता

जय जय तीर्थंकर, जय परमेश्वर, जय जय जय जय परमगुरु ।
जय शीश नवाऊँ, जिन धुनि गाऊँ, पाप नशाऊँ परम प्रभु ।।

दोहा

त्रिकालदर्श्यादिक नाम को जपो जपो तिरकाल ।
रत्नत्रय निधि पायकर आतम होय निहाल ।।

(पुष्पांजलिं)

शंभु

हे नाथ प्रार्थना है मेरी, अरजी पर ध्यान जरा दीजै ।
मैं नन्त काल चौरासी भटका, जनम मरण अब क्षय कीजै ।।
मैं नन्त काल भव क्षुद्र धरे, ना क्षण भर भी विश्राम लिया ।
भू जल अग्नि अरु पवन वनस्पति, साधारण जु प्रत्येक हुआ ।।१।।
सूक्षम औ बादर बना सभी छह सौ बारह भव इक इक में ।
दो इन्द्रिय के भव अस्सी धरे, ती इन्द्रिय के भव साठ धरे ।।
चालिस चौ इन्द्रिय भव जु गहे, पंचेन्द्रिय बीस रु चार गहै ।
छ्यासठ हजार छत्तीस तीन सौ अन्तरमुहूरत में जनम लहै ।।२।।

हे नाथ भवों की गाथा सुन, नयनों में आँसू आते हैं।
समकित बिन भटका भवों भवों, समकित की याद जगाते हैं।।
इन लब्धपर्याप्तक योनि में, इक श्वास में अठदस बार मरा।
सर्वज्ञ देव सब जानत हो, दुख जनम-मरण का जो भि सहा।।३।।
परजाप्त अवस्था भी पाई, मैं नरक गया कभी देव भया।
पशु मनुज गती के दुःख सहे, चारों ही गतियों भ्रमण हुआ।।
सब श्रेष्ठ अवस्था ना पाई, ना तीर्थंकर लौकान्ति हुआ।
ना लोकपाल ना शची बना, सर्वारथ सिद्धि सु नाहि गया।।४।।
ना दक्षिणेन्द्र सौधर्म हुआ, ना एक भवा अवतार हुआ।
जिन चरणों भक्ती ना कीनी, यातै ही परिभ्रम पांच हुआ।।
हो रत्नत्रय निधि प्राप्त मुझे, अब नाथ शरण में आया हूँ।
झोली रत्नत्रय भर दीजै, बस आशा लेकर आया हूँ।।५।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन सहसनाम की पूजा, श्रद्धा धर जो करते हैं।
यश वैभव कीरत बढ़ती है, ज्ञान महानिधि लहते हैं।।
नवनिधि चौदह रत्न प्राप्त कर, मुक्तिरमा वे वरते हैं।
शाश्वत आत्मानन्द बरसता, ज्ञानसुधारस पीते हैं।।

पुष्पाञ्जलिं

●

दशम कोष्ठ

दिग्वासादिक अष्टोत्तर शतनाम पूजा

स्थापना

दिग्वासा आदिक शत नामा, सिरी जिन वीतराग निरदोष ।
दिक् अम्बर को धार निरम्बर, भये नमूँ मैं छोड़ त्रिदोष ।।
आह्वानन संस्थापन करता, जिनवर मम उर में आन बसो ।
मेरे उर के सिंहासन पर, हे नाथ शीघ्र आ वास करो ।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिक अष्टोत्तर शतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं दिग्वासादिक अष्टोत्तर शतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं दिग्वासादिक अष्टोत्तर शतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टक

जिन वचन सम शीतल नीर, रतनन झारि भरूँ ।
मेटो मम भव की पीर, चरणन धार करूँ ।।
दिग्वासादिक शत नाम, समकित बोधि करें ।
नित जपो भविक तिरकाल, सब संताप हरें ।।१।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिकअष्टोत्तरशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

घसि चन्दन केशर संग, श्री जिन चर्ण चढ़ा ।
भव तपन मिटे दुखदाह, शान्ति सुधा सरसै ।।
दिग्वासादिक शत नाम, समकित बोधि करें ।
नित जपो भविक तिरकाल, समकित बोधि करें ।।२।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिकअष्टोत्तरशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय संसार-तापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंगुल सम तन्दुल लाय, बासमती नीको।
ले पुञ्ज जिनाग्र चढ़ाय, अक्षय सुख विलसो।।
दिग्वासादिक शत नाम, समकित बोधि करें।
नित जपो भविक तिरकाल, सब संताप हरें।।३।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिकअष्टोत्तरशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ले चम्पा जुही गुलाब, फूल सुगन्ध घना।
जिन पाद सु पद्म चढाव. मदन अरी हाना।।
दिग्वासादिक शत नाम, समकित बोधि करें।
नित जपो भविक तिरकाल, सब संताप हरें।।४।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिकअष्टोत्तरशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गूंजा फैनी रस सार, बहुविध थाल भरे।
जिन अग्र चढ़ाओ आय, रोग क्षुधादि नशें।।
दिग्वासादिक शत नाम, समकित बोधि करें।
नित जपो भविक तिरकाल, सब संताप हरें।।५।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिकअष्टोत्तरशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ले जगमग ज्योति जगाय, आरती वारत हूँ।
शुध केवल बोधि जगाय, आतम ज्योति लहूँ।।
दिग्वासादिक शत नाम, समकित बोधि करें।
नित जपो भविक तिरकाल, सब संताप हरें।।६।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिकअष्टोत्तरशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ शुध धूप सुवास, दस दिश वास करे ।
मम कर्म जले धूँ धार, धूम्र सु धूम्र उड़े ।।
दिग्वासादिक शत नाम, समकित बोधि करें ।
नित जपो भविक तिरकाल, सब संताप हरें ।।७।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिकअष्टोत्तरशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंगूर गुच्छ अखरोट, केला डाल पका ।
फल मोक्ष महासुख होय, कंचन थाल चढ़ा ।।
दिग्वासादिक शत नाम, समकित बोधि करें ।
नित जपो भविक तिरकाल, सब संताप हरें ।।८।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिकअष्टोत्तरशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ अर्घ लिया भर थाल, चर्ण समर्पण कू ।
दीजो प्रभु शिवपुर थान, जीवन अर्पत हूँ ।।
दिग्वासादिक शत नाम, समकित बोधि करें ।
नित जपो भविक तिरकाल, सब संताप हरें ।।९।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिकअष्टोत्तरशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दिग्वासादिक शतनाम तैं, पाप सभी नश जाय ।
समता रस का पान हो, शान्ति सुधा बरसाय ।।

शान्तये शान्तिधारा

पुष्प मोगरा मालती, चम्पा जुही गुलाब ।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करुँ, देओ बोधि सु लाभ ।।

पुष्पाञ्जलिं

अथ प्रत्येक अर्घ्यं

चौबोला

पंच चेल चरमज रोमज तज, रेशम वल्कल करपासे ।
अम्बर रहित दिगम्बर जिनवर 'दिग्वासा' होकर भासे ।।
श्रमण क्षपक जीवक जैनों के पूज्य आप पतवार बने ।
नाव पड़ी मझधार जिनेश्वर खेओ तो भव पार लगें ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वाससे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौदह अन्तर बाहर दस सब बीस चार का त्याग किया ।
वायु हि रशना कटिसूत्र से, 'वात सु रशना' नाम हुआ ।।
निर अम्बर निरग्रन्थ जिनेश्वर, पूज्य आप पतवार बने ।
नाव पड़ी मँझधार जिनेश्वर , खेओ तो भव पार लगें ।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं वातरशनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुणस्थान वस्त्रन में षष्ठम नहीं होय कहे जिनवाणी ।
हो निरग्रन्थ षष्ठ को पाया, दसम चढ़े बन गुरु ज्ञानी ।।
अन्तर बाहिर सकल क्षया ते, ईश बने निरग्रन्थों के ।
'निर्ग्रंथेशा' नाव अड़ी है, खेओ तो भवपार लगें ।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्ग्रंथेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे प्रशान्त आशा सिरि जिनवर, पुत्र पोत्र धन आश तजे ।
सर्व परिग्रह छांडि के श्रीवर, आशाम्बर को ओढ रहे ।।
नग्न न अम्बर परम 'निरम्बर', पूज्य आप पतवार बने ।
नाव पड़ी मझधार खिवैय्या, खेओ तो भव पार लगें ।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरम्बराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्व परिग्रह का जो मूला, प्राण ग्यारवां सन्त कहा ।
तजा जु किंचन होय अकिंचन, 'निष्किंचन' तव नाम पड़ा ।।
सूरि निगंथा आप महन्ता, पूज्य आप पतवार बने ।
नाव पड़ी मँझधार खिवैय्या, खेओ तो भव पार लगें ।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्किंचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री विहार अरु उपदेशामृत, इच्छा रहित सभी जिनका ।
जनम मरण आकांक्षा नाही, हत आशंस 'निराशंसा' ।।
आशा जिनकी चरण दास है, पूज्य आप पतवार बने ।
नाव पड़ी मँझधार जिनेश्वर, खेओ तो भव पार लगें ।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं निराशंसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जनमत श्रुत मति अवधि जु धारे, मन परजय दीक्षा व्रत बाद ।
ज्ञान दर्श आवरण उघारे, बोध सूर्य केवल प्रगटाय ।।
पंचज्ञानवर धार जिनेशा, 'ज्ञान चक्षु' ओ मम पतवार ।
तारो तारो अहो जिनेश्वर, नाव खड़ी है मम मँझधार ।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान चक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षायिक समकित भास्वर से ही, दर्शन मोह नशा अंधियार ।
चारित मोह की श्यामल शार्वर[1], यथाख्यातचारित से हार ।।
चार घातिया कर्म नशाये, मुक्त मोह चतुष्टय धार ।
नाथ 'अमोमुह' माझी तारो, नाव पड़ी है मम मँझधार ।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमोमुहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मारतंड सी सहस रश्मिया, तेजराशिमय बिखर रहीं ।
देह उदारिक परम उदारा, दीप्ति सूर्य सम निखर रही ।।
'तैजोराशि' गुण अनन्त से, पूज्य आप पतवार बने ।
नाव पड़ी मँझधार जिनेश्वर, खेओ तो भव पार लगें ।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं तेजोराशये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१. शार्वर=रात्रि ।

ओज अनन्ता शिवपुर कन्ता, धैर्य अनन्त सिरि भगवान ।
सौम्य सुशीला शीतल शुक्रा, सर्व देह है तव भास्वान् ।।
नाम 'अनन्ता ओज' मनोज्ञा, भव्य जीव पतवार बने ।
नाव पड़ी मँझधार जिनेश्वर, खेओ तो भव पार लगें ।१०।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तौजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान सिन्धु जिन आप हो, तिहुं जग जानो साथ ।
नाम ज्ञानाब्धि को नमूं, पाऊँ पूर्ण प्रकाश ।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानाब्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रूप चौपाई

अठदश शील सहस धर स्वामी,
अनूपम शाश्वत पद विसरामी ।
'शील सु सागर' शीश नमाऊँ,
चरण-कमल में शीश नमाऊँ ।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं शीलसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

आभामण्डल पूर्ण है, ''तेजोमय'' अभिराम ।
दर्श ज्ञान मय तेज कु, पुनि पुनि करो प्रणाम ।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं तेजोमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मित मित से जु अमित बने, केवल ज्योति न मित्त ।
''अमित ज्योति'' जिनराज कु, नमूँ नमूँ गुण सिद्ध ।।१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमितज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तेजस राशि सु पुञ्ज हो, ''ज्योतिमूर्ति'' गुण धाम ।
मोह महातम दलन को, पूजूँ आठों याम ।।१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिर्मूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घोर जु मावस शर्वरी, सहसरश्मि से दूर।
मोह महातम नाश कर, हुए ''तमोपह'' दूर।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं तमोपहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज—हे दीनबन्धु

यह जगत जीव आदि छह द्रव्य से रचा।
उत्पाद वय रु ध्रौव्य परिवर्तना सदा।।
जगत् सु श्रेष्ठ चूडामणि आप एक हैं।
तुअ पूजते सु चक्री देव माथ टेक के।१७।

ॐ ह्रीं अर्हं जगच्चूडामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग कोटि सूर्य चन्द्र छवि लाज रही है।
यह ''दीप्त'' देव की प्रभा सुभास रही है।।
जिनदेव आप पूज मैं महान हो गया।
निज आतमा की शान्ति पा धनाढ्य हो गया।१८।

ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम मोहनीय सूर क्रूर कर्मनाशका।
''शंवान्'' आप हो गये अनन्त सौख्य पा।।
जिनदेव आप पूज मैं धनाढ्य हो गया।
निज आतमा की शान्ति पा महान हो गया।१९।

ॐ ह्रीं अर्हं शंवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दान लाभ भोग रु उपभोग अन्तरा।
तुम ''विघ्न सु विनायका'' हो वीर्य नाशका।।
ये पांच अन्तराय कर्म विघनकार हैं।
तुम शुकलध्यान धारके विनाश किये हैं।२०।

ॐ ह्रीं अर्हं विघ्नविनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि कर्म के संग्राम को तू नष्ट किया है।
प्रभो जन्म जात वैर को सु मीत किया है।।
सु ''कलिघ्न'' देव पूज मैं महान हो गया।
निज आतमा की शान्ति पा धनाढ्य हो गया।२१।

ॐ ह्रीं अर्हं कलिघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शना जु ज्ञानवरणादि कर्म आठ हैं।
ध्यान अगनि जलाय ध्वंसकार आप हैं।।
सु ''कर्मशत्रुघ्न'' देव पूजता हूँ चावसौं।
पार भवसमुद्र हो जाऊँ भक्ति नाव सौं।२२।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक षट्द्रव्यरूप अलोक में अकाश है।
भासता जु सर्व आप ज्ञान के प्रकाश में।।
लोक वा अलोक के प्रकाशका सुबोधका।
मैं नमूँ त्रिकाल देव अष्ट द्रव्य थाल ला।२३।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोकप्रकाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दु पांच निद्रा नशी दुकर्म दर्श नाश से।
हो प्रमाद ना कभी जु ठार दोष नाश से।।
नाम 'अनिद्रालु' देव ज्ञान का प्रकाश दो।
पूजता हूँ चाव सौं सुमुक्ति में निवास हो।२४।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिद्रालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कूकथा तजी जु चार इन्द्रियों की वासना।
चार ही कषाय छांडि, नींद वा सनेह ना।।
आतमा में लीन हैं, न कोप से मलीन हैं।
आप अतन्द्रालु देव, आतमा प्रवीण हैं।२५।

ॐ ह्रीं अर्हं अतन्द्रालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्त हो गुणा सु पूर, 'जागरूक' देवता ।
आत्म भाव तत्परा, निजातमा हि भावता ।।
चेतना सु प्राण में, जिनेन्द्रदेव जागते ।
पूजता जो चाव सौं, दुकर्म आठ भागते ।२६।

ॐ ह्रीं अर्हं जागरूकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

तीन लोक के ज्ञेय को, जानत हैं इककाल ।
ज्ञान पूर्ण हो 'प्रमामय', पूजत हूँ तिरकाल ।२७।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रमामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लछमी साधन पुण्य को, नानाविध सुखदेय ।
बाह्य अन्तरा सब तजी, हो 'लक्ष्मीपती' देव ।२८।

ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्द्र सूर्य की रश्मियां, बाहर करें प्रकाश ।
आतम अन्तर तम हरें, 'जगज्ज्योति' सिरताज ।२९।

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वस्तु सुभाव सु रति करैं, दया क्षमा उर धार ।
रत्नत्रय धन के धनी, 'धर्मराज' जिनराज ।३०।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मराजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रूप चौपाई

युग के आदी हो जिनराया, 'प्रजाहितंकर' हित प्रिय राया ।
सर्व जीव को मार्ग दिखाया, षट् कर्मनि उपदेश सुनाया ।३१।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रजाहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घाति अघाती कर्म नशाया, भव्य जीव तारण मन भाया ।
देव ''मुमुक्षु'' सु पूज रचाऊँ, भक्ति भाव से भव तिर जाऊँ ।३२।

ॐ ह्रीं अर्हं मुमुक्षवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पञ्चेन्द्रिय विषयन आसक्ता, बद्ध जीव है उनका भोक्ता ।
अनासक्त को मोक्ष बताया, ज्ञाता 'बन्ध मोक्ष' जिनराया ।३३।

ॐ ह्रीं अर्हं बन्धमोक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीता पांच इन्द्र का टोला, आतम राम अमोल टटोला ।
नाम 'जिताक्ष' जपो दिन राता, मोक्ष महल का शुल्क है खासा ।३४।

ॐ ह्रीं अर्हं जिताक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मदन अरी जीता जगवासा, ग्राम चेतना फूका रासा ।
वार एक में हार गया है, 'जितमन्मथ' यह नाम खरा है ।३५।

ॐ ह्रीं अर्हं जितमन्मथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानानन्द शान्त रस ऐसा, अमरत का झरना हो वैसा ।
नाम 'प्रशान्त जु रस शैलूषा', पूजत पुण्य प्रभात हो ऊषा ।३६।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तरसशैलूषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन रत्न जो व्यक्त करेगा, वो ही भव्य सुमुक्ति वरेगा ।
'भव्यपेटक नायक' सुख देवा, भव्य समूह प्रधान नमो आ ।३७।

ॐ ह्रीं अर्हं भव्यपेटकनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वादशांग श्रुत 'मूल कर्ता', भाव श्रुतेशा आद्य प्रणेता ।
आदि जिनेश्वर दिव्य धुनी, गणधर वृषभसेन ने सरी ।३८।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलकर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

केवल दर्शन ज्योति उधारी, लोकालोक दिसै तिस मांही ।
नाम 'अखिल ज्योति' गुणप्यारा, जाप जपत होवे भव पारा ।३९।

ॐ ह्रीं अर्हं अखिल ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वसा शुक्र रक्त अरु मज्जा, देह मला नाशा गुण रत्ना ।
परम उदारिक नाम 'मलघ्ना', माया मिच्छ निदान कु हन्ता ।४०।

ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा

मूल बिना नहीं वृक्ष, त्यों जिनवर बिन धर्म हैं ।
''कारण मूल'' जिनेश, रत्नत्रय शुध धर्म के ।४१।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलकारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सखी छन्द

नहि दोष अठारह जिनमें, सब जाने जिनवर छिन में ।
देवा हित के उपदेशा, मम ''आप्त'' नमन सर्वेशा ।४२।

ॐ ह्रीं अर्हं आप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महभाषा ठारह माही, लघु सप्तशतक ओंकारी ।
सब जाने निज भाषा में, 'वागीश्वर' पूजूँ थाने ।४३।

ॐ ह्रीं अर्हं वागीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब जीवन मंगलकारी, दुखियों के तुम सुखकारी ।
कल्याण जु दर्शन पावा, 'श्रेयान' नमूँ शुभ भावा ।४४।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वाणी श्रेयस यश गाती, बिन इच्छा के खिर जाती ।
पुण्य भव्यों का जु निमित्त, नाम 'श्रायस उक्ति' पवित्र ।४५।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रायसोक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नहिं पूर्वापर सु विरोधा, वाणी जिनवर सत रूपा ।
युक्ति युक्त वचन चितारा, नाम 'वाक निरुक्त' प्रधारा ।४६।

ॐ ह्रीं अर्हं निरूक्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है तीनों लोक 'प्रवक्ता', नहीं तुम सम वाचा अन्य।
हित मित है मधुरा वाणी, प्रिय जग में है जिनवाणी।४७।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रवक्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों के स्वामी ईशा, तव नाम जपें गण ईशा।
'वचसामीश' तुम नामा, पूजो नित आठों यामा।४८।
ॐ ह्रीं अर्हं वचसामीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मदनावलि मार भगाया, 'मारजित' तव नाम कहाया।
शुध दरब का अर्घ सजाया, पूजन तव करने आया।४९।
ॐ ह्रीं अर्हं मारजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

तीन लोक के उदर में, प्राणी भाव सु जान।
"विश्व भाववित्" नाम है, पूजूँ आठों याम।५०।
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभावविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम उदारिक देह है, जीव निगोदा हीन।
'सुतनु' देव मणि फटिक सम, धातु सु सप्त विहीन।५१।
ॐ ह्रीं अर्हं सुतनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल देव अरहन्त हैं, जीवन्मुक्त कहाय।
विकलदेव सिद्धातमा, "तनु निर्मुक्त" सुहाय।५२।
ॐ ह्रीं अर्हं तनुनिर्मुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु

शुभ गमन सु मुकति नारि वरन कु, जब आदि जिनेश्वर का जु हुआ।
तब घाति अघाति दु मल हीना, जिनदेव "सुगत' शुभ नाम हुआ।।
शुध अष्ट दरब का थाल चढ़ा, नित देव सुगत जो ध्यायेंगें।
पूजा फल से वो जिनवर की, महपूज्य परमपद पायेंगे।।५३
ॐ ह्रीं अर्हं सुगताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोय नित्त कहे व अनित्त कहे, कोय सत्त कहे व असत्त कहे ।
प्रभु वस्तु सु भाव अनेक कहे, एकान्तवाद को मेट दये ।।
दुर्नय से लोक भ्रमित होता, तुम ही जग का भ्रम मेटा है ।
हे 'हतदुर्नय' जिनवर तुमको, अब शत-शत वन्दन मेरा है ।।५४

ॐ ह्रीं अर्हं हतदुर्नयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जब मात गरभ में जिन आये,तब श्री ह्री देवी सेव करें ।
माता का मन यूँ बहलाये, वे ज्ञान पहेली नित्य करें ।।
श्री ह्री धृति देवी के स्वामी, हम शत-शत शीश झुकाते हैं ।
हे 'श्रीश' सु नाम जिनिन्द देव,हम वसुविध पूज रचाते हैं ।।५५

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जब जिनवर गगन विहार करें, तब देव कमल रचना करते ।
स्वर्ण कमल तव पाद पद्म में, लक्ष्मी सेवित वे हैं ऐसे ।।
हे नाथ ओ 'श्रीश्रितपादाब्ज', मैं शत-शत बार सु नमन करुँ ।
तव चरणों की पूजा करके मैं, मुक्ति वधू का वरण करुँ ।।५६

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भय संज्ञा जीवों को दुख दे अरु सप्त भया पीड़ित कर दें ।
जिनराज सप्तभय हीन हुए, भय आश्रित को भी अभय दिये ।।
है नाम 'वीतभी' श्री जिनवर, मैं पूजा पाठ रचाऊँगा ।
तेरे चरणों की पूजा फल से, मैं सिद्ध अवस्था पाऊँगा ।।५७

ॐ ह्रीं अर्हं वीतभिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पग पग पर भय आकुल करता, प्राणी को प्रतिक्षण पीड़ा दे ।
जिनदेव आप भयहीन सदा, सब जग को दान अभय का दें ।।
तव तन में रक्त श्वेत बहता, यह अभयदान का एक मिशाल ।
नित नमूँ चरण में 'अभयंकर', मिल जावे मुझको मोक्ष सुधाम ।।५८

ॐ ह्रीं अर्हं अभयंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

काम क्रोध सब दोष नशाये, आत्म स्वभाव सुधामृत पान।
अहंकार ममकार छोड़कर, सिरि जिन हो गये श्रीभगवान।।
नाम 'दोष उत्सन्न' तिहारा, जपो जिनेश्वर जाप त्रिकाल।
आदिनाथ जी मोको तारो, तारो भव सागर के सुपार।।५९

ॐ ह्रीं अर्हं उत्सन्नदोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम दिव्यवान से नन्त दान जीवों को दान अभय देते।
तुम बिन अहार कोटी पूरब, नित लाभ वर्गणा शुभ लेते।।
है पुष्पवृष्टि सुर नन्त भोग, उपभोग सिंहासन आदि लहो।
तुम विघ्न पाँच को क्षय करके, 'निर्विघ्न' बने सब पाप नशो।।६०

ॐ ह्रीं अर्हं निर्विघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक अरु काल तीन में, चल नहीं होते गुणगंभीर।
पाप ताप संताप शोक ना, संसार मार्ग की जो मंजील।।
निश्चल मेरु समा जो 'निश्चल', वृषभदेवजी जग के ईश।
मोको तारो भवसागर से, हरो जिनेश्वर मेरी पीर।६१।

ॐ ह्रीं अर्हं निश्चलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिगीति

मात शिशु पर वत्सला से, दूध थन में श्वेतता।
जिनदेव के सब प्राणियों में झर रही वात्सल्यता।।
तिस कारणे जिनदेह में है, रक्त शुध सब दुग्ध सा।
हे "लोकवत्सल" पूजता हूँ, पाप पंक कु लेश ना।६२।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकवत्सलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

गुणसमूह सब द्रव्य हैं, द्रव्य समूह सु लोक।
सर्वलोक उत्कृष्ट हैं, "लोकोत्तर" तुम एक।६३।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

नमन करें सुरराज, ''लोकपती'' लोकेश हैं ।
नमूँ नमूँ जिनराज, हरि बल चक्री सब नमें ।६४।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

केवलबोध रु दर्शना, चक्षू हैं जिनदेव ।
सर्वलोक युगपत् लखें, ''लोकचक्षु'' जिन एक ।६५।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकचक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षेत्र सु सिद्ध अपार है, तिसमें बुद्धि सु धार ।
पार नहीं है बोधि का, है 'अपार धी' नाम ।६६।

ॐ ह्रीं अर्हं अपारधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नरेन्द्र

नीलाञ्जन का नृत्य जु देखा, मन वैराग्य समाया ।
कामदेव चक्री पुत्रों को, राज दिया वन भाया ।।
छह महिना तुम योग धरा अरु, षटमासा भटकाया ।
धीर न त्यागी बड़भागी ने, 'धीर धी' नाम पुजाया ।६७।

ॐ ह्रीं अर्हं धीरधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीति

निर्वाण सागर आदि जिनवर, भूतकाल जु हो गये ।
समकित जु दर्श रु ज्ञान व्रत की, देशना वो दे गये ।।
तिस मार्ग की केवल सु ज्ञानी, 'बुद्ध सनमारग' जिना ।
सब भव्य को दी देशना उन, आदि जिनवर अर्चना ।६८।

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धसन्मार्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन द्रव्य भाव रु कर्म नौ के, मल रहित से शुद्धता ।
नहीं राग की कणिका विलसति, रत्नत्रय सौन्दर्यता ।।
हे 'शुद्ध' जिनवर पंक हीना, ज्ञान भान प्रदीप्त हो ।
नित पूजता हूँ दोष हीना, भक्तिरस में चूर हो ।६९।
ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ कर्ण में अमरत झराती, आपकी मधु भारती ।
है सत्य वाणी पाप हानी, प्रियवरा तव भारती ।।
शुध 'वाक सुनृत्'' पूत नाथा, पूजता कर आरती ।
मेरे हृदय में बोधि भर दो, ओ जिनेश्वर भारती ।७०।
ॐ ह्रीं अर्हं सुनृतवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिससे होता उहापोह है, बुद्धि प्रज्ञा वह कही ।
वस्तु व्यवस्था कार्य कारण, सिद्ध हों संबंध भी ।।
तुम हेतु साध्य सुसिद्धि के शुभ, अन्त तट को प्राप्त हो ।
हे 'पारमित प्रज्ञा' जिनेश्वर, नमन शत-शत बार हो ।७१।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञापारमिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम भूत भावी वर्तमाना, काल तीन जु वस्तु की ।
सब जान लेते हर अवस्था, बुद्धि प्रज्ञा है सही ।।
श्री आदिदेवा 'प्राज्ञ' में ये, ज्ञान केवल धारती ।
मेरे हृदय में बोधि भर दो, प्यारी जिनवर भारती ।७२।
ॐ ह्रीं अर्हं प्राज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम तीन रत्ना मोक्ष यत्ना, तत्परा नित साधना ।
आतम सु श्रद्धा आत्म ज्ञाना, आत्म नित आराधना ।।
शुभ नाम 'यति' है शुद्धमति है, पूजता हूँ भाव सौं ।
वह मुक्ति नारी वर रही है, भय लगे संसार सौं ।७३।
ॐ ह्रीं अर्हं यतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

इन्द्रिय पाँचों वश करी, 'नियमित इन्द्रिय' नाम ।
आदि देव पूजूँ चरण, होंय सफल सब काम ।७४।

ॐ ह्रीं अर्हं नियमितेन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्र चन्द्र धरणेन्द्र अरु, गणधर मुनिवर वंद्य ।
हे ''भदन्त'' चरणों नमूँ, तुम सन्तों के सन्त ।७५।

ॐ ह्रीं अर्हं भदन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्ता जग कल्याण के, सम्बोधे भवि जीव ।
''भद्रकृत्'' शुभ नाम कु, नमन करुँ मैं सदीव ।७६।

ॐ ह्रीं अर्हं भद्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सौख्य अनन्त के जो धनी, जग कल्याण सु हेतु ।
'भद्र'देव तुमको नमूँ, तुम ही जीवन सेतु ।७७।

ॐ ह्रीं अर्हं भद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भुजंगप्रयात

तु ही ध्यानि देवा, महाबोधि धारा, महामोह विध्वंसका इष्टकारा ।
जिना ध्याना 'कल्पा सु वृक्षा' तिहारा, जिना स्वर्ग मोक्षा इसीसे चितारा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्पवृक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।७८।।

नरेन्द्र छन्द

जिन भक्तों को सब सुख देते, देते श्री अरहन्ता ।
वीतराग निरग्रन्थ निराले, भक्ति चरण जयवन्ता ।।
भक्ती से सब काम सुलभ हों, शक्ति सु युक्ति प्रदाता ।
मुक्ती में फिर शाश्वत सुखका, 'वर प्रद' प्रभु वरदाता ।७९।

ॐ ह्रीं अर्हं वरप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अचरज सबको ऐसे होता, हाथ नहीं तलवारा।
कैसे मारे शत्रु आपने, आदि जिनन्द हमारे।।
शीत ऋतू सम समता धारे, कर्म अरी वन दाहे।
''सम उन्मूलित कर्मारि'' प्रभु, पूज्य त्रिकाल हमारे।८०।

ॐ ह्रीं अर्हं समुन्मूलितकर्मारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीत ऋतु में पाला पड़ता, वृक्ष जलें हों राखा।
समभावन की दावानल में कर्मेन्धन हों भस्मा।।
''कर्मकाष्ठ शु शुक्षणि'' देवा, मनमन्दिर में राजो।
शील रु समता शान्त भाव की, ज्योति एक जगाओ।८१।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवि जीवों को कर्मनाश का, मारग आप सिखाया।
क्षपकश्रेणि चढ़ कर्मनाश हों, मोक्ष सु पथ सिखलाया।।
''कर्मण्य'' शुभ नाम है मनहर, मार्ग प्रदा परवीणा।
नमन करुँ मैं शत शत बारा, भव वन होवे हीना।८२।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंगप्रयात

प्रभू आप शौर्या अपूर्वा सु पाया।
निजात्मा जितात्मा बना मुक्ति पाया।।
अपारा दु दुक्खा तुही तो छुड़ाया।
जिना 'कर्मठा'' पूजने भक्त आया।।८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनू पांच सौ तुंग देहा उत्तुंगा।
क्षमा दान साम्य मना मानतुंगा।।
विरागा विद्वेषा महादिव्य वाना।
कृती उन्नता है सु ''प्रांशू'' जिनेशा।।८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रांशवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जोगीरासा

हेय तत्त्व हैं आस्त्रव बन्ध , त्याग किये सु जिनिन्दा ।
संवर निर्जर जीव रु मोक्षा, ग्रहण किये जु वितन्द्रा ।।
पांच पाप तज महव्रत धारे, पूजो अष्ट प्रकारा ।
''हेयादेय विचक्षण'' जिनवर, नमन सु शत शत वारा ।८५।

ॐ ह्रीं अर्हं हेयादेय विचक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नराच

सुमेरु को उठाय ले, सुपर्वता चलाय दें ।
सुभूख तास कूं सहें न रंच खेद को करें ।।
''अनन्त शक्ति'' धार देव सीमहीन शक्तियाँ ।
सुबोध केवला उपाय सिद्धि वृद्धि ऋद्धियां ।८६।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तशक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

न छेदना न भेदना अखण्ड रूप भेदना ।
अनन्त ज्ञान दर्शना सुभाव का न नाशना ।।
''अछेद्य'' देव आपकी सु अर्चना सदा करूं ।
जिनिन्द अर्चना करूं दु पाप कर्म को वरूं ।८७।

ॐ ह्रीं अर्हं अछेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तोटक

जय जन्म जरा मरणा अरि कै, तुम नाश किया क्षण में पुर वे ।
''त्रिपुरारि'' जिना जयवन्त सदा, हम पूजत हैं जिन होय मुदा ।८८।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नरेन्द्र

जो भूत भावी वर्तमाना, सब पदारथ को लखै ।
जाने सु युगपत् वे जिनेशा, नेत्र दोनों विलसते ।।
हे सुभग नाम ''त्रिलोचना'' में, काल तीनों भासते ।
हम पूजते शुभ भाव से नित, चरण में सिर डारते ।८९।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भुजंगप्रयात

जजूँ मैं त्रिनेत्रा, जिनेन्द्रा गणीन्द्रा ।
मुनीन्द्रा नमें चर्ण थारे जिनिन्दा ।।
सुदर्शा विबोधा प्रवृत्ता "त्रिनेत्रा" ।
जजूँ पाद पद्मा मिले मोक्ष सद्मा ।९०।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनेत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

तीन लोक रक्षा करी, तू ही तारणहार ।
तीन लोक का तू पिता, "त्र्यम्बक" नाम जु सार ।९१।

ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यम्बकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नरेन्द्र

समकित दर्शन बोध रु चारित, मोक्ष रथा के चक्रा ।
बैठे इसमें भव्य सुजीवा, पहुँचे मुक्ति सु सद्मा ।।
"त्र्यक्ष" सु नाम जिनेश्वर पूजा, मुक्ती वास कराये ।
पूजो भव्यों निशदिन इनको, भव आताप नशायें ।९२।

ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

ज्ञान सु केवल श्रेष्ठ है, नेत्र जिनेशा पास ।
"केवलज्ञान सु वीक्षण", नमूँ नमूँ उर धार ।९३।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शेर छन्द

कल्याण पंच के जिनेन्द्र आप हो धनी ।
कल्याण ही कल्याण की वर्षा करो घनी ।।
"समन्तभद्र" नाम की पूजा करूँ सदा ।
हे नाथ सकल ओर से कल्याण हो रहा ।९४।

ॐ ह्रीं अर्हं समन्तभद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भुजंगप्रयात

जिनिन्दा मुनिन्दा सु ''शान्तारि देवा ।
क्षमा खड्ग धारे नशाये दुकर्मा ।।
सुसाम्या विसौम्या सखी साथ थारे ।
नमूँ नाथ चर्णों सदा शान्ति पाने ।९५।

ॐ ह्रीं अर्हं शान्तारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षमा धर्म धारे दया सिन्धु देवा ।
दया दान कम्पा महाव्रत्त धर्मा ।।
''सुधर्मा सु आचार्य'' वस्तू सुभावा ।
तुही देव देवा नमूँ मैं त्रिकाला ।।९६।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्माचार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

''दया के निधी'' नाथ श्रीपाल तारे ।
हरो पाप सारे महादुःख भारे ।।
दया के निधी देव अञ्जन प्रतारे ।
जिनेशा विराजो उरा में हमारे ।।९७।।

ॐ ह्रीं अर्हं दयानिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रूप चौपाई

पुण्य पाप आदिक जो कर्मा, कर्मबन्ध सूक्षम अति सूक्ष्मा ।
रूपी सब जानत भगवाना, देव ''सूक्ष्मदरशी'' गुणधामा ।९८।

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग जीता जिस कामदेव ने, वह हारा तुम चर्ण कमल में ।
प्रभु अनंग को जीत लिया है, ''जितानंग'' तव नाम हुआ है ।९९।

ॐ ह्रीं अर्हं जितानगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

आलु रतालू सब तजे, बने ''कृपालु'' जिनेश ।
जीव मात्र पर की कृपा, कृपासिन्धु मम देव ।१००।

ॐ ह्रीं अर्हं कृपालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रावक ओ मुनि धर्म के, देशक हो मुनिनाथ ।
'धर्म सुदेशक' नाम है, पुनि पुनि करूँ प्रणाम ।१०१।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म देशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुख ऐसा तुम पाइया, दुख का तहाँ न लेश ।
सुख अनन्त के पुञ्ज हो, 'शुभंयु' नाम विशेष ।१०२।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभंयवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

काल अनन्ता सुख भरो, दुख की छाया नाय ।
'सुख सुसादभुत' नाम है, मोह महाक्षय पाय ।१०३।

ॐ ह्रीं अर्हं सुखसाद्भुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नरेन्द्र

साता वेदनी शुभ आयु त्रय, गोत्र सु उच्च बखाना ।
नाम करम की तीस सात को, पुण्य कहा भगवाना ।।
चालिस दो सब पुण्य करम के, स्वामी हैं जिनराजा ।
'पुण्यराशि' तव नाम मनोहर, तारो धर्म जिहाजा ।१०४।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यराशये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शंभु

नहीं रोग तनु जिनवर होता, वे सदा निरामय देह धरें ।
पीड़ा वेदन से दूर सदा, वे आतम रस का भोग करें ।।
'अन आमय' जिनवर को पूजो, जो कर्म असाता रहित सदा ।
पूजा फल से तुम मुक्ति लहो, यह जिन आगम का कथन रहा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१०५।।

उत्तम क्षम मार्दव आर्जव धर, तुम शौच सत्य संयम पाला ।
तप त्याग रु आकिंचन धरकर, जिन ब्रह्मचर्यव्रत दृढ़ पाला ।।
सिरि 'धर्मपाल' जिनवर पूजो, जो पुण्य फला अरहन्त बने ।
पूजा फल से तुम मुक्ति लहो, अरहन्त देव यह कहते हैं ।।
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१०६।।

नित शुभ ओ अशुभ जु फल दिखता, प्रतिपल परिवर्तन होता है ।
संसार इसी का नाम कहा, पर मन इससे भी बड़ा रहा ।।
चितचोर मना अद्भुत ऐसा, आतम की शुद्धि विहान करे ।
तुम जीता मन संसार सभी, हे 'जगत्पाल' हम नित्य नमें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१०७।।

जोगीरासा

धर्म हि चौदह रत्न नवोनिधि, धर्म हि मुकती द्वारा ।
धर्म से बल हर तीर्थंकर पद, पाता भक्त दुलारा ।।
''धर्म साम्राज नायक'' जिनवर, पूजो शत-शत बारा ।
धर्म सु बेल लगे मम उर में, नमन सु सहसो बारा ।।१०८।।
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

दिग्वासादिक आठ शत, पूजो भव्य त्रिकाल ।
ऋद्धि सिद्धि तव घर बसे, जीवन होय निहाल ।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिक अष्टोत्तरशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप—ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिग्वासादिकअष्टोत्तरशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय नमः ।

(लवंग से १०८ बार जपें)

जयमाला

दोहा

दिग्वासादिक नाम हैं, वीतराग गुणपूर।
गाऊँ जयमाला सदा, होवें मम गुण भूर।।

(पुष्पाञ्जलिं)

नरेन्द्र छन्द

कर्म घातिया नाश किये जिन, परमातम पद पाया।
समवसरण में दे उपदेशा, सातों तत्त्व बताया।।
स्याद्वाद सतभंग सुधारस, नय निक्षेप विशाला।
ज्ञानामृत का पान कराया, भेद विज्ञान बखाना।।१।।

आयु दिवस जब चौदह शेषा, गिरि कैलाशा आये।
समवसरण को छोड़ जिनेशा, योग निरोधन भाये।।
वच मन काय सु सूक्ष्म सूक्ष्मकर, काय सु सूक्ष्म कीना।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति शुकल से, योग महाक्षय कीना।।२।।

गुणथाना जु अयोग द्विचरमें, नाशी बहत्तर सारी।
चरम समय में तेरह नाशी, अस्सी पाँच विनाशी।।
पंच लघू अक्षर के काले, कर्म अघाति नशाये।
शत इक चालिस अठ सब बन्धन, ध्यान अगनि कर जारे।।३।।

एक समय में चौदह राजू, ऊँच सिद्धालय राजै।
आठ करम से रहित जिनेशा, आठ गुणों कर भासै।।
समकित दरशन ज्ञान अगुरुलघु, अवगाहन गुण धारैं।
सूक्ष्म वीरजवाना जिनवर, निराबाध गुण छाजै।।४।।

शान्त भूत निर अञ्जन नित्या, कृतकृत्य छवि राजै।
लोक अग्र में वास करें वे, निज आनन्द विलासै।।

चरम देहतें किञ्चित ऊना, अवगाहन सिद्धों का।
निष्कर्मा हैं नाम निठूरा, मंगल करते सबका।।५।।

परम औदारिक निरमल देहा, उड़ा कपूर की भाँति।
जय जयकार हुई जु गगन में, देव करें गुणकीर्ति।।
देह अंश नाखून व केशा, भू मांही जो बिखरे।
मुकुटानल से अग्निकुमारा, अगनी दे प्रजलावें।।६।।
देवा कर सबविधि संस्कारा, भस्मन सिर पे लगावें।
जय जयकार करें बहु हर्षे, नृत्य आनन्द रचावें।।
सिद्ध भये अब जन्म ना लेंगे, ना संसार भ्रमावें।
तीन लोक त्रय काल चले भी, चल ना वे हो पावें।।७।।

काल अनन्तानन्त जु बीते, वे सुख नन्त ही पावें।
ज्ञाता दृष्टा सिद्ध जिनेशा, सौख्य निजानन्द पावें।।
मैं भी सिद्ध प्रभो नित ध्याऊँ, सिद्ध अवस्था पाऊँ।
"स्याद्वादमती" मति केवल लह, आठों कर्म नशाऊँ।।८।।

घत्ता

जय सिद्ध महन्ता हे भगवन्ता, आत्म अनन्ता परमपदा।
जय 'स्याद्वादमती' होय सिद्धगति, पाऊँ मैं परमानन्दा।।९।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिकअष्टोत्तरशतनामधारक श्रीवृषभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन सहसनाम की पूजा, श्रद्धा धर जो करते हैं।
यश वैभव कीरत बढ़ती है, ज्ञान महानिधि लहते हैं।।
नवनिधि चौदह रत्न प्राप्त कर, मुक्तिरमा वे वरते हैं।
शाश्वत आत्मानन्द बरसता, ज्ञान सुधारस पीते हैं।।

पुष्पाञ्जलिं

समुच्चय जयमाला

दोहा

जिनवर के शुभ नाम हैं, एक सहस वसु पूज्य ।
पूजो समुचय अर्घ ले, तुम सम और न दूज ।।

(पुष्पाञ्जलिं)

आओ बन्धु तुम्हें सुनाएँ, गाथा तीर्थ महान की ।
तीर्थंकर की पदवी पाना, लब्धि पाँच सु थान की ।।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।टेक।।

काल अनन्त निगोद में बीता, लब्धि क्षयोपशम पाई ।
पाप बन्ध अनुभाग क्षीणकर, लब्धि विशुद्धि पाई ।।
पुण्य बन्ध अनुभाग बढ़ाया, आतम शुद्धि काज की ।
तीर्थंकर की पदवी पाना, लब्धि पाँच सुथान की ।।१।।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

दो हजार सागर का पाया, काल जु त्रस परयाय में ।
विकलत्रय में आधा बीता, पंचेन्द्रिय में शेष है ।।
नारक पशु मनु देव में घूमा, सागर एक सु जानकी ।
तीर्थंकर की पदवी पाना, लब्धि पाँच सुथान की ।।२।।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

पंचेन्द्रिय में गुरु देशना, पुण्योदय से पाई ।
कर्णों प्रिय उपदेशामृत से, भाव विशुद्धि आई ।।
तत्त्वरुचि तब जागृत हुई है, आतम हित के काज की ।
तीर्थंकर की पदवी पाना, लब्धि पाँच सुथान की ।।३।।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

कोड़ा-कोड़ी अन्तः सागर, अष्ट कर्म की स्थिती ।
कर ली भाव विशुद्ध बनाकर, लब्धि प्रायोग सुसिद्धि ।।
कर्ण लब्धि की हुई तैयारी, समकित दर्शन ज्ञान की ।
तीर्थंकर की पदवी पाना, लब्धि पाँच सुथान की ।।४।।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

दरशन मिथ्या खण्ड तीन कर, उपशम समकित कर लीना ।
बाद मुहूरत अन्तर पीछे, सम्यक क्षय उपशम कीना ।।
सर्व परिग्रह त्याग जु कीना, मुनिव्रत धारण काज की ।
तीर्थंकर की पदवी पाना, आतम हित के काज की ।।५।।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

धर्मध्यान अध्येता मुनिवर, आज्ञा जिनवर पालते ।
''विचय अपाय'' ध्यान के नेता, सर्व जीव हित चाहते ।।
सर्व जीव कल्याण हो कैसे, अनुकम्पा गुणखान की ।
तीर्थंकर की पदवी पाना, आतम हित के काज की ।।६।।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

पादमूल केवलि श्रुतकेवलि, भावन सोलह भावें ।
तीर्थंकर शुभ नाम कर्म का, बंध तभी ये बाँधे ।।
पंच कल्याणक धारी जिनवर, शोभा अतिशय ज्ञान की ।
तीर्थंकर की पदवी पाना, आतम हित के काज की ।।७।।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

दर्शन मोह का क्षय वो करते, क्षायिक समकित शोभते ।
पंडित मरण करें वो मुनिवर, सरवारथ सिध जावते ।।
एक भवा अवतारी जिनवर, तीर्थंकर पद शान की ।
तीर्थंकर की पदवी पाना, आतम हित के काज की ।।८।।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

मात गर्भ में आने पूर्वा, नगरि अयोध्या देव रची ।
रत्नों कोटी चौदह वर्षा, धनपति आकर नित्य करी ।।
मेरु शिखर पर जन्म कल्याणक, तीन भुवन सिरताज की ।
तीर्थंकर की पदवी पाना, आतम हित के काज की ।।९।।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

राज्य विभव को क्षण में त्यागें, नृत्य नीलाञ्जना देख के ।
पंचमुष्ठी कचलोंच करें वे, सर्व परिग्रह छोड़के ।।
नग्न दिगम्बर परम चिदम्बर, वैरागी के शान की ।
तीर्थंकर की पदवी पाना, आतम हित के काज की ।१०।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

शुक्ल ध्यान की अग्नि शिखा से, कर्म घातिया भून दिये ।
तब ही पंच सहस धनुष जा ऊपर, गगनांगन में वास किये ।।
तिरसठ प्रकृति नाश जिनेशा, जय अरहत भगवान की ।
तीर्थंकर की पदवी पाना, आतम हित के काज की ।११।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

सिद्धि अंगना कान्त जिनेश्वर, उभय सिरी के कान्त हो ।
सभा अनूपम बारह योजन, और न कोय मिशाल हो ।।
भूमि से है पाँच सहस धनु, शोभा अपरम्पार की ।
नत मस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की ।१२।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

समवसरण यह सभा नाम है, सदा अधर ही राजता ।
मणिमय बीस हजार सीढ़ियाँ, एक महूरत लागता ।।
कोट भूमियाँ वन गृहमन्दिर, तीन भुवन सिरताज की ।
नत मस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की ।१३।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

धूलिशाल यह कोट प्रथम है, विजयादि चतु द्वार हैं।
मानस्तंभ चतु चार दिशा में, बारह योजन दर्श दें।।
चैत्य भूमि में वन द्रह आदिक, जिनबिम्बों के शान की।
नत मस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की।१४।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं।।

रम्य खातिका आगे सोहे, निर्मल जल की कूप सी।
कमल खिले पक्षी रव करते, हंस आदि से मनहरी।।
लतावनी में सुमन मनोहर, सुरभि फैले आपकी।
नत मस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की।१५।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं।।

चौथी है उद्यान भूमि जँह, चार दिशा में वन हैं चार।
चंपक आम अशोक सप्तछद, सौरभ इनकी बहती सार।।
चैत्यवृक्ष जिनविम्ब छवी को, नमन करें मुनीराज की।
नत मस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की।१६।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं।।

ध्वजा भूमि है पंचम सुन्दर, ध्वजा असंख्यें धारती।
माला आदिक शुभ चिह्नों युत, सबके मन को हारती।।
सिद्ध बिम्ब से युक्त कल्पतरु, भूमि कल्प सु वृक्ष की।
नतमस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की।१७।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं।।

भूमि गृहांग सु सप्तम शोभे, देव देवियाँ नृत्य करें।
अष्टम भू में बारह कोठे, देव मनुज पशुभवि बैठें।।
फटिक मणी की भित्ती से हैं, सब विभक्त गणधार की।
नत मस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की।१८।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं।।

प्रथम कोठ में गणधर देवा, सतविध साधु सदा रहते ।
क्रम से कल्पवासिनी आर्या, ज्योतीषी ओ व्यन्तरी ।।
भवनवासिनी देवी रहतीं, जय हो जय जिनराज की ।
नत मस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की ।१९।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

आठ व्यन्तरा आगे शोभें, ज्योतीषी भवनालया ।
कल्पवासि अरु मनुज पशू हैं, चारों तर्फ सुभासिया ।।
जिनवाणी वे सदा सुनत हैं, समकित गुण के दान की ।
नत मस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की ।२०।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

प्रथम पीठ पर चारों दिश में, यक्षदेव आसीन हैं ।
धर्मचक्र मस्तक पर शोभे, भक्ती में तल्लीन हैं ।।
पीठ दूसरे ध्वजा पंक्तियाँ, चिह्नांकित जिनराज की ।
नत मस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की ।२१।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

पीठ तीसरी गंधकुटी है, तीन लोक के नाथ की ।
रत्न जटित सिंहासन सोहे, चौसठ चामर किंकणी ।।
तीनछत्र भामण्डल शोभा, तरु अशोक सिरताज की ।
नतमस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की ।२२।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

प्रातिहार्य हैं आठ जिनेशा, अतिशय चौतिस राजते ।
नन्त चतुष्टय अन्तर गुण से, देव सदा ही सासते ।।
कमलासन से अधर विराजै, अंगुल चार महान की ।
नतमस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की ।२३।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं ।।

कोट तीन हैं मध्य मध्य में, ग्यारह भूमी वास के।
पाँच वेदियाँ रत्नमयी हैं, नवनिधि का भंडार है।।
गोपुर द्वार नाट्यशालाएँ, सभा भवन जिनराज की।
नतमस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की।२४।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं।।

वापि सरोवर भरे लबालब, फूल खिलें हर डाल पे।
वापी में स्नान करें तो, भव दीखें तँह सात हैं।।
वैर रहित हो जीव असंख्या, बैठे सुन्दर क्षेत्र की।
नतमस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की।२५।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं।।

गूंगा बोले अन्धा देखे, बहरा सुनता कान से।
लंगड़ा चढ़ता सभी सीढ़ियाँ, जिनवर के परताप से।।
शूद्र अभव्य रु मिथ्यादृष्टि, ना प्रवेश जिनराज की।
नतमस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की।२६।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं।।

रोग शोक ना भूख प्यास हो, समवशर्ण में आपके।
धूप घटों में धूप खेवते, भविजन कर्म उड़ायके।।
वीतराग छवि परम मनोहर, चतुर्मुखी के शान की।
नत मस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की।२७।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं।।

जैसी अतुल अनूपम लक्ष्मी, वीतराग में शोभती।
नहीं अन्य में वैसी उपमा, कहीं देखने आवती।।
कहाँ काँच औ कहाँ मणि है, नहीं तुल्यता मान की।
नत मस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की।२८।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं।।

अनुपम अतुलित जिनवर महिमा, गणधर भी गा गा सके।
सहसनाम से स्तुति करता, देव सदा हरषायके।।
गुण अनन्त के स्वामी जिनवर, नमो नमो जिनराज की।
नतमस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की।२९।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं।।
सहस नाम से स्तुति करता, जो भवि प्रातःकाल ही।
बुद्धि सु बल उसका बढ़ जाता, दुख ना आवे पास ही।।
सेवकजन शीश झुकावे, चरण कमल के आस की।
नतमस्तक हैं देव चरण में, सौ सौ नाथ जिनेश की।३०।
वन्दे जिनवर, वन्दे जिनवरं।।
महावीर कीर्ति गुरु कृपा संभव सिन्धुआशीष।
पूजाकर पूर्ण कियो, सहसनाम गुण ईश।।

ॐ ह्रीं सहसअष्टाधिकनामांकित श्रीवृषभजिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप– ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रभामेभ्यो नमः।

जिनसहस्त्रनाम जाप

१००८

जिनसहस्रनाम जाप १००८

१. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमते नमः ।
२. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे नमः ।
३. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाय नमः ।
४. ॐ ह्रीं अर्हं शंभवाय नमः ।
५. ॐ ह्रीं अर्हं शंभवे नमः ।
६. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मभुवे नमः ।
७. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभाय नमः ।
८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवे नमः ।
९. ॐ ह्रीं अर्हं भोक्त्रे नमः ।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुवे नमः ।
११. ॐ ह्रीं अर्हं अपुनर्भवाय नमः ।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वात्मने नमः ।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोकेशाय नमः ।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतश्चक्षुषे नमः ।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षराय नमः ।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविदे नमः ।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्येशाय नमः ।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वयोनये नमः ।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं अविनश्वराय नमः ।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृश्वने नमः ।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं विभवे नमः ।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं धात्रे नमः ।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय नमः ।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोचनाय नमः ।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वव्यापिने नमः ।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं विधये नमः ।

२७. ॐ ह्रीं अर्हं वेधसे नमः ।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय नमः ।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतोमुखाय नमः ।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वकर्मणे नमः ।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जेष्ठाय नमः ।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वमूर्तये नमः ।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश्वराय नमः ।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृशे नमः ।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय नमः ।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वज्योतिषे नमः ।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं अनीश्वराय नमः ।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं जिनाय नमः ।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं जिष्णवे नमः ।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयात्मने नमः ।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरीशाय नमः ।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पतये नमः ।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तजिते नमः ।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यात्मने नमः ।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं भव्यबन्धवे नमः ।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं अबन्धनाय नमः ।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं युगादि पुरूषाय नमः ।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मणे नमः ।
४९. ॐ ह्रीं अर्हं पंचब्रह्ममयाय नमः ।
५०. ॐ ह्रीं अर्हं शिवाय नमः ।
५१. ॐ ह्रीं अर्हं पराय नमः ।
५२. ॐ ह्रीं अर्हं परतराय नमः ।
५३. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्माय नमः ।
५४. ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठिने नमः ।
५५. ॐ ह्रीं अर्हं सनातनाय नमः ।

५६. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं ज्योतिषे नमः ।
५७. ॐ ह्रीं अर्हं अजाय नमः ।
५८. ॐ ह्रीं अर्हं अजन्मने नमः ।
५९. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मयोनये नमः ।
६०. ॐ ह्रीं अर्हं अयोनिजाय नमः ।
६१. ॐ ह्रीं अर्हं मोहारिणे नमः ।
६२. ॐ ह्रीं अर्हं विजयिने नमः ।
६३. ॐ ह्रीं अर्हं जेत्रे नमः ।
६४. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रिणे नमः ।
६५. ॐ ह्रीं अर्हं दयाध्वजाय नमः ।
६६. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तारये नमः ।
६७. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तात्मने नमः ।
८६. ॐ ह्रीं अर्हं योगिने नमः ।
६९. ॐ ह्रीं अर्हं योगीश्वरार्चिताय नमः ।
७०. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे नमः ।
७१. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मतत्त्वाय नमः ।
७२. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मोद्याविदे नमः ।
७३. ॐ ह्रीं अर्हं यतीश्वराय नमः ।
७४. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाय नमः ।
७५. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धाय नमः ।
७६. ॐ ह्रीं अर्हं प्रबुद्धात्मने नमः ।
७७. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं सिद्धार्थाय नमः ।
७८. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धशासनाय नमः ।
७९. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसिद्धान्तविदे नमः ।
८०. ॐ ह्रीं अर्हं ध्येयाय नमः ।
८१. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाध्याय नमः ।
८२. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धिताय नमः ।
८३. ॐ ह्रीं अर्हं सहिष्णवे नमः ।
८४. ॐ ह्रीं अर्हं अच्युताय नमः ।

८५. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्ताय नमः ।
८६. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभविष्णवे नमः ।
८७. ॐ ह्रीं अर्हं भवोद्भवाय नमः ।
८८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूष्णवे नमः ।
८९. ॐ ह्रीं अर्हं अजराय नमः ।
९०. ॐ ह्रीं अर्हं अयज्याय नमः ।
९१. ॐ ह्रीं अर्हं भ्राजिष्णवे नमः ।
९२. ॐ ह्रीं अर्हं धीश्वराय नमः ।
९३. ॐ ह्रीं अर्हं अव्ययाय नमः ।
९४. ॐ ह्रीं अर्हं विभावसे नमः ।
९५. ॐ ह्रीं अर्हं असंभूष्णवे नमः ।
९६. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभूष्णवे नमः ।
९७. ॐ ह्रीं अर्हं पुरातनाय नमः ।
९८. ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नमः ।
९९. ॐ ह्रीं अर्हं परंज्योतिषे नमः ।
१००. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत् परमेश्वराय नमः ।

इति श्री मदादिशतनामधारकवृषभजिनेन्द्राय नमः ।।१।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यभाषापतये नमः ।
२. ॐ ह्रीं अर्हं दिव्याय नमः ।
३. ॐ ह्रीं अर्हं पूतवाचे नमः ।
४. ॐ ह्रीं अर्हं पूतशासनाय नमः ।
५. ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मने नमः ।
६. ॐ ह्रीं अर्हं परमज्योतिषे नमः ।
७. ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्यक्षाय नमः ।
८. ॐ ह्रीं अर्हं दमीश्वराय नमः ।
९. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपतये नमः ।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं भगवते नमः ।
११. ॐ ह्रीं अर्हं अर्हते नमः ।

१२. ॐ ह्रीं अर्हं अरजसे नमः ।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं विरजसे नमः ।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं शुचये नमः ।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थकृते नमः ।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं केवलिने नमः ।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं ईशानाय नमः ।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं पूजार्हाय नमः ।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं स्नातकाय नमः ।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं अमलाय नमः ।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तदीप्तये नमः ।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानात्मने नमः ।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्धाय नमः ।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापतये नमः ।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं मुक्ताय नमः ।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं शक्ताय नमः ।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं निराबाधाय नमः ।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलाय नमः ।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं भुवनेश्वराय नमः ।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं निरंजनाय नमः ।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं जगतज्योतिषे नमः ।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं निरूक्तोक्तये नमः ।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं निराममाय नमः ।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं अचलस्थितये नमः ।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभ्याय नमः ।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थाय नमः ।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः ।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयाय नमः ।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रण्यै नमः ।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामण्यै नमः ।

४१. ॐ ह्रीं अर्हं नेत्रे नमः ।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणेत्रे नमः ।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रकृते नमः ।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं शास्त्रे नमः ।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपतये नमः ।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म्याय नमः ।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मात्मने नमः ।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थकृते नमः ।
४९. ॐ ह्रीं अर्हं वृषध्वजाय नमः ।
५०. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाधीशाय नमः ।
५१. ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतवे नमः ।
५२. ॐ ह्रीं अर्हं वृषायुधाय नमः ।
५३. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाय नमः ।
५४. ॐ ह्रीं अर्हं वृषपतये नमः ।
५५. ॐ ह्रीं अर्हं भर्त्रे नमः ।
५६. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभांकाय नमः ।
५७. ॐ ह्रीं अर्हं वृषोद्भवाय नमः ।
५८. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यनाभये नमः ।
५९. ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मने नमः ।
६०. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभृते नमः ।
६१. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभावनाय नमः ।
६२. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवाय नमः ।
६३. ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः ।
६४. ॐ ह्रीं अर्हं भास्वते नमः ।
६५. ॐ ह्रीं अर्हं भवाय नमः ।
६६. ॐ ह्रीं अर्हं भावाय नमः ।
६७. ॐ ह्रीं अर्हं भवान्तकाय नमः ।
६८. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यगर्भाय नमः ।
६९. ॐ ह्रीं अर्हं श्री गर्भाय नमः ।

७०. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतविभवाय नमः ।
७१. ॐ ह्रीं अर्हं अभवाय नमः ।
७२. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभाय नमः ।
७३. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभुतात्मने नमः ।
७४. ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथाय नमः ।
७५. ॐ ह्रीं अर्हं जगत् प्रभवे नमः ।
७६. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वादये नमः ।
७७. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं सर्वदृशे नमः ।
७८. ॐ ह्रीं अर्हं सार्वाय नमः ।
७९. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञाय नमः ।
८०. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदर्शनाय नमः ।
८१. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वात्मने नमः ।
८२. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकेशाय नमः ।
८३. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविदे नमः ।
८४. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकजिताय नमः ।
८५. ॐ ह्रीं अर्हं सुगतये नमः ।
८६. ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुताय नमः ।
८७. ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुते नमः ।
८८. ॐ ह्रीं अर्हं सुवाचे नमः ।
८९. ॐ ह्रीं अर्हं सूरये नमः ।
९०. ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुताय नमः ।
९१. ॐ ह्रीं अर्हं विश्रुताय नमः ।
९२. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतः पादाय नमः ।
९३. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वशीर्षाय नमः ।
९४. ॐ ह्रीं अर्हं शुचिश्रवसे नमः ।
९५. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रशीर्षाय नमः ।
९६. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्रज्ञाय नमः ।
९७. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्राक्षाय नमः ।
९८. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रपादे नमः ।

९९. ॐ ह्रीं अर्हं भूत-भव्यभवद् भर्त्रे नमः ।
१००. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्या महेश्वराय नमः ।

इति श्री दिव्यभाषापतिशतनामधारकवृषभजिनेन्द्राय नमः ।।२।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठाय नमः ।
२. ॐ ह्रीं अर्हं स्थविराय नमः ।
३. ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठाय नमः ।
४. ॐ ह्रीं अर्हं प्रष्ठाय नमः ।
५. ॐ ह्रीं अर्हं प्रेष्ठाय नमः ।
६. ॐ ह्रीं अर्हं वरिष्ठधिये नमः ।
७. ॐ ह्रीं अर्हं स्थेष्ठाय नमः ।
८. ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठाय नमः ।
९. ॐ ह्रीं अर्हं बहिष्ठाय नमः ।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठाय नमः ।
११. ॐ ह्रीं अर्हं अणिष्ठाय नमः ।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठगिरे नमः ।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वमुटे नमः ।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वसृजे नमः ।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेटाय नमः ।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुजे नमः ।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वनायकाय नमः ।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वासिषे नमः ।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूपात्मने नमः ।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिताय नमः ।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं विजितांतकाय नमः ।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः ।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं विभयाय नमः ।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं वीराय नमः ।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं विशोकाय नमः ।

२६. ॐ ह्रीं अर्हं विजराय नमः ।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं अजराय नमः ।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं विरागाय नमः ।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं विरताय नमः ।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं असंगाय नमः ।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं विविक्ताय नमः ।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं वीतमत्सराय नमः ।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं विनेयजनताबांधवे नमः ।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं विलीनाशेषकल्मषाय नमः ।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं वियोगाय नमः ।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः ।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं विदुषे नमः ।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं विधात्रे नमः ।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं सुविधये नमः ।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं सुधिये नमः ।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्तिभाजे नमः ।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वीमूर्तये नमः ।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिभाजे नमः ।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं सलिलात्मकाय नमः ।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं वायुमूर्तये नमः ।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं असंगात्मने नमः ।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं वह्निमूर्तये नमः ।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मधके नमः ।
४९. ॐ ह्रीं अर्हं सुयज्वने नमः ।
५०. ॐ ह्रीं अर्हं यजमानात्मने नमः ।
५१. ॐ ह्रीं अर्हं सुत्वने नमः ।
५२. ॐ ह्रीं अर्हं सुत्रामपूजिताय नमः ।
५३. ॐ ह्रीं अर्हं ऋत्विजे नमः ।
५४. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञपतये नमः ।

५५. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाय नमः ।
५६. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञांगाय नमः ।
५७. ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय नमः ।
५८. ॐ ह्रीं अर्हं हविषे नमः ।
५९. ॐ ह्रीं अर्हं व्योममूर्तये नमः ।
६०. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्तात्मने नमः ।
६१. ॐ ह्रीं अर्हं निर्लेपाय नमः ।
६२. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः ।
६३. ॐ ह्रीं अर्हं अचलाय नमः ।
६४. ॐ ह्रीं अर्हं सोममूर्तये नमः ।
६५. ॐ ह्रीं अर्हं सुसौम्यात्मने नमः ।
६६. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यमूर्तये नमः ।
६७. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभाय नमः ।
६८. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रविदे नमः ।
६९. ॐ ह्रीं अर्हं श्री मन्त्रकृते नमः ।
७०. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रिणे नमः ।
७१. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रमूर्तये नमः ।
७२. ॐ ह्रीं अर्हं अनंतगाय नमः ।
७३. ॐ ह्रीं अर्हं स्वतन्त्राय नमः ।
७४. ॐ ह्रीं अर्हं तंत्रकृते नमः ।
७५. ॐ ह्रीं जगत् स्वान्ताय नमः ।
७६. ॐ ह्रीं अर्हं कृतांतांताय नमः ।
७७. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं कृतान्तकृते नमः ।
७८. ॐ ह्रीं अर्हं कृतिने नमः ।
७९. ॐ ह्रीं अर्हं कृतार्थाय नमः ।
८०. ॐ ह्रीं अर्हं सत्कृत्याय नमः ।
८१. ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृत्याय नमः ।
८२. ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृतवे नमः ।
८३. ॐ ह्रीं अर्हं नित्याय नमः ।

८४. ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युंजयाय नमः ।
८५. ॐ ह्रीं अर्हं अमृत्यवे नमः ।
८६. ॐ ह्रीं अर्हं अमृतात्मने नमः ।
८७. ॐ ह्रीं अर्हं अमृतोद्भवाय नमः ।
८८. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मनिष्ठाय नमः ।
८९. ॐ ह्रीं अर्हं परब्रह्मणे नमः ।
९०. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मात्मने नमः ।
९१. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मसंभवाय नमः ।
९२. ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्मपतये नमः ।
९३. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मेटे नमः ।
९४. ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः ।
९५. ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रसन्नाय नमः ।
९६. ॐ ह्रीं अर्हं प्रसन्नात्मने नमः ।
९७. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानधर्मदम प्रभवे नमः ।
९८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमात्मने नमः ।
९९. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तात्मने नमः ।
१००. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः ।

इति श्री स्थविष्ठादिशतनामधारक वृषभ जिनेन्द्राय नमः ।।३।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजाय नमः ।
२. ॐ ह्रीं अर्हं अशोकाय नमः ।
३. ॐ ह्रीं अर्हं काय नमः ।
४. ॐ ह्रीं अर्हं सृष्टे नमः ।
५. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मविष्टराय नमः ।
६. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मेशाय नमः ।
७. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मसंभूतये नमः ।
८. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनाभये नमः ।
९. ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तराय नमः ।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मयोनये नमः ।

११. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्योनये नमः ।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं इत्याय नमः ।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं स्तुत्याय नमः ।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतीश्वराय नमः ।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं स्तवनार्हाय नमः ।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं हृषीकेशाय नमः ।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं जितजेयाय नमः ।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रियाय नमः ।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं गणाधिपाय नमः ।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं गणज्येष्ठाय नमः ।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं गुण्याय नमः ।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्याय नमः ।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं गणाग्रण्यै नमः ।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाकराय नमः ।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाम्भोधये नमः ।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञाय नमः ।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं गुणनायकाय नमः ।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं गुणादरिणे नमः ।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं गुणोच्छेदिने नमः ।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणाय नमः ।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यगिरे नमः ।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाय नमः ।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं शरण्याय नमः ।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाचे नमः ।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं पूताय नमः ।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं वरेण्याय नमः ।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनायकाय नमः ।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं अगण्याय नमः ।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यधिये नमः ।

४०. ॐ ह्रीं अर्हं गुण्याय नमः ।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यकृते नमः ।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यशासनाय नमः ।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मारामाय नमः ।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रामाय नमः ।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यापुण्यनिरोधकाय नमः ।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं पापापेताय नमः ।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं विपापात्मने नमः ।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं विपात्मने नमः ।
४९. ॐ ह्रीं अर्हं वीतकल्मषाय नमः ।
५०. ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्दाय नमः ।
५१. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदाय नमः ।
५२. ॐ ह्रीं अर्हं शान्ताय नमः ।
५३. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहाय नमः ।
५४. ॐ ह्रीं अर्हं निरुपद्रवाय नमः ।
५५. ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषाय नमः ।
५६. ॐ ह्रीं अर्हं निराहाराय नमः ।
५७. ॐ ह्रीं अर्हं निष्क्रियाय नमः ।
५८. ॐ ह्रीं अर्हं निरुपप्लवाय नमः ।
५९. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकाय नमः ।
६०. ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तैनसे नमः ।
६१. ॐ ह्रीं अर्हं निर्धूतागसे नमः ।
६२. ॐ ह्रीं अर्हं निरास्रवाय नमः ।
६३. ॐ ह्रीं अर्हं विशालाय नमः ।
६४. ॐ ह्रीं अर्हं विपुलज्योतिषे नमः ।
६५. ॐ ह्रीं अर्हं अतुलाय नमः ।
६६. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यवैभवाय नमः ।
६७. ॐ ह्रीं अर्हं सुसंवृताय नमः ।
६८. ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तात्मने नमः ।

६९. ॐ ह्रीं अर्हं सुभृते नमः ।
७०. ॐ ह्रीं अर्हं सुनयतत्त्वविदे नमः ।
७१. ॐ ह्रीं अर्हं एकविद्याय नमः ।
७२. ॐ ह्रीं अर्हं महाविद्याय नमः ।
७३. ॐ ह्रीं अर्हं मुनये नमः ।
७४. ॐ ह्रीं अर्हं परिवृढ़ाय नमः ।
७५. ॐ ह्रीं अर्हं पतये नमः ।
७६. ॐ ह्रीं अर्हं धीशाय नमः ।
७७. ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानिधये नमः ।
७८. ॐ ह्रीं अर्हं साक्षिणे नमः ।
७९. ॐ ह्रीं अर्हं विनेत्रे नमः ।
८०. ॐ ह्रीं अर्हं विहतांतकाय नमः ।
८१. ॐ ह्रीं अर्हं पित्रे नमः ।
८२. ॐ ह्रीं अर्हं पितामहाय नमः ।
८३. ॐ ह्रीं अर्हं पात्रे नमः ।
८४. ॐ ह्रीं अर्हं पवित्राय नमः ।
८५. ॐ ह्रीं अर्हं पावनाय नमः ।
८६. ॐ ह्रीं अर्हं गतये नमः ।
८७. ॐ ह्रीं अर्हं त्रात्रे नमः ।
८८. ॐ ह्रीं अर्हं भिषग्वराय नमः ।
८९. ॐ ह्रीं अर्हं वर्याय नमः ।
९०. ॐ ह्रीं अर्हं वरदाय नमः ।
९१. ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः ।
९२. ॐ ह्रीं अर्हं पुंसे नमः ।
९३. ॐ ह्रीं अर्हं कवये नमः ।
९४. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणपुरुषाय नमः ।
९५. ॐ ह्रीं अर्हं वर्षीयसे नमः ।
९६. ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभाय नमः ।
९७. ॐ ह्रीं अर्हं पुरवे नमः ।

९८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठाप्रभवाय नमः ।
९९. ॐ ह्रीं अर्हं हेतवे नमः ।
१००. ॐ ह्रीं अर्हं भुवनैक-पितामहाय नमः ।

इति श्री महाशोकध्वजाशतनामधारक वृषभ जिनेन्द्राय नमः ।।४००।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृक्षलक्षणाय नमः ।
२. ॐ ह्रीं अर्हं श्लक्षणाय नमः ।
३. ॐ ह्रीं अर्हं लक्षण्याय नमः ।
४. ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणाय नमः ।
५. ॐ ह्रीं अर्हं निरक्षाय नमः ।
६. ॐ ह्रीं अर्हं पुंडरीकांक्षाय नमः ।
७. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्कलाय नमः ।
८. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करेक्षाय नमः ।
९. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिदाय नमः ।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसंकल्पाय नमः ।
११. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मने नमः ।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाधनाय नमः ।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धबोध्याय नमः ।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं महाबोधये नमः ।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमानाय नमः ।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं महर्द्धिकाय नमः ।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं वेदांगाय नमः ।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं वेदविदे नमः ।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं वेद्याय नमः ।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाय नमः ।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं विदांवराय नमः ।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं वेदवेद्याय नमः ।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं स्वसंवेद्याय नमः ।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं विवेदाय नमः ।

२५. ॐ ह्रीं अर्हं वदतांवराय नमः ।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं अनादिनिधनाय नमः ।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्ताय नमः ।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तवाचे नमः ।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तशासनाय नमः ।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं युगादिकृते नमः ।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं युगाधाराय नमः ।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं युगादये नमः ।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं जगदादिजाय नमः ।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्राय नमः ।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियाय नमः ।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं धीन्द्राय नमः ।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्राय नमः ।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः ।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं अनिंद्रियाय नमः ।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं अहमिन्द्रार्च्याय नमः ।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रमहिताय नमः ।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं महते नमः ।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं उद्भवाय नमः ।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं कारणाय नमः ।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं कर्त्रे नमः ।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं पारगाय नमः ।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं भवतारकाय नमः ।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं अगाह्याय नमः ।
४९. ॐ ह्रीं अर्हं गहनाय नमः ।
५०. ॐ ह्रीं अर्हं गुह्याय नमः ।
५१. ॐ ह्रीं अर्हं पराय नमः ।
५२. ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय नमः ।
५३. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तर्द्धये नमः ।

५४. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयर्द्धये नमः ।
५५. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यर्द्धये नमः ।
५६. ॐ ह्रीं अर्हं समग्रधिये नमः ।
५७. ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्राय नमः ।
५८. ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रहराय नमः ।
५९. ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यग्राय नमः ।
६०. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यग्राय नमः ।
६१. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रयाय नमः ।
६२. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रिमाय नमः ।
६३. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रजाय नमः ।
६४. ॐ ह्रीं अर्हं महातपसे नमः ।
६५. ॐ ह्रीं अर्हं महातेजसे नमः ।
६६. ॐ ह्रीं अर्हं महोदर्काय नमः ।
६७. ॐ ह्रीं अर्हं महोदयाय नमः ।
६८. ॐ ह्रीं अर्हं महायशसे नमः ।
६९. ॐ ह्रीं अर्हं महाधाम्ने नमः ।
७०. ॐ ह्रीं अर्हं महासत्वाय नमः ।
७१. ॐ ह्रीं अर्हं महाधृतये नमः ।
७२. ॐ ह्रीं अर्हं महाधैर्याय नमः ।
७३. ॐ ह्रीं अर्हं महावीर्याय नमः ।
७४. ॐ ह्रीं अर्हं महासंपदे नमः ।
७५. ॐ ह्रीं अर्हं महाबलाय नमः ।
७६. ॐ ह्रीं अर्हं महाशक्तये नमः ।
७७. ॐ ह्रीं अर्हं महाज्योतिषे नमः ।
७८. ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतये नमः ।
७९. ॐ ह्रीं अर्हं महाद्युतये नमः ।
८०. ॐ ह्रीं अर्हं महामतये नमः ।
८१. ॐ ह्रीं अर्हं महानीतये नमः ।
८२. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षान्तये नमः ।

८३. ॐ ह्रीं अर्हं महादयाय नमः ।
८४. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्राज्ञाय नमः ।
८५. ॐ ह्रीं अर्हं महाभागाय नमः ।
८६. ॐ ह्रीं अर्हं महानन्दाय नमः ।
८७. ॐ ह्रीं अर्हं महाकवये नमः ।
८८. ॐ ह्रीं अर्हं महामहसे नमः ।
८९. ॐ ह्रीं अर्हं महाकीर्तये नमः ।
९०. ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तये नमः ।
९१. ॐ ह्रीं अर्हं महावपुषे नमः ।
९२. ॐ ह्रीं अर्हं महादानाय नमः ।
९३. ॐ ह्रीं अर्हं महाज्ञानाय नमः ।
९४. ॐ ह्रीं अर्हं महायोगाय नमः ।
९५. ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाय नमः ।
९६. ॐ ह्रीं अर्हं महामहपतये नमः ।
९७. ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्तमहापञ्चकल्याणकाय नमः ।
९८. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभवे नमः ।
९९. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रतिहार्याधीशाय नमः ।
१००. ॐ ह्रीं अर्हं महेश्वराय नमः ।

इति श्री श्रीवृक्षलक्षणादिशतनामधारक वृषभजिनेन्द्राय नमः ।।५००।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं महामुनये नमः ।
२. ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानिने नमः ।
३. ॐ ह्रीं अर्हं महामौनिने नमः ।
४. ॐ ह्रीं अर्हं महादमाय नमः ।
५. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षमाय नमः ।
६. ॐ ह्रीं अर्हं महाशीलाय नमः ।
७. ॐ ह्रीं अर्हं महायज्ञाय नमः ।
८. ॐ ह्रीं अर्हं महामखाय नमः ।
९. ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतपतये नमः ।

१०. ॐ ह्रीं अर्हं मह्याय नमः ।
११. ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तिधराय नमः ।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः ।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं महामैत्रीमयाय नमः ।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयाय नमः ।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं महोपायाय नमः ।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं महोमयाय नमः ।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं महाकारुणिकाय नमः ।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रे नमः ।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं महामन्त्राय नमः ।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं महायतये नमः ।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं महानादाय नमः ।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं महाघोषाय नमः ।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं महेज्याय नमः ।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं महसांपतये नमः ।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं महाध्वरधराय नमः ।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं धुर्याय नमः ।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं महौदार्याय नमः ।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं महिष्ठवाचे नमः ।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं महात्मने नमः ।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं महसांधाम्ने नमः ।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं महर्षये नमः ।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं महितोदयाय नमः ।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्लेशांकुशाय नमः ।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं शूराय नमः ।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतपतये नमः ।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं गुरवे नमः ।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं महापराक्रमाय नमः ।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्ताय नमः ।

३९. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्रोधरिपवे नमः ।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं वशिने नमः ।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं महाभवाब्धिसंतारिणे नमः ।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं महामोद्रि सूदनाय नमः ।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाकराय नमः ।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्ताय नमः ।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं महायोगीश्वराय नमः ।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं शमिने नमः ।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानपतये नमः ।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं ध्यातमहाधर्मणे नमः ।
४९. ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रताय नमः ।
५०. ॐ ह्रीं अर्हं महाकर्मारिघ्ने नमः ।
५१. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मज्ञाय नमः ।
५२. ॐ ह्रीं अर्हं महादेवाय नमः ।
५३. ॐ ह्रीं अर्हं महेशित्रे नमः ।
५४. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्लेशापहाय नमः ।
५५. ॐ ह्रीं अर्हं साधवे नमः ।
५६. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदोषहराय नमः ।
५७. ॐ ह्रीं अर्हं हराय नमः ।
५८. ॐ ह्रीं अर्हं असंख्येयाय नमः ।
५९. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयात्मने नमः ।
६०. ॐ ह्रीं अर्हं शमात्मने नमः ।
६१. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमाकराय नमः ।
६२. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वयोगीश्वराय नमः ।
६३. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्याय नमः ।
६४. ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतात्मने नमः ।
६५. ॐ ह्रीं अर्हं विष्टरश्रवसे नमः ।
६६. ॐ ह्रीं अर्हं दान्तात्मने नमः ।
६७. ॐ ह्रीं अर्हं दमतीर्थेशाय नमः ।

६८. ॐ ह्रीं अर्हं योगात्मने नमः ।
६९. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानसर्वगाय नमः ।
७०. ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानाय नमः ।
७१. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मने नमः ।
७२. ॐ ह्रीं अर्हं प्रकृतये नमः ।
७३. ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः ।
७४. ॐ ह्रीं अर्हं परमोदयाय नमः ।
७५. ॐ ह्रीं जगत् प्रक्षीणबंधाय नमः ।
७६. ॐ ह्रीं अर्हं कामारये नमः ।
७७. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकृते नमः ।
७८. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमशासनाय नमः ।
७९. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणवाय नमः ।
८०. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणयाय नमः ।
८१. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणाय नमः ।
८२. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणदाय नमः ।
८३. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणतेश्वराय नमः ।
८४. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणाय नमः ।
८५. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणिधये नमः ।
८६. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षाय नमः ।
८७. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिणाय नमः ।
८८. ॐ ह्रीं अर्हं अध्वर्यवे नमः ।
८९. ॐ ह्रीं अर्हं अध्वराय नमः ।
९०. ॐ ह्रीं अर्हं आनन्दाय नमः ।
९१. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दनाय नमः ।
९२. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दाय नमः ।
९३. ॐ ह्रीं अर्हं वंद्याय नमः ।
९४. ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्द्याय नमः ।
९५. ॐ ह्रीं अर्हं अभिनन्दनाय नमः ।
९६. ॐ ह्रीं अर्हं कामघ्ने नमः ।

९७. ॐ ह्रीं अर्हं कामदाय नमः ।
९८. ॐ ह्रीं अर्हं काम्याय नमः ।
९९. ॐ ह्रीं अर्हं कामधेनवे नमः ।
१००. ॐ ह्रीं अर्हं अरिञ्जयाय नमः ।

इति श्री महामुन्यादिशतनामधारक वृषभ जिनेन्द्राय नमः ।।६००।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः ।
२. ॐ ह्रीं अर्हं अप्राकृताय नमः ।
३. ॐ ह्रीं अर्हं वैकृतान्तकृते नमः ।
४. ॐ ह्रीं अर्हं अंतकृते नमः ।
५. ॐ ह्रीं अर्हं कान्तगवे नमः ।
६. ॐ ह्रीं अर्हं कान्तये नमः ।
७. ॐ ह्रीं अर्हं चिन्तामणये नमः ।
८. ॐ ह्रीं अर्हं अभीष्टदाय नमः ।
९. ॐ ह्रीं अर्हं अजिताय नमः ।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं जितकामारये नमः ।
११. ॐ ह्रीं अर्हं अमिताय नमः ।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं अमितशासनाय नमः ।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं जितक्रोधाय नमः ।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं जितामित्राय नमः ।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं जितक्लेशाय नमः ।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं जितान्तकाय नमः ।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्राय नमः ।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाय नमः ।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं मुनीन्द्राय नमः ।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं दुंदुभिस्वनाय नमः ।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रवन्द्याय नमः ।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं योगीन्द्राय नमः ।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं यतीन्द्राय नमः ।

२४. ॐ ह्रीं अर्हं नाभिनन्दनाय नमः ।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं नाभेयाय नमः ।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं नाभिजाय नमः ।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं जातसुव्रताय नमः ।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं मनवे नमः ।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमाय नमः ।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं अभेद्याय नमः ।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं अनत्ययाय नमः ।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं अनाश्वसे नमः ।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं अधिकाय नमः ।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं अधिगुरवे नमः ।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं सुगिरे नमः ।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं सुमेधसे नमः ।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं विक्रमिणे नमः ।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिने नमः ।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं दुराधर्षाय नमः ।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्सुकाय नमः ।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं विशिष्टाय नमः ।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टभुजे नमः ।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टाय नमः ।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्ययाय नमः ।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं कामनाय नमः ।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः ।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमिणे नमः ।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमंकराय नमः ।
४९. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षय्याय नमः ।
५०. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमधर्मपतये नमः ।
५१. ॐ ह्रीं अर्हं क्षमिणे नमः ।
५२. ॐ ह्रीं अर्हं अग्राह्याय नमः ।

५३. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञाननिग्राह्याय नमः ।
५४. ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानगम्याय नमः ।
५५. ॐ ह्रीं अर्हं निरूत्तराय नमः ।
५६. ॐ ह्रीं अर्हं सुकृतिने नमः ।
५७. ॐ ह्रीं अर्हं धातवे नमः ।
५८. ॐ ह्रीं अर्हं इज्यार्हाय नमः ।
५९. ॐ ह्रीं अर्हं सुनयाय नमः ।
६०. ॐ ह्रीं अर्हं चतुराननाय नमः ।
६१. ॐ ह्रीं अर्हं श्री निवासाय नमः ।
६२. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्वक्त्राय नमः ।
६३. ॐ ह्रीं अर्हं चतुरास्याय नमः ।
६४. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुखाय नमः ।
६५. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यात्मने नमः ।
६६. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यविज्ञानाय नमः ।
६७. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवाचे नमः ।
६८. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यशासनाय नमः ।
६९. ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्याशिषे नमः ।
७०. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यसंधानाय नमः ।
७१. ॐ ह्रीं अर्हं सत्याय नमः ।
७२. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यपरायणाय नमः ।
७३. ॐ ह्रीं अर्हं स्थेयसे नमः ।
७४. ॐ ह्रीं अर्हं स्थवीयसे नमः ।
७५. ॐ ह्रीं अर्हं नेदीयसे नमः ।
७६. ॐ ह्रीं अर्हं दवीयसे नमः ।
७७. ॐ ह्रीं अर्हं दूरदर्शनाय नमः ।
७८. ॐ ह्रीं अर्हं अणवे नमः ।
७९. ॐ ह्रीं अर्हं अणीयसे नमः ।
८०. ॐ ह्रीं अर्हं अनणवे नमः ।
८१. ॐ ह्रीं अर्हं गुरुराद्योगरीयसे नमः ।

८२. ॐ ह्रीं अर्हं सदायोगाय नमः ।
८३. ॐ ह्रीं अर्हं सदाभोगाय नमः ।
८४. ॐ ह्रीं अर्हं सदातृप्ताय नमः ।
८५. ॐ ह्रीं अर्हं सदाशिवाय नमः ।
८६. ॐ ह्रीं अर्हं सदागतये नमः ।
८७. ॐ ह्रीं अर्हं सदासौख्याय नमः ।
८८. ॐ ह्रीं अर्हं सदाविद्याय नमः ।
८९. ॐ ह्रीं अर्हं सदोदयाय नमः ।
९०. ॐ ह्रीं अर्हं सुघोषाय नमः ।
९१. ॐ ह्रीं अर्हं सुमुखाय नमः ।
९२. ॐ ह्रीं अर्हं सौम्याय नमः ।
९३. ॐ ह्रीं अर्हं सुखदाय नमः ।
९४. ॐ ह्रीं अर्हं सुहिताय नमः ।
९५. ॐ ह्रीं अर्हं सुहृदे नमः ।
९६. ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्ताय नमः ।
९७. ॐ ह्रीं अर्हं गुप्तिभृते नमः ।
९८. ॐ ह्रीं अर्हं गोप्त्रे नमः ।
९९. ॐ ह्रीं अर्हं लोकाध्यक्षाय नमः ।
१००. ॐ ह्रीं अर्हं दमीश्वराय नमः ।

इति श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनामधारक वृषभजिनेन्द्राय नमः ।७००।

१. ॐ ह्रीं अर्हं बृहद्बृहस्पतये नमः ।
२. ॐ ह्रीं अर्हं वाग्मिने नमः ।
३. ॐ ह्रीं अर्हं वाचस्पतये नमः ।
४. ॐ ह्रीं अर्हं उदारधिये नमः ।
५. ॐ ह्रीं अर्हं मनीषिणे नमः ।
६. ॐ ह्रीं अर्हं धिषणाय नमः ।
७. ॐ ह्रीं अर्हं धीमते नमः ।
८. ॐ ह्रीं अर्हं शेमुषीशाय नमः ।

९. ॐ ह्रीं अर्हं गिरांपतये नमः ।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं नैकरूपाय नमः ।
११. ॐ ह्रीं अर्हं नयोत्तुंगाय नमः ।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं नैकात्मने नमः ।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं नैकधर्मकृते नमः ।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं अविज्ञेयाय नमः ।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतर्क्यात्मने नमः ।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं कृतज्ञाय नमः ।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं कृतलक्षणाय नमः ।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानगर्भाय नमः ।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं दयागर्भाय नमः ।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भाय नमः ।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास्वराय नमः ।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मगर्भाय नमः ।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्गर्भाय नमः ।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं हेमगर्भाय नमः ।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शनाय नमः ।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीवते नमः ।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिदशाध्यक्षाय नमः ।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़ीयसे नमः ।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं इनाय नमः ।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं ईशित्रे नमः ।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं मनोहराय नमः ।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं मनोन्तांगाय नमः ।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं धीराय नमः ।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं गंभीरशासनाय नमः ।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मयूपाय नमः ।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं दयायागाय नमः ।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनेमवे नमः ।

३८. ॐ ह्रीं अर्हं मुनीश्वराय नमः ।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रायुधाय नमः ।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः ।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मघ्ने नमः ।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मघोषणाय नमः ।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघवाचे नमः ।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाज्ञाय नमः ।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं निर्ममाय नमः ।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघशासनाय नमः ।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं सुरूपाय नमः ।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं सुभगाय नमः ।
४९. ॐ ह्रीं अर्हं त्यागिने नमः ।
५०. ॐ ह्रीं अर्हं समयज्ञाय नमः ।
५१. ॐ ह्रीं अर्हं समाहिताय नमः ।
५२. ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिताय नमः ।
५३. ॐ ह्रीं अर्हं स्वास्थ्यभाजे नमः ।
५४. ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थाय नमः ।
५५. ॐ ह्रीं अर्हं नीरजस्काय नमः ।
५६. ॐ ह्रीं अर्हं निरुद्धवाय नमः ।
५७. ॐ ह्रीं अर्हं अलेपाय नमः ।
५८. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकात्मने नमः ।
५९. ॐ ह्रीं अर्हं वीतरागाय नमः ।
६०. ॐ ह्रीं अर्हं गतस्पृहाय नमः ।
६१. ॐ ह्रीं अर्हं श्री वश्येन्द्रियाय नमः ।
६२. ॐ ह्रीं अर्हं विमुक्तात्मने नमः ।
६३. ॐ ह्रीं अर्हं निःसपत्नाय नमः ।
६४. ॐ ह्रीं अर्हं जितेन्द्रियाय नमः ।
६५. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्ताय नमः ।
६६. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तधामर्षये नमः ।

६७. ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाय नमः ।
६८. ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्ने नमः ।
६९. ॐ ह्रीं अर्हं अनाय नमः ।
७०. ॐ ह्रीं अर्हं अनीदृशे नमः ।
७१. ॐ ह्रीं अर्हं उपमाभूताय नमः ।
७२. ॐ ह्रीं अर्हं दिष्टये नमः ।
७३. ॐ ह्रीं अर्हं दैवाय नमः ।
७४. ॐ ह्रीं अर्हं अगोचराय नमः ।
७५. ॐ ह्रीं जगत् अमूर्ताय नमः ।
७६. ॐ ह्रीं अर्हं मूर्तिमते नमः ।
७७. ॐ ह्रीं अर्हं एकस्मै नमः ।
७८. ॐ ह्रीं अर्हं नैकस्मै नमः ।
७९. ॐ ह्रीं अर्हं नानैकतत्त्वदृशे नमः ।
८०. ॐ ह्रीं अर्हं अध्यात्मगम्याय नमः ।
८१. ॐ ह्रीं अर्हं अगम्यात्मने नमः ।
८२. ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः ।
८३. ॐ ह्रीं अर्हं योगिवंदिताय नमः ।
८४. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वत्रगाय नमः ।
८५. ॐ ह्रीं अर्हं सदाभाविने नमः ।
८६. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालविषयार्थदृशे नमः ।
८७. ॐ ह्रीं अर्हं शंकराय नमः ।
८८. ॐ ह्रीं अर्हं शंवदाय नमः ।
८९. ॐ ह्रीं अर्हं दान्ताय नमः ।
९०. ॐ ह्रीं अर्हं दमिने नमः ।
९१. ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्तिपरायणाय नमः ।
९२. ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः ।
९३. ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाय नमः ।
९४. ॐ ह्रीं अर्हं परात्मज्ञाय नमः ।
९५. ॐ ह्रीं अर्हं परात्पराय नमः ।

९६. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगद्वल्लभाय नमः ।
९७. ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यर्चाय नमः ।
९८. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः ।
९९. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये नमः ।
१००. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाग्रशिखमणये नमः ।
ॐ ह्रीं अर्हं बृहद्बृहस्पत्यादिशतनामधारक वृषभजिनेन्द्राय नमः ।८००।

१. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालदर्शिने नमः ।
२. ॐ ह्रीं अर्हं लोकेशाय नमः ।
३. ॐ ह्रीं अर्हं लोकधात्रे नमः ।
४. ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़व्रताय नमः ।
५. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकातिगाय नमः ।
६. ॐ ह्रीं अर्हं पूज्याय नमः ।
७. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकैकसारथये नमः ।
८. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाय नमः ।
९. ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषाय नमः ।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वाय नमः ।
११. ॐ ह्रीं अर्हं कृतपूर्वांगविस्तराय नमः ।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं आदिदेवाय नमः ।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाद्याय नमः ।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं पुरुदेवाय नमः ।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं अधिदेवतायै नमः ।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं युगमुख्याय नमः ।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं युगज्येष्ठाय नमः ।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं युगादिस्थितिदेशकाय नमः ।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणवर्णाय नमः ।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणाय नमः ।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याय नमः ।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणलक्षणाय नमः ।

२३. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणप्रकृतये नमः ।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्तकल्याणात्मने नमः ।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं विकल्मषाय नमः ।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं विकलंकाय नमः ।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं कलातीताय नमः ।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं कलिलघ्नाय नमः ।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं कलाधराय नमः ।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं देवदेवाय नमः ।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्राथाय नमः ।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्बंधवे नमः ।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्विभवे नमः ।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धितैषिणे नमः ।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं लोकज्ञाय नमः ।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगाय नमः ।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं जगदग्रजाय नमः ।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं चराचर गुरवे नमः ।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं गोप्याय नमः ।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं गूढात्मने नमः ।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं गूढगोचराय नमः ।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजाताय नमः ।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं प्रकाशात्मने नमः ।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः ।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं आदित्यवर्णाय नमः ।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं भर्माभाय नमः ।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभाय नमः ।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं कनकप्रभाय नमः ।
४९. ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्णवर्णाय नमः ।
५०. ॐ ह्रीं अर्हं रुक्माभाय नमः ।
५१. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः ।

५२. ॐ ह्रीं अर्हं तपनीयनिभाय नमः ।
५३. ॐ ह्रीं अर्हं तुंगाय नमः ।
५४. ॐ ह्रीं अर्हं बालार्काभाय नमः ।
५५. ॐ ह्रीं अर्हं अनलप्रभाय नमः ।
५६. ॐ ह्रीं अर्हं सन्ध्याभ्रबभ्रवे नमः ।
५७. ॐ ह्रीं अर्हं हेमाभाय नमः ।
५८. ॐ ह्रीं अर्हं तप्तचामीकरद्युतये नमः ।
५९. ॐ ह्रीं अर्हं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः ।
६०. ॐ ह्रीं अर्हं कनत्कांचनसन्निभाय नमः ।
६१. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यवर्णाय नमः ।
६२. ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्णाभाय नमः ।
६३. ॐ ह्रीं अर्हं शातकुंभनिभप्रभाय नमः ।
६४. ॐ ह्रीं अर्हं द्युम्नाभाय नमः ।
६५. ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाभाय नमः ।
६६. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्तजाम्बूनदद्युतये नमः ।
६७. ॐ ह्रीं अर्हं सुधौतकलधौतश्रिये नमः ।
६८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रदीप्ताय नमः ।
६९. ॐ ह्रीं अर्हं हाटकद्युतये नमः ।
७०. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टेष्टाय नमः ।
७१. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टिदाय नमः ।
७२. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टाय नमः ।
७३. ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाय नमः ।
७४. ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाक्षराय नमः ।
७५. ॐ ह्रीं अर्हं क्षमाय नमः ।
७६. ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुघ्नाय नमः ।
७७. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघाय नमः ।
७८. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाय नमः ।
७९. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशास्ते नमः ।
८०. ॐ ह्रीं अर्हं शासित्रे नमः ।

८१. ॐ ह्रीं अर्हं स्वभुवे नमः ।
८२. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिनिष्ठाय नमः ।
८३. ॐ ह्रीं अर्हं मुनिज्येष्ठाय नमः ।
८४. ॐ ह्रीं अर्हं शिवतातये नमः ।
८५. ॐ ह्रीं अर्हं शिवप्रदाय नमः ।
८६. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिदाय नमः ।
८७. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिकृते नमः ।
८८. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तये नमः ।
८९. ॐ ह्रीं अर्हं कान्तिमते नमः ।
९०. ॐ ह्रीं अर्हं कामितप्रदाय नमः ।
९१. ॐ ह्रीं अर्हं श्रियांनिधये नमः ।
९२. ॐ ह्रीं अर्हं अधिष्ठानाय नमः ।
९३. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिष्ठाय नमः ।
९४. ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठिताय नमः ।
९५. ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिराय नमः ।
९६. ॐ ह्रीं अर्हं स्थावराय नमः ।
९७. ॐ ह्रीं अर्हं स्थास्नवे नमः ।
९८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथीयसे नमः ।
९९. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथिताय नमः ।
१००. ॐ ह्रीं अर्हं पृथवे नमः ।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारक वृषभ जिनेन्द्राय नमः ।।९००।।

१. ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वाससे नमः ।
२. ॐ ह्रीं अर्हं वातरशनाय नमः ।
३. ॐ ह्रीं अर्हं निर्ग्रंथेशाय नमः ।
४. ॐ ह्रीं अर्हं निरंबराय नमः ।
५. ॐ ह्रीं अर्हं निःकिंचनाय नमः ।
६. ॐ ह्रीं अर्हं निराशंसाय नमः ।
७. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानचक्षुषे नमः ।

८. ॐ ह्रीं अर्हं अमोमुहाय नमः ।
९. ॐ ह्रीं अर्हं तेजोराशये नमः ।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तौजसे नमः ।
११. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानाब्धये नमः ।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं शीलसागराय नमः ।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं तेजोमयाय नमः ।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं अमितज्योतिषे नमः ।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिर्मूर्तये नमः ।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं तमोपहाय नमः ।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं जगच्चूडामणये नमः ।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ताय नमः ।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं शंवते नमः ।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं विघ्नविनायकाय नमः ।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं कलिघ्नाय नमः ।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुघ्नाय नमः ।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोकप्रकाशकाय नमः ।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं अनिद्रालवे नमः ।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं अतन्द्रालवे नमः ।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं जागरूकाय नमः ।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमामयाय नमः ।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीपतये नमः ।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतिषे नमः ।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मराजाय नमः ।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं प्रजाहिताय नमः ।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं मुमुक्षवे नमः ।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं बन्धमोक्षाय नमः ।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं जिताक्षाय नमः ।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं जितमन्मथाय नमः ।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तरसशैलूषाय नमः ।

३७. ॐ ह्रीं अर्हं भव्यपेटकनायकाय नमः ।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं मूलकर्त्रे नमः ।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं अखिलज्योतिषे नमः ।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्नाय नमः ।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं मूलकारणाय नमः ।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं आप्ताय नमः ।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं वागीश्वराय नमः ।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयसे नमः ।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं श्रायसोक्तये नमः ।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं निरूक्तवाचे नमः ।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं प्रवक्त्रे नमः ।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं वचसामीशाय नमः ।
४९. ॐ ह्रीं अर्हं मारजिते नमः ।
५०. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभावविदे नमः ।
५१. ॐ ह्रीं अर्हं सुतनवे नमः ।
५२. ॐ ह्रीं अर्हं तनुनिर्मुक्ताय नमः ।
५३. ॐ ह्रीं अर्हं सुगताय नमः ।
५४. ॐ ह्रीं अर्हं हतदुर्नयाय नमः ।
५५. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशाय नमः ।
५६. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः ।
५७. ॐ ह्रीं अर्हं वीतभिये नमः ।
५८. ॐ ह्रीं अर्हं अभयंकराय नमः ।
५९. ॐ ह्रीं अर्हं उत्सन्नदोषाय नमः ।
६०. ॐ ह्रीं अर्हं निर्विघ्नाय नमः ।
६१. ॐ ह्रीं अर्हं निश्चलाय नमः ।
६२. ॐ ह्रीं अर्हं लोकवत्सलाय नमः ।
६३. ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तराय नमः ।
६४. ॐ ह्रीं अर्हं लोकपतये नमः ।
६५. ॐ ह्रीं अर्हं लोकचक्षुषे नमः ।

६६. ॐ ह्रीं अर्हं अपारधिये नमः ।
६७. ॐ ह्रीं अर्हं धीरधिये नमः ।
६८. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धसन्मार्गाय नमः ।
६९. ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धाय नमः ।
७०. ॐ ह्रीं अर्हं सुनृतपूतवाचे नमः ।
७१. ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञापारमिताय नमः ।
७२. ॐ ह्रीं अर्हं प्राज्ञाय नमः ।
७३. ॐ ह्रीं अर्हं यतये नमः ।
७४. ॐ ह्रीं अर्हं नियमितेन्द्रियाय नमः ।
७५. ॐ ह्रीं अर्हं भदन्ताय नमः ।
७६. ॐ ह्रीं अर्हं भद्रकृते नमः ।
७७. ॐ ह्रीं अर्हं भद्राय नमः ।
७८. ॐ ह्रीं अर्हं कल्पवृक्षाय नमः ।
७९. ॐ ह्रीं अर्हं वरप्रदाय नमः ।
८०. ॐ ह्रीं अर्हं समुन्मूलितकर्मारये नमः ।
८१. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः ।
८२. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मण्याय नमः ।
८३. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मठाय नमः ।
८४. ॐ ह्रीं अर्हं प्रांशवे नमः ।
८५. ॐ ह्रीं अर्हं हेयादेयविचक्षणाय नमः ।
८६. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तशक्तये नमः ।
८७. ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्याय नमः ।
८८. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरारये नमः ।
८९. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोचनाय नमः ।
९०. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनेत्राय नमः ।
९१. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यंबकाय नमः ।
९२. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यक्षाय नमः ।
९३. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः ।
९४. ॐ ह्रीं अर्हं समन्तभद्राय नमः ।

९५. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तारये नमः ।
९६. ॐ ह्रीं अर्हं धर्माचार्याय नमः ।
९७. ॐ ह्रीं अर्हं दयानिधये नमः ।
९८. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मदर्शिने नमः ।
९९. ॐ ह्रीं अर्हं जितानंगाय नमः ।
१००. ॐ ह्रीं अर्हं कृपालवे नमः ।
१०१. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेशकाय नमः ।
१०२. ॐ ह्रीं अर्हं शुभंयवे नमः ।
१०३. ॐ ह्रीं अर्हं सुखसाद्भुवाय नमः ।
१०४. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यराशयें नमः ।
१०५. ॐ ह्रीं अर्हं अनामयाय नमः ।
१०६. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालाय नमः ।
१०७. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालाय नमः ।
१०८. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः ।

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वासादि अष्टोत्तरशतनामधारक वृषभ जिनेन्द्राय नमः ।१००८।

●

सहस्त्रनाम आरती

ॐजय आदिश्वर देवा स्वामि जय आदिश्वर देवा ।
कनक रतनमय दीप जलाकर आरती नित देवा ।।

नगर अयोध्या जन्म लियो है, मरुदेवी नन्दन स्वामि[२] ।
नाभिराय के पुत्र दुलारे, शत-शत है वन्दन ।ॐजय० १।

गुण अनन्त के पुञ्ज जिनेश्वर सहस लखन सो है[२] ।
एक सहस अरु आठ गुणों से सबका मन मोहे ।ॐजय० २।

जिनसेनाचारज ने प्रभु की महिमा गाई अपार ।
सहस नाम से स्तुति कीनी, जिन भक्ति सुख सार ।ॐजय० ३।

सहस नाम स्तोत्र पढे जो, प्रातः नित प्रति भाव[२] ।
रोग शोक दारिद्र नशे सब, बुद्धी होय विशाल ।ॐजय० ४।

वीतराग गुण अगम अपारा, बुद्धी लहे न पार[२] ।
पै भक्ति जिनराज आपकी, आरती करूँ सिरनाय ।ॐजय० ५।

सहसदीप मय सहसनाम की, आरती ले उमगाय ।
जगमग-जगमग आरती करते, सहस्त्र पाप नश जाय ।ॐजय० ६।

यह विधि आरती करते मन से मोह तिमिर नश जाय ।
नमन अनन्तों बार जिनेश्वर, केवल ज्योति जगाय ।ॐजय० ७।

●

सहस्त्र नाम चालीसा

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका नहीं है कोई अंत।
जिसके मध्य है लोकाकाश, भरा है छह द्रव्यों से खास।।
उर्ध्व अधो अरु मध्य प्रधान, तीन लोक कहते भगवान।
मध्य लोक में जम्बू द्वीप, मेरु जुम्बू वृक्ष समीप।।
जम्बू द्वीप धातकी खण्ड, पुष्पकरार्द्ध भी रहा अखण्ड।
भरतैरावत और विदेह, क्षेत्र कर्म भूमि है ऐह।
आर्य खण्ड में रहते आर्य, ऐसा कहते जैनाचार्य।।
उत्सर्पण अवसर्पण काल, भरतैरावत रहे त्रिकाल।
दुषमा सुषमा काल विशेष, जिसमें चौबीस बनें जिनेश।
जिन विदेह में रहे त्रिकाल, विद्यमान रहते हर हाल।।
जो भी पुण्य कमाय अतीव, उसका फल वह पावे जीव।
भव्य भावना सोलह भाय, जीव वही यह पदवी पाय।।
तीर्थंकर प्रकृति का बंध, जो कषाय करते हैं मंद।
सम्यक् दृष्टि जीव महान, केवली द्विक के पद में आन।।
मिलता है जब कोई निमित्त, भोगों से उठ जाता चित्त।
भव भोगों से होय विरक्त, शुभ भोगों में हो अनुरक्त।।
सत् संयम पाते शुभकार, लेते महाव्रतों को धार।
कर्म निर्जरा करें महान, निज आतम का करके ध्यान।।
श्रायक श्रेणी को फिर पाय, अपना केवलज्ञान जगाय।
त्रिभुवन चूड़मणि बन जाय, तीर्थंकर के गुण प्रकटाय।।
क्षायिक नव लब्धि कर प्राप्त, बनते जिन तीर्थंकर आप्त।
चिन्तित चिंतामणि कहलाय, कल्पतरु फल वांछित दाय।।
बनते समवशरण के ईश, इन्द्र झुकाते पद में शीश।
अनन्त चतुंष्टय पाते नाथ, पञ्च कल्याणक भी हों साथ।।

तीन गति से आते जीव, पुण्य कमाते वहाँ अतीव।
दिव्य देशना सुनके लोग, मुक्ति पथ का पाते योग।।
भक्ति को आते शत् इन्द्र, सुर-नर-पशु आते अहमिन्द्र।
परम पिता जगती पति ईश, ऋद्धिधर हे नाथ! ऋशीष।।
युग दृष्टा प्रभु रहे महान, तीर्थोन्नायक हैं भगवान।
वाणी में जैनागम सार, अमृत रस की बहती धार।।
भक्त आपके आते द्वार, करते हैं निशदिन जयकार।
करने से प्रभु का गुणगान, होती हैं कर्मों की हान।
महिमा गाकर के सब देव, हर्षित होते सभी सदैव।
हम भी महिमा गाते नाथ, चरणों झुका रहे हैं माथ।।
विविध नाम से है गुणगान, सहस्त्रनाम स्त्रोत महान।
सार्थक नाम मयी पाठ, पढ़ने से हों ऊँचे ठाठ।।
सुख-शान्ति का है आधार, प्राणी पाते जग उद्धार।
सहस्त्रनाम कहलाए स्त्रोत, वीतराग धर्म का है जो स्त्रोत।।
श्रीमान् आदि सहस्त्रनाम, को करते हम सतत् प्रणाम।
पाठ किए हो ज्ञान प्रकाश, आत्म गुणों का होय विकास।।
वन्दन करते हम शत् बार, पाने भवोदधि से पार।
मेरा हो आतम कल्याण, पावें हम भी पद निर्वाण।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, सहस्त्रनाम का पाठ।
पढ़ते हैं जो भाव से, होते ऊँचे ठाठ।।
ऋद्धि-सिद्धि आनन्द हो, शान्ति मिले अपार।
'संयम' ज्ञान पाके मिले, मुक्ति वधू का पार।।